ओझा परेश पात्र की ओझाई

ओझा परेश पात्र की ओझाई

प्रतापचन्द्र चन्दर

एम० ए०, एल-एल० बी०, डी० फ़िल०

अनुवादक

जगत शङ्खधर

राधाकृष्ण

प्रथम हिन्दी संस्करण : 1978

मूल्य
11.00

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2 अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002

मुद्रक
कमल प्रेस, गांधी नगर द्वारा
गोपाल प्रिंटिंग प्रेस
शाहदरा, दिल्ली-110032

अध्याय-क्रम

ओझा परेश पात्र को ओझाई

अध्याय : 1

बसुलाट गाँव में हारान मंडल के घर की जमीन पर के नारियल के पेड़ों के ऊपर गिद्धों ने घोसला बना रखा था। एक नहीं, दो नहीं, राख के रंग के तीन-तीन गिद्ध, पतली गरदनें, जैसे घोट के मुँडे हुए गंजे सिर, विशालकाय घिनौने वे पक्षी अपशकुन के साक्षात् अवतार-से लगते। बड़ी कोशिश करके भी हारान उन्हें भगा न सका। बाँस के सिरे पर कपड़ा बाँधकर हिलाने पर गिद्ध उस पर नजर भी न डालते। थोड़ा उड़कर और चक्कर लगाकर फिर नारियल के पेड पर आकर बैठ जाते। हारान ने एक तरह की गुलेल बनायी, कमान की तरह। उसमें एक के बदले दो डोरियाँ बाँधी, बीच में छोटी-सी चौकोर जाली लगायी। आग में जलाकर, मिट्टी की गोली को उस जाली मे रखकर, धनुष में रखे बाण की तरह खींचकर छोड़ने से वह बड़ी ज़ोर से छूटती। अचानक आदमी की खोपड़ी में लगने पर खोपड़ी फटकर टुकड़े-टुकड़े हो सकती थी। लेकिन गिद्ध उसकी भी परवाह न करते। पहले तो इतनी दूर से आसमान की ओर निशाना लगाकर वह गिद्धों के लगती ही नही, नज़दीक से सूँ करती हुई निकल जाती, या फिर नारियल के पत्तों से फट-से टकरा जाती। गिद्ध ज़रा-सी गरदन मोड़कर बडी उपेक्षा के साथ जली मिट्टी की चूकी हुई गोली को देखते। और अगर कही किस्मत से कोई गोली किसी के बदन पर लग भी जाती तो मोटे पंखो के आवरण मे उसकी चोट का तीखापन कम पड जाता। थोड़ा-सा

चिढ़कर, पंख को जरा झाड़कर गिद्ध फिर मुड़कर बैठ जाता।

हारान मंडल बड़ी परेशानी में था। एक तो मनहूस गन्दे पक्षी फलने वाले पेड़ पर बैठते है। पेड़ का भी मफाया, पत्ते बदरंग हुए जा रहे थे। गन्दी बीटें देखकर ही तबियत घिना जाती। फल रहा पेड़ ही कुछ दिनों मे जैसे सूखा जा रहा हो! फिर उस पर एक नही, दो नही, तीन-तीन गिद्ध! बड़ा भारी असगुन है। पता नही, क्या मुसीबत आये! गिद्ध जैसे हारान मंडल की ही गरदन पर बैठे हों। हारान सपने में भी गिद्धों को देखकर चौंक पड़ता।

हारान की स्त्री तारिणी बोली, 'मनहूस पक्षी अगर नही जा रहे हैं तो शान्ति-पाठ कराओ, झाड़-फूंक कराओ। घर-गृहस्थी जमाकर अपनी जमीन पर तो रहना ही होगा।'

हारान दुविधा मे पड़कर बोला, 'वही तो सोच रहा हूँ, और भी खर्च होगा।'

तारिणी बोली, 'खर्च हो तो हो, तुम्हारी कंजूसी के लिए क्या अपनी जमीन से उखड़ जायें? पहले ही दिन अच्छे नही है। ब्याह की उम्र की लड़की ब्याह के दो बरस बीतते-न-बीतते विधवा होकर घर आ गयी। इसके बाद ही गिद्धो ने अड्डा जमाया। माँ जगदम्बा ही जानें कि और कौन-सी आफ़त आयेगी! जाओ, एक बार ओझाजी की शरण जाओ। हो सकता है, वह कुछ कर सकें।'

परेश पात्र इस क्षेत्र का विख्यात ओझा था। उसे अनगिनती मन्त्र-तन्त्र आते थे। सन्निपात, हैजा, क्षय आदि तमाम बीमारियों को वह मात्र मन्त्र पढ़कर दूर कर चुका था। कितना ही बड़ा भूत, परमराक्षस, इस्लामी भूत, चुड़ैल क्यों न हो—परेश पात्र के भूत भगाने के मन्त्र मे उनके बाण के साथ बाप-बाप चिल्लाते हुए भाग जाते। ओझाई ही परेश पात्र का रोजगार था; अकाल-महामारी मे ही उसकी माँग रहती। इस क्षेत्र में ऐसे लोग कम ही थे जो परेश पात्र से डरते न हों। बाप रे, जाने कब कौन-सा मारण उच्चाटन कर बैठे! सभी उसका सम्मान करते; छिपकर बुराई करने पर भी उसके सामने बोलने-बतियाने की हिम्मत बहुत कम लोगों में थी। ओझाई करते-करते परेश के बाल पक गये थे। ऐसा कोई

पाप-अभिशाप नहीं था कि जिसकी कोई काट परेश पात्र न कर सके। इन्हीं परेश पात्र अर्थात ओझाजी की शरण जाने को तारिणी ने कहा था। हो कुछ खर्चा। उससे अगर परिवार का मंगल हो तो हारान किसी तरह आपत्ति नहीं कर सकता था। यही तारिणी की एकान्त इच्छा थी।

हारान बोला, 'एक बार आखिरी कोशिश करके देखूँ। गिद्धों को आग में जलाकर मार डालूंगा।'

तारिणी डरकर बोली, 'उसके माने ? तुम पेड़ में आग लगा दोगे ? भला हो ! गिद्ध भगाने में पेड़ जलकर राख हो जायेगा। कहते है कि नारियल के पेड पर पार्वती का वास होता है। जिस पेड को काटना मना है, उसी को तुम आग लगा दोगे ?'

'धत्, बुद्धू,' हारान हँसकर बोला, 'वह क्यों होगा ? बाँस के लग्गे में कपड़ा बांधकर मशाल बनाऊँगा। रात के अँधेरे में वह मशाल जलाकर गिद्धों के पंख जला दूंगा। देखता हूँ, साले कितने दिनों तक जिन्दा रहते है !'

'पता नहीं, बाप रे,' तारिणी चिढकर बोली, 'आखिर आग लगाओगे !'

और हारान ने आग लगायी भी। वह अपनी समझ के मुताबिक बांस के सिरे पर कपडा बांध मिट्टी के तेल में भिगोकर उसमे आग लगाकर जब गिद्धों को जलाने चला तो इतने बडे लम्बे बाँस को न संभाल सका। जलता हुआ सिरा हारान की गोशाला की छत पर गिर पडा। छत धू-धू कर जल उठी। जानवर डर के मारे शोर मचाने लगे, किसी तरह रस्सियाँ तुड़ाकर उन्होंने अपनी जानें बचायी। भाग्य से घर का घास-फूस थोडी दूर था, और हवा का जोर नहीं था। इसी से आग गोशाला के छप्पर जलाकर ही शान्त हो गयी। बस्ती के लोग दौड़े, और घड़ों से पानी छोडकर आग बुझायी। हारान की बेवकूफी के लिए सब उसे धिक्कारने लगे। उधर गिद्ध आराम से नारियल के पेड़ के ऊपर पहले की तरह ही रह रहे थे। हारकर हारान मानो और भी ज्यादा जुर्माना-वसूली मानकर ओझाजी की शरण जाने पर राजी हो गया।

तारिणी खुद एक कुम्हड़ा और दो पके नारियल पेशगी देकर परेश पात्र को मौके पर इन्तजाम करने के लिए बुलाने गयी।

बसुलाट गाँव के एक छोर पर परेश पात्र का घर था। खपरैलों से छायी दो-एक कोठरियाँ, पक्की दीवारें, पेड़-पौधे, पोखरा, घाट—सब-कुछ लेकर सम्पन्न अवस्था थी। कुछ बीघे धान के खेत भी थे, बटाई पर देकर भी साल-भर का खाना-खर्चा निकल ही आता था। एकमात्र बेटी को छोड़कर परेश की पत्नी कम उम्र मे ही चल बसी थी। परेश ने फिर शादी नही की। लड़की की देख-भाल के लिए एक विधवा बहन थी। लड़की भी खूब बढ गयी थी। स्थानीय विद्यालय में पढती थी; बुआ के सिखाने से वह घर के कामों मे होशियार हो गयी थी। देखने मे भी अच्छी थी—कच्चे डाभ नारियल का-सा रंग, सुन्दर चेहरा था। उसकी शादी के लिए अच्छे-अच्छे रिश्ते आने पर भी परेश राजी न हुआ। गँवई-गाँव के लिहाज से विनब्याही लडकी की उम्र काफी थी। परेश की इच्छा थी कि किसी समझदार लडके को मन्त्र-तन्त्र सिखाकर लड़की से ब्याह कर उसे घर-जमाई बनाकर रखे। परेश के बाद वह दामाद ओझाई करे। लेकिन परेश को अभी तक मन के मुताबिक लडका नही मिला था। परेश की लड़की का घर का नाम कदम था, वैसे नाम था प्रीतिलता। तारिणी ने जाकर कदम को ही पकड़ा। अपने दुख की कहानी विस्तार से सुना आयी। कुम्हड़ा और नारियल, दोनों ही कदम के हाथों मे देकर ओझाजी से दया की प्रार्थना की। परेश उस समय घर पर न था। नदी पार कर उलूबेड़िया, या कही और, कोई बीमारी दूर करने के काम से गया हुआ था। लौटने में रात होगी, या हो सकता है कि दूसरे दिन ही लौटे। कदम ने बाबा को ज़रूर भेज देने का आश्वासन दिया। तारिणी की बात मे एक और ज़ोर था, वह यह कि उसकी लड़की भामिनी कभी कदम की खेलने के दिनो की सहेली थी। दोनों साथ-ही-साथ बहुत दौड-भाग किया करती थी, पेड़ों पर चढती थी, इक्का-दुक्का खेलती, एक साथ व्रत मानती-मनाती। भामिनी की शादी हो जाने पर वे अलग हो गयी थी। वही भामिनी जब विधवा होकर घर आयी, तो कदम उससे मेल-जोल नही रख सकी थी; क्योंकि उसके पिता ने मना कर दिया था। परेश ने कहा था : वह लड़की अभागी है, उस लडकी मे मिलने-जुलने से दुर्भाग्य की छूत लग जायेगी। इसलिए कदम को लुक-छिपकर भामिनी से बातचीत करने पर भी

प्रकट रूप से मेल-जोल बढ़ाने की हिम्मत न पड़ती; क्योंकि परेश पात्र स्नेह-प्रवण होने पर भी बाहर से बहुत कठोर था; यह सहन नहीं कर पाता था कि उसकी बात न मानी जाये। बकझक कर मोहल्ले को सिर पर उठा लेता। फिर गुस्सा ठंडा पड़ने पर बेटी को चिपटाकर दुलार से कहता : तेरे भले के लिए ही यह सब कहता हूँ, बेटी कदम ! तेरी माँ तुझे मेरे हाथों में दे गयी है। तेरे सिवा मेरा कौन है ? तुझे किसी अच्छे लडके के हाथ में देकर बेफ़िक्र हो जाऊँगा। तुझे सारी मुसीबतों से दूर रखना चाहता हूँ। कुछ बुरा न मानना, बेटी।

पिता के मुँह से मीठी दुलार-भरी बातें सुनकर कदम रो उठती। साथ ही इतने वज्र-कठोर स्वभाव के पिता की आँखें भी भर आती।

उसके सिवा कदम अब भामिनी का चाल-चलन अच्छा न समझती। लडकी विधवा थी, लेकिन विधवा का पहनावा नहीं पहनती थी। रंगीन साड़ी के सिवा वह कुछ और पहनना ही नहीं चाहती थी। साज-सिंगार करना उसे अच्छा लगता; पैरों मे महावर लगाती; होठों और गालों पर रंग लगाती। गुडिया-सी सजकर इधर-उधर घूमती-फिरती। गाँव के युवकों से बेरोकटोक बातें करती, हँसी-मज़ाक करती। उसके कपडे-लत्ते, चाल-चलन को लेकर कोई बुराई करता तो वह उलटकर जवाब देती : जो मेरी खुशी, वही मैं करती हूँ। आदमी मर गया तो क्या मेरी सजने-सँवरने की ललक और शौक चले गये ! क्यों न सजूँ ? खूब सजूँगी।

बुजुर्ग लोग भामिनी का दो टूक जवाब सुनकर हारान से शिकायत करते तो हारान माफी माँगकर उनसे कहता : बेचारी बच्ची है, इतनी-सी उम्र में पति चला गया। कोई चीज़ लेकर तो जियेगी। सजती-सँवरती है ज़रूर, लेकिन मेरी लडकी बहुत समझदार है। वह अपने को अच्छी तरह संभालकर रखेगी। उसके लिए तुम लोग फ़िक्र मत करो।

कदम भामिनी की यह चाल-ढाल पसन्द नहीं करती थी। लेकिन भामिनी की माँ ने जब मुसीबत में पड़कर सहायता की याचना की, तो कदम ने उसे भरोसा देने में आगा-पीछा नहीं किया।

दूसरे दिन सवेरे परेश लौटा। वह अकेला नही था; उसके साथ एक बकरी का बच्चा था। चितकबरा चंचल बच्चा देखकर कदम खुश हो गयी।

'बाबा, यह शैतान कहाँ मिला ?' कदम ने पूछा।

'मुनीरुद्दीन ने दिया है, ऊपर से,' परेश बोला, 'मेरी दक्षिणा तो दी ही, उसके ऊपर से यह बकरी का बच्चा भी दिया। माथे पर काली बिंदी देख रही है न, यह बहुत ही सुलक्षणों वाला बकरा है—पट्ठा !'

'मैं इसे पालूंगी, बाबा। उसे बडा करूँगी। बडा मजा रहेगा,' कदम खुशी से फूली न समायी।

'ठीक है,' परेश बोला, 'अरे, ऊपर से नहीं देगा तो क्या ? डाक्टर, हकीम, वैद्य—सबने हार मान ली थी। मुनीरुद्दीन के बूढे अब्बाजान को बुखार था। बराबर बना रहने वाला बुखार, छाती धड़-धड़ करती थी। किसी तरह दूर नही होता था। किसी से सुनकर मुझे बुलाया। मैंने तो रोगी को दूर से एक नज़र देखकर फौरन रोग पकड लिया—अचूक सन्निपात था। मन-ही-मन सोचा कि इस घर मे तो हिन्दू का मन्तर चलेगा नही। इसी से उस इस्लामी मन्तर का उपयोग किया जो कि सराय हाट के फ़कीर साहब ने दिया था :

उर उर देवगण सर्वमंगला। रक्तवस्त्र पहने गले मुंड माला।
माता के दस हाथ और दस लोचन। कोप से हुई दुर्गा सिंहवाहन।
छोड दोर पत्थर उठा लिया हाथ मे। धमक-धमक रोग
झाड़ू का सिरा मारा।
उधर सुने पाँच पीर के कलाम। यौवन हुआ उसकी ठौर उनका वास।
चारे के सिर पर मारूँ झाड़ू धर के पीछे करके पाँव।
पूरे अंग से छोड-छोड़ चुआ-चुआ कर रोग। हुकुम अल्ला बाबा का,
दुहाई खुदा की, चारा छोड़ दे अब।

'लेकिन बीमारी पुरानी थी। इतनी आसानी से जाने वाली थी क्या ? बीमारी बढ गयी। बीमार की साँस चलने लगी। अब गया तब गया ! यम और आदमी मे लड़ाई चल रही थी। मेरे कई बार मन्तर झाड़ने मे

रात के दो बजे के वक्त बीमार संभला। और सवेरा होते-न-होते बूढ़े खाँ साहब का बुखार चला गया। बस, मुनीरुद्दीन ने खुश होकर सिर्फ दक्षिणा ही नहीं दी, वह बकरी का बच्चा भी दिया। तू ले, बेटी, तू ही उसे पाल।'

'जरूर पालूँगी।' कदम बकरी के बच्चे को लेकर दुलारने लगी।

परेश बोला, 'तो सुन, मुनीरुद्दीन साहब ने रिदय के खोका को बुलवाया। अब्बाजान खोका डाक्टर के इलाज मे थे। तमाम गोलियाँ खिलायी, पैसों का सराध हुआ। लेकिन रोग कम न हुआ। मुनीरुद्दीन ने खोका डाक्टर को जवाब दे दिया। अन्त में अगति की गति, इसी परेश पात्र की पुकार हुई। बस, एक मन्तर से ही काम फतह।'

परेश ने ही इस क्षेत्र में 'खोका डाक्टर' नाम चालू किया था। डाक्टर का असली नाम था साधन भद्र। श्याम सुन्दर पुत्र हृदय दास का लड़का, शहर से पास कर पूरा डाक्टर बनकर आया था। साधन की बहुत दिनों की साध डाक्टर बनने की थी। लडका भी अच्छा था। टपाटप पास कर गया स्कूल की परीक्षाएँ: अन्तिम परीक्षा में जिले की छात्र-वृत्ति भी मिली। उसके बाद शहर पढने गया; डाक्टरी पढने लगा। पास करके निकला। सब लोगों ने सोचा कि साधन अब शहर में रहेगा। लेकिन उसने ऐसा न किया। गाँव लौट आया, एक कमरे मे दफ्तर बनाया। पहले साइ-किल खरीदी, उसके बाद छोटी-सी मोटर-साइकिल। देखते-देखते उसका काम जम गया। लेकिन परेश पात्र का काम कम होने लगा। गाँव में अगर पास किया हुआ डाक्टर मिले तो बीमारी दूर करने के लिए कौन ओझा को बुलायेगा? बहुत लाचार होने पर डाक्टर जवाब दे दे, तभी न ओझा की तलाश होती है! इसीलिए स्वभावतः शुरू से ही परेश ने साधन को अपना प्रतिद्वन्द्वी समझ लिया। साधन को हेठा करने के लिए वह हाथ धोकर पीछे पड़ गया। साधन की किसी भी विफलता को वह चिल्ला-चिल्लाकर सब को बताता। साधन को 'खोका डाक्टर' नाम देकर उसने मज़ाक उड़ाना चाहा। लोगों मे एक-दूसरे से सुनकर 'खोका डाक्टर' नाम चालू हो गया। साधन के कान में बात पड़ी तो वह जरा भी ख़फा न हुआ। उलटे विनय सहित बोला: परेश काका के आगे तो मैं खोका ही हूँ। उनकी कितनी जानकारी है! मैं तो सचमुच कल का बच्चा हूँ।

साधन की विनय से सन्तुष्ट होना तो दूर, परेश मन-ही-मन कुढ़ने लगा। जो चोट खाकर भी लौटकर चोट न करना चाहे उसके साथ कितनी देर तक झगड़ा किया जा सकता है ? उसमें लड़ाई जमती नहीं, मजा भी नही आता। इसी से 'खोका डाक्टर' के पीछे जो छिपा व्यंग्य था उसी से परेश अपने मन को तसल्ली देता।

कदम को जरूर 'खोका डाक्टर' नाम पसन्द नहीं था। उसने दो-एक वार पिता को उस नाम के कहने को मना भी किया था, लेकिन परेश ने बात नहीं सुनी। साधन पात्र-परिवार के साथ मेल-जोल रखता था। इस तरफ आने पर एक बार उन लोगों के हाल-चाल की खबर ले लेता। कदम की लिखाई-पढाई के बारे मे पूछता। उससे छोटे-मोटे मज़ाक भी करता। पेड के फल-फूल माँगकर ले जाता, खाँसी-जुकाम, बुखार-उखार होने पर बिना पैसे के दवा दे जाता। लेकिन अगर परेश जान पाता तो कदम को न खाने देता, छीनकर फेंक देता। कदम जहाँ तक सम्भव होता, दवा की बात पिता को न बताती।

असल बात यह थी कि पिता की उस सारी झाड़-फूंक, मन्त्र-तन्त्र पर कदम का विश्वास कम हो रहा था। उसका कारण कुछ तो स्कूली शिक्षा थी, और कुछ हद तक स्वयं साधन भी था। मौका मिलते ही साधन कदम को विज्ञान की कहानियाँ सुनाता। कितने नये-नये आविष्कार हो रहे हैं, यह बतलाता। हैज़ा, चेचक, मलेरिया कैसी आसानी से आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र से दूर किये जाते है, इसकी खबर कदम को साधन से मिलती। कदम पिता से ये सारी बातें छिपाये रहती। लेकिन वह मन-ही-मन संकल्प करती कि स्कूल की पढाई समाप्त कर वह खुद भी डाक्टरी पढ़ेगी। नही तो नर्सिंग तो है ही। लेकिन उसने मन की बात पिता के आगे कभी प्रगट नही की। कदम अच्छी छात्रा बनने के लिए पहले से अधिक कोशिश करने लगी।

पाँव धोकर परेश कमरे मे बिस्तर पर जाकर लेट गया। उसकी विधवा दीदी एक रकाबी में लाई ले आयी, लेकिन उसने देखा कि परेश इस बीच खर्राटे लेकर सो रहा है। कदम बोली, 'बुआ, लाई तुम दराज़ के ऊपर रख

दो। बाबा नींद से उठकर खायेंगे। कल रात-भर यम और आदमी में लड़ाई चलती रही। मुनीरुद्दीन साहब के अब्बाजान को साधन-दा ठीक न कर सके, लेकिन बाबा ने मन्त्र के ज़ोर से एक दिन में ही ठीक कर दिया। देखो न, उन लोगों ने कैसा अच्छा बकरी का बच्चा दिया है।'

'मैं मर जाऊँ!' बुआ ने चिल्लाकर कहा, 'बकरी का बच्चा दिया है तो दिमाग खा लिया है। कहे दे रही हूँ कि यह बड़ा होकर जब पत्ते चबा-चबाकर खायेगा तो मैं उसे पकड़कर काली मन्दिर में बलि दे आऊँगी।'

'अरे, माँ रे माँ, ऐसी अशुभ बात मत कहो, बुआ!' कदम ने टोककर कहा, 'मैं उसे पालूँगी। बताओ तो, इसका नाम क्या रखें?'

'मनहूस मुँहा!' बुआ मुँह बिचकाकर बोली।

कदम गुस्सा नहीं हुई। ताली बजाती हुई बोली, 'बड़ा अच्छा नाम बताया, बुआ!'

बुआ ज़रा चकरा गयी। कहाँ तो उसने घृणा से बकरी के बच्चे के लिए वह नाम दिया था और कदम तारीफ कर रही है! कदम ने रहस्य का समाधान कर दिया। उसने कहा, 'सचमुच बुआ, उसे मनहूस मुँहा बुलाने से यमराज की नज़र नहीं लगेगी, और नौकर-चाकर भी नज़र नहीं डालेंगे। क्या कहती हो?'

बुआ कदम का छिपा व्यंग्य न समझ सकी। उसने जो बहाने से बुआ को यमराज का दूत कहा था, वह समझने की अक़्ल बुआ में न थी। बकरी के बच्चे का नाम 'मनहूस मुँहा' रह गया।

अध्याय : 2

थोडी देर से उठकर परेश ने पोखर में डुबकी लगायी। उसने दीदी की रखी हुई लाई नही खायी। आज वह निर्जल उपवास कर पूजा करेगा। बदन पर अपने हाथो उसने सरसों का तेल डालकर मालिश की। यह उसकी पुरानी आदत थी। शुद्ध सरसों का तेल मिले, इसलिए वह सरसों खरीदकर मँगाता, खुद सामने खडे रहकर कोल्हू से तेल निकलवाकर लाता। खली भी काम मे आ जाती : खाद के लिए, घर मे जानवरों को खिलाने के लिए। दिमाग मे तरावट के लिए परेश महाभृंगराज तेल सिर पर लगाता। यहाँ तक उसकी विलासिता की सीमा थी। नही तो वेशभूषा के प्रति उसे कुछ मोह न था। ज्यादातर वह लाल कमीज़ और लुगी पहनता, जो धोबी को नही दी जाती; घर पर धोना ही काफी रहता। नहाकर परेश माथे पर सिंदूर की बड़ी-सी बिन्दी लगाकर पूजा-पाठ पर बैठता। उसका अपना ठाकुरद्वारा था, आराध्य देवी हैं काली। कुम्हार को बुलाकर उसने एक मिट्टी की छिन्नमस्ता भी स्थापित कर ली थी। माँ अपने ही हाथों अपना सिर काटकर उसे हाथ में लेकर अपना ही रक्त-पान करती। यह बीभत्स मूर्ति कदम को जरा भी अच्छी न लगती। किन्तु स्वयं काली की मूर्ति के पास इस छिन्नमस्ता की मूर्ति स्थापित कर परेश पूजा करता। पूजा के समय उसके कमरे का दरवाजा बन्द रहता। उस समय और तो और, कदम को भी कमरे में घुसने की मनाही थी। पूजा के समय किसी के परेश

को बुलाने पर वह गुस्से में आग-बबूला हो जाता। जो भी मुँह में आता, गाली-गलौज करता। इसीलिए जान-बूझकर कोई उस समय परेश को खफा करने न जाता। परेश मन से पूजा पूरी करता। केवल बीच-बीच में मन्त्र का गुंजन और गुरु गम्भीर 'माँ' 'माँ' की गुहार बाहर सुनायी पड़ती। परेश 'माँ' 'माँ' बोलकर जब हाँक लगाता, उस समय कदम के मन में भक्ति से अधिक भय छाने लगता।

पूजा समाप्त कर जब परेश बाहर आया तो उसका मन बहुत खुश था। अच्छी थोड़ी-सी नीद और स्नान के बाद उसकी आँखों का लाल रंग भी फीका पड़ गया था। मन्त्र की सफलता से मन भी खुशी से भरा हुआ था। खाने को बैठने पर वह कदम से बोला, 'आज माँ को मुनीरुद्दीन के अब्बाजान के लिए बहुत कुछ बताया। बोला, माँ, मेरा मान रखना। खाँ साहब को जिन्दा रखना। खोका डाक्टर जो नही कर सके, वह मैं कर सकूं।' ठीक उसी समय दीवार-घड़ी मे टन् से एक बजा। मानो माँ ने झट से कहा हो 'हाँ'। परेश उत्साह से बोला, 'तू देखना कदम, खाँ साहब इस बार बच जायें तो उधर की ओर मेरा काम कितना बढ जायेगा। खोका डाक्टर का पता ही नही चलेगा।'

कदम ने खोका डाक्टर के प्रसंग पर ध्यान न देकर भामिनी की माँ की प्रार्थना को पिता के आगे रखा।

परेश चिढ़कर बोला, 'न, यह नही हो सकता। घर पर गिद्ध बैठे हैं, तो बुलाओ परेश पात्तर को। क्यों, तुम खुद ही नहीं भगा सकते?'

'भगा सकते तो क्या तुम्हे बुलाते?' कदम बोली।

'अरे बापू, लाठी, सोटा, गुलेल न चले तो गोली तो चला सकता है?'

'भामिनी की माँ को गोली कहाँ से मिलेगी? उनके घर में क्या बन्दूक है?'

'उनके घर मे न हो, लेकिन हरहरि भद्र के घर पर तो है। जा न, उनकी बन्दूक माँगकर दो-एक गोली छोड़ दे। गिद्ध तो क्या, गिद्ध के बाप भी भाग जायेंगे। लेकिन वह नही करेंगे, क्योंकि गोली के दाम बहुत बढ गये हैं न! हरहरि साला पक्का कंजूस है, साला दूसरे के उपकार के लिए खाली

आवाज़ भी न करेगा।'

कदम बोली, 'खाली आवाज़ से अगर गिद्ध चले जाते तो पटाखा छोड़ने से भी चल जाता।'

'तो जो कहा,' परेश बोला, 'खाली आवाज़ से गिद्ध जाने वाले नहीं हैं। सचमुच एक गिद्ध को गोली मार सकने से ठीक हो जायेगा। गिद्ध की ताज़ी हड्डी रहती हैं। यह पता है, बेटी, कि गिद्ध की हड्डी में बड़ी सामर्थ्य रहती है। उस हड्डी को लेकर बहुत कुछ किया जा सकता है। तमाम श्मशानों-मसानो मे घूमा, लेकिन गिद्ध की हड्डी नही मिली। ये पक्षी कहाँ मरते हैं, बता सकती है ?'

'जब तुमको ही नही मालूम तो मैं कैसे बतलाऊँ ?'

'वे तो मानो जटायु की परमायु लेकर आते हैं,' परेश बोला, 'आँधी-पानी-सर्दी में तमाम चिड़िया मर जाती हैं, पर गिद्धों को कही मरते देखा है ?'

'सचमुच, नही तो !'

'वे क्या मरेंगे ! लाश को पंजों से नोंचते हैं; सड़ा-गला मांस कुरेद-कुरेदकर खाते हैं, फूले हुए पेट को फाड़कर नसों और आँतों को निगल जाते हैं। इन गिद्धों की हड्डी जो पहने रहे वह अकाल-मृत्यु से बचा रहता है।'

कदम थोड़ा रुककर बोली, 'हाय माँ, कैसे घिनौने हैं ! उन गन्दे पंछियों को देखने से ही मुझे तो घिन आती है। फिर उनकी हड्डी पहने रहना ! कोई पहनता है क्या ? मुझसे पहनने को कहा जाये तो मैं उलटी करते-करते मर जाऊँ।'

'अरे, मिले तभी तो पहनेगी !' परेश बोला, 'गिद्ध की हड्डी के नाम से जो मिलता है, वह कई जानवरों की हड्डियाँ रहती हैं—कठबिलाव, साही की—जो मामूली लोग पहचान नही पाते और ठगे जाते हैं। लेकिन परेश पात्तर की आँखों में धूल झोंकना इतना आसान नहीं है।'

कदम बोली, 'जो हो, तुम भामिनी के घर गिद्ध भगाने जाओगे या नहीं ?'

परेश बोला, 'सोच के देखता हूँ। बेकार का काम है।'

'इसमें सोचने का क्या है? जाओ ना बाबा! हजार हो, भामिनी कभी मेरी सहेली थी। हाय, बेचारी इतनी छोटी उमर में विधवा हो गयी!'

'पाजी लड़की!' परेश बोला, 'उसके लिए अब हाय-हाय कर रही है?'

'भामिनी कैसी है यह क्या मुझे पता नही, लेकिन उसके माँ-बाप तो बुरे नही हैं। तुम हाँ कह दो, बाबा, कि उनके घर जाकर गिद्धों को भगा दोगे।'

'मेरा मन नही कर रहा है।'

'वह भी कभी होता है? तुम भूत तो भगा देते हो और गिद्धो को नही भगा सकते?'

'मैं क्या वह कह रहा हूँ?' परेश बोला, 'उस आवारा चुड़ैल को देख-कर मेरे पाँव से सिर तक आग लग जाती है। इसीलिए मैं उसके घर नही जाना चाहता।'

'वह घर तो उसका है नही, वह तो उसके बाबा का है,' कदम बोली।

अन्त में परेश लड़की के बहुत कहने-सुनने पर राजी हो गया। लेकिन आखिर मे यही उसका काल हुआ।

असल में गिद्ध भगाने का मन्त्र उसे नहीं आता था। संसार में जो कुछ मुश्किलें हैं, क्या सबकी काट का मन्त्र आसानी से मिलता है? फिर भी अपनी अज्ञता बताने में परेश का अहं आड़े आया। कौन जाने, मन्त्र के जोर से हो या गिद्धों की मर्जी से हो, पक्षी अगर हट जाते है तो परेश की वाहवाही है। लगे तो तीर नही तो तुक्का, और अगर कही न जायें तो उपयुक्त जवाब परेश के दिमाग मे किलबिलाने लगा। उस जवाब को कदम को सुनाने की जरूरत नही थी। लड़की से बताने में परेश को संकोच होता था।

दस कट्ठा जमीन पर हारान मंडल का मकान था। उसकी हालत अच्छी थी। हारान खुद ही खेत-खलिहान का काम देखता था। उसका बाप भी देखभाल करता था। सोच-समझकर चलता था। परिवार मे लोग

भी थोड़े थे। बड़े आराम से गृहस्थी चल रही थी। घर से लगा पोखरा कमोवेश चार कट्ठा तो होगा ही। पोखरे में खूब मछलियाँ थीं। परेश ने वंसी से वहाँ मछलियाँ भी पकड़ी थी। पोखरे की खासियत थी उसके पक्के घाट। यह हारान का बड़प्पन था। पत्थर-जड़ा घाट पोखरे में बहुत नीचे तक चला गया था। सीढ़ियाँ जरा पतली थी, लेकिन चढ़ने-उतरने मे असुविधा नही होती थी। हारान के घर की औरतें उस पोखरे के घाट पर जमा होकर गप्पें लगाती। वस्ती के आसपास की औरतें भी आती थीं। पानी मे गले तक डूबे रहकर वे बहुत देर तक बातें करती रहती।

घाट के किनारे ही हारान की कुटिया थी। मिट्टी की दीवारें होने पर भी खपरैल की छाजन थी, जिस पर लौकी और चिचेड़ा की बेलें फैली रहती। घाट के पास ही वह मनहूस नारियल का पेड था, जिस पर गिद्धों ने अड्डा जमाया हुआ था।

परेश के थैली-पोथी लेकर घर की ओर कदम बढाते ही हारान की पत्नी ने ठोडी तक घूँघट काढकर सम्मान सहित उसे ओसारे में बैठाया। हारान घेरा ठीक कर रहा था। परेश को देखकर वह पास आया और उसे प्रणाम किया। उसके बाद अपने दु:ख की कहानी विस्तार से सुनायी। हारान की पत्नी ने उपयुक्त पूजा-पाठ को शीघ्र सम्पन्न करने के लिए प्रार्थना की।

परेश बोला, 'शुभस्य शीघ्रम्, अशुभस्य काल हरणम्!'

'तो जल्दी कुछ करो, ओझाजी,' तारिणी दीन-भाव से बोली।

परेश ने थोड़ी सरसों और एक लोटा पानी लाने को कहा। चीजों के आने पर परेश ने अपना काम शुरू किया। असल में इस सबका कुछ मतलब न था। गिद्धों को भगाने का कोई भी मन्त्र उसे नही मालूम था। फिर भी दूसरा मन्त्र लगाकर एक बार कोशिश करके देखने मे क्या हर्ज है? अगर ठीक हो तो अच्छा है, नही तो असफलता का कारण तो उसकी जवान पर है ही। यह लोग बहुत चूँ-चपड करेंगे तो सारी पोल खोलकर इन्हें ठीक कर देगा!

परेश ने कई बार नारियल के पेड की प्रदक्षिणा की। गिद्ध पेड की चोटी पर मजे से बैठे रहे। उनकी भोंडी शकल भी बुरी लगती थी। सचमुच

परेश अगर सिद्ध होता तो गिद्धों को एक नज़र से भस्म कर देता ! लेकिन उसमें वह शक्ति कहाँ थी ?

'माँ, माँ, जय माँ'...परेश ने कई बार ज़ोरों से पुकारा। गिद्धों ने ज़रा भी ध्यान न दिया। परेश ने मन्त्र पढ़कर नारियल के पेड़ पर पानी छिड़का, सरसों के दो-चार दाने फेंककर मारे। गरदन उठाकर गिद्ध देखने-भर लगे।

अब परेश ने थोड़ी सूखी लकड़ियाँ इकट्ठा कर पेड़ के नीचे चूल्हा बनाया। अपने ही हाथों आग लगाने से चूल्हा भरभराकर जलने लगा। कुछ गंधक परेश की झोली में से आग में फेंकने से उठी गंध चारों ओर फैल गयी। दुर्गन्ध भरा हुआ धुआँ नारियल के पेड़ की चोटी तक पहुँचा। अब लगा कि शायद गिद्धों को बेचैनी हुई। पर फड़फड़ाकर वे आसमान में उड़े। परेश तात्कालिक सफलता में खुश होकर 'माँ' 'माँ' 'जय माँ' कहकर चिल्लाने लगा।

इस बीच वहाँ भीड़ जमा हो गयी। गाँव के बच्चे-बूढ़े सब जमा हो गये थे। गिद्धों के उड़ते ही वे खुशी से कूद उठे। लेकिन यह खुशी थोड़ी देर की ही थी, क्योंकि गंधक का धुआँ गायब होते-न-होते गिद्ध फिर चक्कर लगाकर नारियल की चोटी पर बैठ गये।

परेश को अब परेशानी-सी हुई। उसके करतब की बड़ी भारी परीक्षा थी। परेश विफल हो गया। सबकी उत्सुक नज़रें लगी थीं कि अब परेश क्या करेगा ?

नारियल के पेड़ के नीचे खड़े होकर परेश सोच रहा था कि इसके बाद क्या करे कि तभी पिच्च-से गिद्धों की बीट परेश के मुँह और आँखों पर आकर गिरी। तब वह जाये तो कहाँ जाये ? इकट्ठे हुए तमाशबीन परेश की मुसीबत पर अनायास खुशी से फटे पड़ रहे थे। परेश ने जल्दी-से भागकर सीढ़ियों से उतर, सिर और मुँह धोकर साफ़ किया। जिसकी हँसी की आवाज़ ने सबकी आवाज़ों से अलग परेश के कानों और मन में चोट की, वह और कोई नहीं, हारान की विधवा बेटी भामिनी थी।

घाट की सीढ़ियों के सिरे पर भामिनी लोट-पोट होकर हँस रही थी।

हलकी पीली साड़ी में लिपटी साँवले रंग की उसकी देह से जवानी फूटी पड़ रही थी। उसकी हँसी के ज़ोर से उभरे दोनों स्तन हिले पड़ रहे थे। मुक्त आनन्द के बेरोक उल्लास ने उसके आकर्षक चेहरे को और भी आकर्षक बना दिया था।

परेश ने गुस्से से भामिनी की ओर देखा, लेकिन उल्लास से भरी युवती उस गुस्से से भरी दृष्टि की उपेक्षा कर हँसी की तरंग मे डोलती रही।

परेश ने अब कड़ी आवाज़ मे डाँटा, 'इसमें ऐसे हँसने की क्या बात है?'

'हीः हीः हीः!' भामिनी नये सिरे से हँसते-हँसते बोली, 'गिद्ध ने पिच्च से, हीः हीः हीः!'

हारान ने घबराकर तारिणी से कहा, 'अरे, सुन रही हो, ओझाजी को एक गमछा दो। सिर और मुँह पोछें।'

परेश चिढकर सीढियाँ चढ़ते-चढते बोला, 'अब उसकी ज़रूरत नही है। मैंने धोती के किनारे से ही पोछ लिया है। अब फिर घर जाकर स्नान कर शुद्ध होना होगा।'

'वह तो होना ही पड़ेगा,' भामिनी हीः हीः करती हुई बोली, 'अशुद्ध पक्षी की गन्दी चीज़ शरीर पर गिर पड़ी है। राह चलते हुए पेड़ के ऊपर से बदन पर कौआ हग दे यह तो मालूम है, लेकिन गिद्ध का, हीः हीः हीः...!'

परेश ने फिर डाँटा, 'चुप रह, और खीसें मत निकाल।'

'क्यो न निकालूँ?' भामिनी ने फट से जवाब दिया, 'मेरे दाँत तो देखने लायक हैं!'

सचमुच ही भामिनी के दाँतों की पंक्ति देखने लायक थी। पान खाये हुए लाल होठो के अन्दर सफ़ेद दाँत अच्छे गढे हुए, देखने लायक थे—ऐसे कि जिनकी उपमा कवि मोती से किया करते हैं।

परेश सीढ़ियाँ चढ़ते-चढते बोला, 'तो तेर दाँत उखाडना पड़ेंगे।'

भामिनी बोली, 'आप बेकार के लिए आँखें क्यो तरेर रहे हैं? गिद्ध भगाने आये थे, सो आखिर मे गिद्धों ने ही आपको भगा दिया। यह मज़े

की बात देखकर अगर मैं हँसती हूँ तो कौन-सा गजब हो गया ?'

'गिद्धों को भगाने मैं नही आया था। मुझे बुलाया गया था।'

'आकर भी तो नहीं भगा सके, वे घूम-फिरकर उसी ठिकाने पर आ गये।'

परेश तब घाट के चबूतरे पर आ रहा था। वह चिढकर बोला, 'अभी तो यहाँ गिद्ध बैठे हैं। अब उल्लू भी बैठेंगे।'

अब भामिनी के ख़फ़ा होने की बारी थी। वह ज़रा भौंह टेढ़ी कर बोली, 'मौत आये, खुद तो गिद्ध भगा न सके, और शाप देना शुरू कर दिया !'

'मैं शाप दूँगा ?' परेश बोला, 'मैं तो दिव्यचक्षुओं से देख रहा हूँ।'

अब तारिणी डर गयी। वह मिनमिनाकर बोली, 'ओझाजी, गिद्ध न जायँ, हर्ज नही, न हो तो आप शान्ति-पाठ कर दीजिये।'

'हारान की बहू, मैं ठीक बात कह रहा हूँ,' परेश बोला, 'तुम्हारे घर पर अब शान्ति की छाया नही रहेगी। मैं तो क्या, मेरे गुरुदेव भी आयें तो गिद्धों को न भगा सकेंगे। या इस घर में शान्ति न आयेगी।'

हारान बोला, 'यह क्या बात है, ओझाजी ?'

'हाँ, बिलकुल सच कह रहा हूँ,' परेश थैला-पोथी समेटकर जाने का इरादा करते-करते गुर्राया, 'इस घर में पाप ने अड्डा जमा लिया है।'

हारान बोला, 'पाप ?'

'हाँ, पाप, घोर पाप।'

'कह क्या रहे हैं ?'

'कह ही तो रहा हूँ,' परेश ने अब अपनी विफलता की सफाई दी। भामिनी की ओर उँगली उठाकर परेश बोला, 'वह है पाप। वह चुड़ैल ही पाप है।'

सारे मौजूद लोगों के सामने परेश ने भामिनी पर प्रत्यक्ष आक्रमण किया। भामिनी पहले तो घबरा उठी।

हारान बोला, 'ओह, विधवा लड़की को आप क्यों भला-बुरा कह रहे है ?'

तारिणी बोली, 'विधवा का सजना-गजना अच्छा नही लगता। उसे

सजना-सजाना अच्छा लगता है...।'

बात बीच ही में काटकर परेश बोला, 'मैं उसी को पाप कहता हूँ। पापीयसी, पापिष्ठा...।'

अब भामिनी बिफर उठी, 'मुझे वाही-तबाही क्यों कह रहे है ?'

परेश बोला, 'तू जो है वही कहता हूँ। अब भाडा फोडूँगा।'

भामिनी ने ज़रा आगा-पीछा कर कहा, 'कहिये न, इतना तूमार क्यों खडा कर रहे हैं ? कह डालिये।'

'तो सब लोग सुनो,' परेश ने कहा, 'यह विधवा चुडैल सजती-वजती ही नही है, यारों के यहाँ गुलछर्रे उडाने भी जाती है...!'

'कैसी भद्दी बात कर रहे है आप ?' भामिनी ने प्रतिवाद किया।

'यारो के साथ लीला करने मे तो भद्दा नही लगता। और मैं कहूँ तो भद्दा लगता है ?'

'आपका सब अभियोग झूठा है।' भामिनी के स्वर मे दृढता थी।

'झूठा अभियोग ?' परेश बोला, 'मैंने अपनी आँखो से देखा है, मशाई। परसो लडके श्मशान मे अकेले साधन-भजन समाप्त कर लौट रहा था कि देखा चादर लपेटे एक लडकी सड-से हरहरि की गद्दी से निकली। उस झुटपुटे अँधेरे मे हरहरि की गद्दी से और कौन आता है ? मशाई, मुझे सन्देह हुआ। मैं चुपचाप लडकी के पीछे हो लिया। देखा कि वह चुड़ैल हारान के घर मे घुसी। बदन की चादर उतार डाली, सीढियाँ उतरकर पोखरे मे हाथ-मुंह धोये। मैं पेड की ओट से देखता क्या हूँ कि औरत और कोई नही, यही पापिन थी।'

परेश ने भामिनी की ओर उँगली से दिखाया।

भामिनी डरी हुई आवाज में बोली, 'ओह, कैसी झूठी-झूठी बातें बनाकर आप कह सकते हैं! परसों रात मैं बिस्तर से एक क्षण भी नही उठी। और यह कहते हैं कि मैं...। फिर हरहरि बाबू की गद्दी से ? वह आदमी मेरे बाप की उमर का है।'

हारान बोला, 'उसके घर मे पत्नी, बाल-बच्चे, नाती-नातिन भरे पड़े हैं। और उसे लेकर...।'

तारिणी ने खफ़ा होकर ऊँची आवाज मे कहा, 'मेरी लड़की की जो

वदनामी करे उसके मुंह मे आग ।'

'हरहरि इस विधवा युवती के रस की हांडी मे डुबकियां ले रहा है,' परेश बोला, 'मैं कहे जा रहा हूँ, यह पाप किसी दिन तुम्हारे वंश मे मूसल को जन्म देगा ।'

भामिनी अब बदले की चोट करने पर उतर आयी, 'ठहरो ओझाजी, दूसरे का कलंक तो गला फाड़कर कह दिया, पर अपने घर का किस्सा भी तो कहो ।'

'क्या, मेरे घर मे क्या हुआ ?'

'क्यों, वह जो आपकी दुलारी लडकी है कदम, प्रीतिलता ?'

परेश बोला, 'उसकी तरह की लड़कियाँ होना मुश्किल है ।'

'ठीक ही तो है, प्रीतिलता डुब्बी लगाकर प्रेम करती है उस खोका डाक्टर से। वह तो आपको दिखायी नहीं पड़ता। आप तो इस गांव, उस गांव के झाड़-फूंक मे पडे रहते हैं। बीच-बीच में वह खोका डाक्टर आपके घर आता है। आपके दुलार की लडकी के साथ प्रेम करता है, खुसफुस यारी चलती है ।'

परेश गरज उठा, 'चुप रह, हरामजादी !'

भामिनी बिना रुके बोली, 'अपना घर संभालो ओझाजी, बाद में किसी के पीछे पड़ने आना ।'

अध्याय : 3

लाछित होकर परेश घुरघुराता हुआ घर लौटा। गिद्धों की बीट से सारा बदन घिनघिना रहा था। पोखरे में डुबकी लगा ले तो चैन आये। उस पर अपनी ही लड़की के मामले का किस्सा। भामिनी को कोचने जाने पर चोट लौटकर परेश को ही लगी। लड़की के मामले का कुछ निपटारा करना पड़ेगा। रिदयदास का बेटा साधन उसके घर आये—इसमें ताज्जुब नही है। मन्दिर के चबूतरे पर बैठकर परेश ने कितने दिनो रिदय के साथ शतरंज खेली है। सुगन्धि और मसाले का चारा तैयार कर उसके साथ मिलकर मछली पकडने गया था। रिदय के बेटे का भाग्य अच्छा है। वेटा डाक्टर हो गया है, अपने देश की ज़मीन को न भूलकर गाँव मे ही प्रैक्टिस शुरू की। इसमे आपत्ति की क्या बात है? लेकिन इसीलिए वह कदम से प्यार करे तो यह बर्दाश्त नही किया जा सकता। कदम जवान हो गयी है। साधन भी अविवाहित है; दोनो मे बातचीत चलना ताज्जुब की बात नही है। इसी को प्रेम कहा जाता है। खासकर जब उस खोका डाक्टर के आने से परेश का कामधाम कुछ कम हो गया है। बाप के प्रतिद्वंद्वी के साथ प्रेम? परेश लड़की को ज़रूर ठीक करेगा।

परेश ने घर में घुसते ही आवाज़ लगायी : 'कदम, कदम!'

कोई जवाब नही। पैरों के पास कदम का पाला हुआ बकरी का बच्चा 'मे' 'मे' करने लगा। परेश का गुस्सा बकरी के बच्चे पर उतरा। उसने

बकरी के बच्चे को धाँय-धाँय कर लाठी मारी। अबोध प्राणी दर्द के मारे 'में' 'में' कर दूर छिटककर ज़मीन पर गिरकर लोटने लगा।

आवाज़ सुनकर परेश की बडी बहन कमरे से निकल आयी। उसकी कच्ची नींद टूटने से मिज़ाज गरम हो रहा था। वह गुर्राकर बोली, 'अबोध जीव को डंडे से क्यों पीटा ?'

'अच्छा किया,' परेश चिल्लाकर बोला, 'कदम कहाँ है ?'

'क्या मुझसे कहकर जाती है ?'

'तुम्हें बैठालकर खिलाता-पिलाता क्यों हूँ ? बिना माँ की लडकी कहाँ जाती है, क्या करती है, उधर कुछ ध्यान नही देना होता है ?'

'वह मेरी बात ही कब सुनती है ?'

'इसीलिए हर जगह जाने दोगी ?'

'उमर हो गयी है, लिखना-पढ़ना सीख गयी है, अँगरेजी बोल सकती है। वह मेरी बात सुनेगी ? क्यों ? कितनी बार कहा, लड़की बड़ी हो गयी, अब ब्याह कर दो, सो बात तो तुम सुनते नही।'

'अब बाज़ार में भांडा फूटा है। हो चुका ब्याह,' परेश चिढ़कर बोला, 'छोटी-सी लडकी प्यार मे पड़ गयी है।'

'हाय राम, कैसी गन्दी बातें करते हो ! किसके साथ ?'

'तुम्हें कुछ नहीं पता, दीदी ?'

'नही तो।'

'खोका डाक्टर के साथ।'

'आहा, वही हो, तुम्हारे मुँह मे फूल और चन्दन ! उन दोनों की शादी हो जाये तो बड़ा अच्छा है।'

'खबरदार, यह बात फिर मुँह पर मत लाना।'

'क्यों ? वे लोग तो अपनी जात के है। लड़की अगर चुनकर अपनी जात के डाक्टर से प्यार करे तो इसमें गुस्सा होने की क्या बात है ?'

'खोका डाक्टर मेरा दुश्मन है। मेरे रोज़ी-रोज़गार को बन्द करने के लिए बैठा है।'

'हुँः, यह अच्छी बात रही। तेरा बुढ़ापा आ रहा है। ज़मीन-जायदाद है। क्या करना है रोज़गार करके ? तमाम भूत-परेतों का कारबार है।

साधन बेटा के साथ लडकी का ब्याह कर बाकी जीवन शान्ति से बिता दो।'

'दीदी, तुमसे कहा है कि यह बात फिर न दुहराना। जन्तर-मन्तर मेरा रोजगार ही नही है; यह मेरी साधना है। मेरे मन्त्र से जब रोग चला जाता है; भूत-प्रेत, दैत्य-दानव छू-मन्तर हो जाते हैं तब अपनी शक्ति देखता हूँ। शक्तिहीन निकम्मा होकर ज़िन्दा रहूँगा ? मेरी साधना की सिद्धि अभी भी बाकी है।'

इस तर्क-वितर्क के बीच कब कदम आ गयी थी, यह उन दोनो को पता नही चला। कदम ने उनकी कितनी बातें सुनी, इस ओर उनका ध्यान ही न था। परेश ने लडकी को देखते ही पूछा : 'कहाँ थी ?'

'साधन-दा के घर।'

'क्यो ?'

'एक किताब लेने गयी थी।'

कदम के हाथो मे एक किताब थी। परेश ने झट से किताब छीन ली। मोटी, अँगरेज़ी की किताब थी। परेश को उतनी अँगरेज़ी नही आती थी। फिर भी जोड-जोड़कर किताब का नाम पढा : 'फ़ि-ज़ि-यॉ-लो-जी।'

'यह कौन-सी किताब है ?' परेश ने गुस्से मे पूछा।

'फ़िज़ियॉलोजी। शरीर-विज्ञान की किताब है।'

परेश पन्ने पलटने लगा। अचानक उसकी दृष्टि कुछ तसवीरो पर पड़ी। आदमी और औरत के नीचे के अंगो की तसवीरें थीं। वह भक् से भभक उठा।

'तू ये सब किताबें पढती है ?'

'वाह रे, स्कूल मे तो यह सब पढना पड़ता है। हाँ, यह और भी ऊँचे क़िस्म की किताब है। डाक्टरी मे पढायी जाती है।'

'तो तू यह सब पढेगी ! वह हरामजादा तुझे यह गन्दी किताब देकर बिगाड रहा है ?'

'तुम यह सब क्या कह रहे हो, बाबा ? कौन किसे बिगाडेगा ?'

'तेरा वही प्यारा साधन-दा, खोका-डाक्टर। तुझे यही सब गन्दी तसवीरें दिखाकर बुरे काम मे लगाना चाहता है।'

'छीः छीः, ये सब बातें तुम मुझसे कह सकते हो ?'

'यह सब काम करने में तुम्हें शरम नहीं, और मुझे कहने में हर्ज है ?'

कदम बोली, 'साधन-दा की किताब दे दो।'

'किताब को खत्म कर दूंगा,' कहकर परेश ने किताब लेकर बाहर ज़मीन पर फेंक दी। फेंकने की चोट में किताब की सिलाई फट गयी। दो-एक पन्ने फर-फर कर उड़ने लगे। कदम ने दौड़कर किताब को उठा लिया और पन्नों को ठीक से लगाने लगी।

'ओह, किताब फट गयी। साधन-दा क्या सोचेंगे ?' कदम बोली, 'अगर तुम नहीं चाहते तो मैं किताब लौटाये आती हूँ।'

'खबरदार, अगर उस हरामज़ादे के घर गयी तो पैर तोड़ डालूंगा।'

परेश ने लड़की के हाथों से किताब छीनकर कहा, 'यह किताब मैं लौटा आऊँगा, और कह आऊँगा—हरामज़ादे, अगर इस घर की हद में फिर पैर रखा तो या तो वह तेरा आखिरी दिन होगा या मेरा आखिरी दिन होगा। और तुझे मार-मारकर हड्डी चूर-चूर कर दूंगा अगर तूने फिर उस हरामज़ादे से यारी की।'

कदम ने आँखों को आँचल में दबाये भागकर कमरे में जा धड़ाम से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

परेश की दीदी ने गहरी साँस छोड़कर कहा, 'इस तरह बिना माँ की लड़की को दुख दिया जाता है, परेश ?'

'तुम अपना काम देखो,' यह कहकर परेश किताब बरामदे के ऊपर रखकर एक गमछा ले पोखरे में डुबकी लगाकर शुद्ध होने चला गया।

परेश और भामिनी के बीच का संवाद फल-फूलकर कुछ ही देर में गाँव-भर में फैल गया। गाँव के लोगों के दो पक्ष हो गये। किसकी बात ठीक है, इसे लेकर लोगों के सोच-विचार का अन्त ही नहीं था। हरहरि भद्र चरित्र-हीन कहलाकर बदनाम तो था ही, उस पर भामिनी का चाल-ढाल भी अच्छा न था। परेश पात्र ने जो देखा और कहा, वह सच हो भी सकता है। और कदम और साधन का मिलना-जुलना पूरी तौर पर आपत्तिजनक न होने पर भी भामिनी की बात झूठ नहीं भी हो सकती है। घी और

आग ! भक् से जल उठने में कितनी देर लगती है ? फिर परेश ने लड़की को डाँटा है, और कदम-साधन का मिलना-जुलना बन्द है, यह सभी जान गये थे। लेकिन हरहरि के कान मे परेश का दोषारोपण पहुँचने से वह गुस्से से आगबबूला हो गया।

'परेश पात्तर साले को क्या मिल गया है ? उसे कौन-सी बड़ी चीज़ मिल गयी है ? नींद-भरी आँखों में किसे देख लिया, कि कलंक का टीका मेरे सिर मढ देना चाहता है ?' हरहरि बिगडकर बोला।

मणि मुख्तार भद्र साहब की मुसाहिबी करते थे। वैसे उनका अपना कुछ कामकाज नही था। भद्र महाशई के दिये हुए कामकाज मे उनका भी कुछ रोजगार हो जाता था। वे बोले, 'आई० पी० सी० की धारा में दादा, एक मुकदमा ठोक दीजिये।'

'फिर कोर्ट कचहरी, अदालत कानून ?'

'आपको उसके लिए परेशान न होना पड़ेगा। इतनी बडी बात आँख बन्दकर पी जाने से लोग क्या कहेंगे ? मैं अदालत का झगडा संभाल लूँगा।' मुख्तार ने भडकाया।

'तो ठोंक दो।'

हरहरि भद्र इस अंचल मे पैसे वाला आदमी माना जाता था। उसके सिर्फ अपने नाम-बेनाम मे बहुत-सी जमीन-जायदाद ही नही, एक पंसारी की दूकान भी थी। हरहरि खुद दूकान की गद्दी पर बैठता। उसके सिवा वह तीन नावों का मालिक था, जिन्हें मछुआरो को किराये पर देता था। उससे भी खूब आमदनी होती। उस पर सूद का भी कारबार था। हरहरि का प्रभाव और प्रतिष्ठा काफी थी। उसकी गृहस्थी भी काफ़ी बड़ी थी। और लालच भी बहुत अधिक था। वह नीचे स्तर की औरतों से ही आमोद-प्रमोद पसन्द करता था। इनमे जो भी आपत्ति कर सकते थे, वे बहुत-से हरहरि के कर्जदार या गाहक थे। गाँव की सार्वजनीन पूजा मे, यात्रा-गान के जमाव में, युवा-समिति के खेल-कूद में हरहरि नियमित रूप से चन्दा देता था। इसीलिए इतने बड़े पृष्ठपोषक का कोपभाजन बनने को कोई तैयार न हुआ। हाँ, परेश पात्र की बात अलग थी। वह न तो किसी राजा की प्रजा था, न किसी महाजन का कर्जदार ! वह अपने ही रोब मे रहता।

हरहरि ज़बानी कितने ही बादशाह और वज़ीर क्यों न पीटता हो, लेकिन मन-ही-मन परेश पात्र से डरता था। किसे पता, अगर यह आदमी सचमुच का मारण-उच्चाटन करता हो ! इसी से शुरू में वह मुक़दमा करने पर तैयार न हुआ, लेकिन मणि मुख़्तार के कहने में आकर तैयार हो गया। मणि ने मौके के मुताविक़ मुकदमा दायर कर दिया। अदालत के आदमी ने आकर परेश को कागज़ थमाया। इसके लिए उसे डायमंड हार्बर तक भागना पड़ेगा।

हारान मंडल भी हरहरि का कर्ज़दार था। उस पर पंसारी के खाते में हारान का बहुत-सा रुपया वाकी पड़ा रहता। उसने एक दिन आकर हरहरि से कहा, 'हरबाबू, भामिनी ने प्रतिज्ञा की है कि गिद्ध भगाये बिना वह पानी नहीं पियेगी। वह कहती है कि ओझाजी को दिखा देना होगा कि गिद्ध भगाये जा सकते हैं। भामिनी ने आप तक यह बात पहुंचाने के लिए कहा है।'

'कहा है, क्या ?' हरहरि ज़रा हँसकर बोला, 'तो इतने लोगों के रहते मुझसे क्यों कहा ?'

'आपके पास बन्दूक है,' हारान बोला, 'आपके बन्दूक छोड़ने से वे हवा हो जायँगे।'

'गोली चलाने में पैसे लगते है ? एक गोली का दाम मालूम है ?'

'वह कैसे मालूम होगा ? लेकिन भामिनी का बड़ा अनुरोध है। उसने कहा है कि जो भी खर्च हो, आप उसकी बात टाल नहीं सकते।'

'ओहो, विचारी बाल-विधवा है, दुखिया ! मैं क्या उसकी बात टाल सकता हूँ ? अच्छा हारान, आज दोपहर को मैं बन्दूक लेकर तुम्हारे घर आऊँगा।'

हरहरि ने उसकी बात रख ली। दोपहर को अपनी दोनाली बन्दूक और चार गोलियाँ लेकर हारान के घर जा पहुँचा। इस अजीब शिकार का किस्सा लोगों में फैल गया। दोपहर होते-न-होते हारान के घर के इर्द-गिर्द बहुत-से लोग जमा हो गये।

भामिनी ने खुद मुसकराकर हरहरि का स्वागत किया : 'पता था कि आप आयेंगे। मेरी बात क्या टाल सकेंगे !'

'वह क्या टाल सकता हूँ भामिनी, आह, बाल-विधवा दुखिया

बेचारी !'

भामिनी थोडा-सा मुसकराकर रह गयी। बोली, 'किस तरह हरबाबू की खातिर करूँ? आइये, पैर धो दूँ।'

'मैं तो शू-जूते पहनकर आया हूँ। पर तुम जब पैर धोने को कह ही रही हो तो मैं क्या जूता उतारे बिना रह सकता हूँ ?'

भामिनी एक लोटे मे पानी ले आयी। सबके सामने उसने निःसंकोच हरहरि के पैर धो दिये। कुछ ज्यादा देर ही पकडे रखकर पैर धोये। हरहरि बन्दूक गरदन पर रखे धीरे-धीरे हँसता रहा। पाँव धोना समाप्त कर भामिनी ने अपनी साडी के आँचल से हरहरि के पैर पोंछ दिये।

'गिद्ध कहाँ हैं ?'

हारान बोला, 'दो तो उड़ रहे है। वह, वह जो आसमान मे है।'

'इतने ऊँचे तो गोली जायेगी नही।'

हारान बोला, 'एक गिद्ध पत्तों की ओट मे छिपा बैठा है।'

भामिनी बोली, 'आप न हो तो कुछ देर मेरे कमरे मे बैठें। मेरे बिस्तर पर नयी चादर बिछी है। तीनों गिद्ध इकट्ठे हों, तब मारियेगा।'

हरहरि ने एक बार भामिनी की ओर और फिर एक बार इकट्ठी हुई जनता की ओर देखा। उसके बाद बोला, 'नही, एक का ही शिकार अच्छी तरह कर लूँगा।'

हरहरि बन्दूक लेकर नारियल के पेड़ के पास आया। बहुत देर बाद बन्दूक मे गोली भरी। सभी उत्सुक होकर देखते रहे। गिद्ध के पख थोडा दिखायी दे रहे थे। हरहरि ने बन्दूक का निशाना लगाकर गोली चला दी। छर्रा काफी दूर से निकल गया। हरहरि ने कुछ अप्रतिम हो हँसकर फिर निशाना लगाया। इस बार नारियल के पत्तो मे कई छर्रे छप से लगे।

हरहरि क्षुब्ध होकर बोला, 'समझे हारान, उम्र बढ रही है। हाथ का निशाना चूकना ही उसका सबूत है। जवानी में इन्ही हाथो से उड़ती बत्तखें मारता था।'

हारान बोला, 'अबकी तो लगा। लगेगा, हरबाबू, फिर कोशिश कीजिये।'

हरहरि ने फिर बन्दूक मे छर्रे भरे। धाँय से फ़ायर करने पर इस बार कई छर्रे गिद्ध के लगे। दर्शक लोग 'लगे' 'लगे' कहकर शोर मचाने लगे। गिद्ध के कई राख के रंग के पंख उड़ आये। उसने पंख फड़फड़ाकर उड़ने की कोशिश की, लेकिन पेड़ के उस पार टक्कर खाकर कहीं खेत मे जा गिरा। दर्शक लोग भागकर गिद्ध को मरता देखने गये। लेकिन कुछ देर बाद गिद्ध फड़फड़ाकर फिर उड़ा। इस बार दूर के एक पेड़ पर जाकर बैठ गया।

हरहरि के चेहरे पर सफलता की बहादुरी की मुसकान थी। वह बोला, 'यह अगर फिर इस पेड़ पर आकर बैठें तो खबर देते ही मैं बन्दूक लेकर चला आऊँगा। इस बार उन्हें एकदम खत्म किये बिना न हिलूँगा।'

भामिनी कुछ हँसकर बोली, 'यह मैं नहीं जानती हरबाबू, आप इस दुखिया बाल-विधवा की बात कभी न टाल सकेंगे। बिना बुलाये भी आप यहाँ आयेंगे।'

अध्याय : 4

लेकिन हरहरि को इधर आने का बहाना नहीं रहा; क्योंकि गिद्धों ने सचमुच हारान के ठिकाने को छोड़ दिया। यह भी बडी बात थी। परेश ओझा जो न कर सका वह हरहरि महाजन ने कर दिखाया। उसने गिद्धों को भगा दिया।

परेश के दिन बहुत बुरे बीत रहे थे—नम्बर एक, गिद्धो के मामले में मानहानि। नम्बर दो, मानहानि का मुकदमा। मणि मुख्तार का सामना करने के लिए परेश ने एक वकील किया था। यह उस पर बहुत भारी अर्थदंड के बराबर था। डायमंड हार्बर कोर्ट में जाना-आना पडता। नम्बर तीन, मुनीरुद्दीन के अब्बाजान का इन्तकाल हो गया था। परेश ओझा का मन्त्र बेकार गया! मसल मशहूर है : शतमारी भवेत् वैद्यम्, सहस्रमारी चिकित्सकः। लेकिन वह कौन सुनता है! यह एक मरना ही परेश को विशेप हानिकर हुआ। नम्बर चार, कदम आज्ञा का निरंतर उल्लंघन कर रही है। वह साधन के घर तो जरूर न जाती या उससे बातचीत न करती। असल मे वह खास काम के बिना घर से ही नहीं निकलती थी, और किसी से बोलती भी नही थी। बस, बकरी का बच्चा उसका साथी रह गया था। वह बिलकुल चुप्पी साध बैठी, और दिन-रात घर-घुसू होकर बैठी रहती। उसने स्कूल तक जाना छोड दिया था। बुआ उसके कमरे में खाना दे जाती तो वह खा लेती। परेश ने बहुत डाँट-फटकार की, लेकिन

कदम किसी बात का जवाब न देती। एक कान से सुनती और दूसरे से निकाल देती। वह उसकी अपने ही मन की दी हुई क़ैद की सजा थी। लड़की से कोई भूत तो नहीं चिपट गया है ?

इधर मानहानि के मामले में भी कई पेशियाँ हुई। परेश को माफी माँगना पड़ेगी, तभी जुर्माना कम हो सकता है, नहीं तो परेश को अपना कहना साबित करना होगा। लेकिन रात की उस घटना का, और भामिनी की बदनामी का गवाह कौन बने ? उसके सिवा हरहरि की गद्दी से तड़के भामिनी के निकलने से भी यह तो प्रमाणित नहीं होता कि उसका हरहरि से सम्बन्ध है। उसका कोई कर्मचारी भी इस मामले में हो सकता है। क़ानून का दाँवपेच परेश की अक्ल में न आता। लेकिन वह यह बात समझ गया था कि वह बड़े बुरे झमेले में फँस गया है। अगर सचमुच भामिनी के साथ हरहरि के अवैध सम्बन्ध का प्रमाण परेश हाजिर कर सके तो उसकी समस्या सुलझ सकती है। वकील साहब ने यही सलाह दी है। उन्होंने और भी कहा था कि अगर उन लोगों का सचमुच ऐसा सम्बन्ध है, तो वह ज्यादा दिन दबा भी नहीं रहेगा। परेश को धीरज के साथ प्रमाण जुटाना होगा। परेश टूट जायेगा, पर झुकेगा नहीं। वह प्रमाण जरूर जुटायेगा। इसी उद्देश्य से वह भामिनी की गतिविधि पर नजर रखने लगा।

लेकिन परेश जितना ही भामिनी के आने-जाने पर ध्यान रखने लगा, एक अनिवर्चनीय आकर्षण से उसका मन स्वयं विचलित होने लगा। भामिनी उसके मन पर दिन-रात छायी रहती। भामिनी का कसौटी से उकेरा प्रखर चेहरा, भरी जवानी, सजना-सँवरना, उठे हुए दोनों कड़े उरोज, पतली कमर, भरे नितम्ब परेश को उत्तेजित करने लगे। परेश कितनी ही बार सपने में भामिनी-संसर्ग-सुख का अनुभव कर जाग पड़ता; कितनी बार मन मे आता कि जाकर भामिनी को आलिंगन मे बाँध ले। परेश अपने मन-ही-मन अपने को धिक्कारता। सारी दुश्चिन्ताएँ उसके मन में अड्डा जमाने लगी। परेश ने अपने विक्षिप्त मन को बस में लाने की चेष्टा की, विशेश रूप से जब रात के समय-कुसमय वह भामिनी पर किसी कोने-ओने मे झपटना चाहता। कब भामिनी अभिसार को जायेगी !

लेकिन परेश की पता लगाने की यह इच्छा वेकार हो जाती। भामिनी रात को उठती ज़रूर थी। कमरे के वाहर आती, सीढ़ियाँ पार कर पोखरे-घाट पर उतरकर शौच कर आती। उसके हाथ की लालटेन की अस्पष्ट रोशनी मे भामिनी परेश की आँखों मे रहस्यमयी हो उठती। लेकिन जिस मतलव से परेश भामिनी के ऊपर नज़र रखता, यानी भामिनी का अभिसार, परेश को उसका प्रमाण न मिलता। तो क्या परेश ने उस भोर-रात रहे गलत देखा था ? तो क्या उसने भामिनी के वारे मे गलत वात कही थी ? उसके निष्कलंक चरित्र पर कालिख पोती थी ?

इधर कदम के स्वेच्छित-निर्वासन मे कोई ढील नही आ रही थी। वह प्रायः सदा ही अपने कमरे मे अकेली कैद रहती। किसी से वात न करती—सिर्फ वकरी के वच्चे को नहलाना, खिलाना, दुलार करना, विस्तर पर सुलाना ! यह हालत कव तक चलती ? वुआ ने परेश को कुछ ठीक वात करने को कहा; परेश खफा हो गया, बोला, 'लड़की पोर-पोर मे वदजात है। मुझे दवाना चाहती है। रहे कैदी वनकर। तुमको इतना सरदर्द क्यो होता है ?'

वुआ सहानुभूति के साथ कहती, 'अकेले रहते-रहते लडकी पागल नही हो जायेगी ?'

'विलकुल अपनी माँ की तरह, मियानी पागल !' परेश कहता, 'पागलों के ढंग मुझे मालूम हैं। मैंने मन्त्र पढ़कर बहुत-से पागलों को ठीक किया है।'

कदम पागल तो न हुई, वीमार हो गयी। उसे वहुत बुखार हो आया। परेश ने उसे फूंका हुआ पानी जवरन पिलाया। रोग भगाने का मन्त्र पढ़ा :

गंगा जमुना त्रिवेणी का पानी। जो आया पुकार पर वही पिये पानी।
कालमेघ पोखरे का पानी। लगे जाके कदम के अंग मे।
भुक पड़े वुर्ज के किवाड़। किसके हुक्म से ? दुहाई वाप की,
धरम के हुक्म से। जल्दी भाग !

परेश ने अरबी के सात पत्तों पर जल पढ़ दिया।

लेकिन कदम का बुखार दूर न हुआ, बल्कि बढ़ गया। वह बुखार की झोंक में इधर-उधर की बकने लगी। उधर परेश भामिनी पर नजर रखने में भी परेशान था। तभी बुआ ने भाई से कहा कि लड़की को बुखार तो नहीं छोड़ रहा है ! डाक्टर बुलाओ।

'मुझसे नहीं होगा।'

'तो मैं ही बुलाऊं।'

'बुलाओ।'

'किसे बुलाऊँ ? साधन-बेटा को खबर दूं।'

'उसे क्यों ?' परेश के सवाल में उग्रता नहीं थी।

'वह तो कदम की नाड़ी का स्वभाव जानता है।'

'तो बुला लो।'

'तुम ठहरो। मैं बुलाये लाती हूँ।'

'नहीं, मुझे काम है। यह लो चार रुपये उसकी फीस और पाँच रुपये दवाई के दाम।'

रुपये फेंककर परेश चला गया।

बुआ खुद खबर करने के लिए साधन के घर पहुँची। साधन घर पर ही था। बुआ के मुंह से सब बात सुनकर वह डाक्टरी का बैग लेकर भागा-भागा आया। बुआ उसे कदम के कमरे में ले जाकर बाहर चली आयी। उन दोनों के बीच उसका मौजूद रहना उसे ठीक नहीं लगा !

कुछ देर बाद साधन कमरे से निकल आया। काँपते-काँपते कदम भी उसके पीछे-पीछे उठकर आ गयी।

बुआ बोली, 'ओहो, इतना बुखार है, तू क्यों उठकर आयी, बेटी ?'

साधन हँसकर बोला, 'मेरे एक कैप्सूल से ही वह चंगी हो गयी है।'

'वह कैसे, बेटा ?' बुआ ने पूछा।

'अच्छी ही है,' साधन बोला, 'मामूली बुखार है। गले में टॉन्सिल बढ गये हैं। डरने की कोई बात नहीं है।'

'तुम्हारे इलाज में उसे क्या डर है, बेटा ! तुम फिर कब देखने आओगे ?'

'ठीक वक़्त समझकर आ जाऊँगा, बुआजी,' साधन बोला।

वह चला गया। जाते वक़्त दरवाज़े पर रुका। कदम की ओर देख-कर ज़रा मुसकराया। कदम के चेहरे पर भी मुसकराहट थी। बुआ की ओर नज़र पड़ते ही कदम शरमाकर कमरे मे चली गयी। जाते वक़्त वह कई दिनों बाद बुआ से बोली, 'बुआ, एक प्याला दूध दो न ! इस मनहूस मुँह मे बहुत देर से कुछ नही गया है।'

थी। भामिनी उस रस्से को पकड़कर धीरे-धीरे ढालू रास्ते की ओर उतर गयी। कीचड़ में उसके पैरों की छपछपाहट सुनायी पड़ने लगी। उस आवाज से डोंगी मानो चचल हो उठी। छाजन के अन्दर से कोई गम्भीर शकल का आदमी निकल आया। इतनी दूर से धीमी रोशनी में परेश उस आदमी को पहचान न सका। भामिनी कीचड़ पार कर डोंगी में चढ़ी। आदमी ने हाथ बढ़ाकर उसे चढ़ा लिया। उसके बाद लगा जैसे कि बाल्टी के पानी से भामिनी ने पैर धोये। इसके बाद भामिनी का हाथ पकड़कर वह आदमी सिर झुकाकर छाजन के अन्दर घुस गया। अँधेरे मे नाव की रोशनी दिखायी दे रही थी। कुछ ही देर मे रोशनी बुझ गयी। नदी के ऊपर नाव का अस्पष्ट आकार दिखायी दे रहा था।

परेश ने एक बार सोचा, चुपचाप कीचड़ में से होकर नाव के पास चला जाये। छिपकर उनका प्रेमालाप सुने। जरूरत होने पर नाव पर चढ़ जाये और उन्हें रगे हाथ पकड़ ले। लेकिन उसने फिर वह इरादा छोड दिया। अव्वल तो कीचड में होकर जाने से छपछप की आवाज होगी। इस बिना लहरों की भागीरथी में वह प्रेमी-युगल को सावधान कर देगी। फिर, अकेले परेश की गवाही का क्या मूल्य है! अदालत उस पर अविश्वास करेगी। उसके सिवा गम्भीर-सा आदमी अगर हरहरि न हो, तो फिर वह एक सभी मुसीबत मे फँस जायेगा। नये झमेले से लेना-देना क्या है? देखा जाये न कि गड्ढे का पानी कहाँ जाकर ठहरता है!

नाव कुछ दूर चली गयी थी। उसके अन्दर की रोशनी जल उठी थी। आदमी लालटेन लेकर हिलाने-डुलाने लगा। दूर से उसकी आवाज सुनायी पड़ी : 'ओ माझी, बचाओ, बचाओ ! ओ माझी, बचाओ, बचाओ !'

लड़की और आदमी दोनों मिलकर 'बचाओ' 'बचाओ' चिल्लाने लगे। नाव के साथ-ही-साथ आवाज भी दूर होती जा रही थी।

उसी चिल्लाहट से शायद दूर पर मछुआरों की एक डोंगी का ध्यान गया। लगा कि डोंगी डांड़ छोड़कर जल्दी-जल्दी खिसकती हुई नाव की ओर चली जा रही है। धीरे-धीरे पीछे की रोशनी दूर की रोशनी के पास जाकर पड़ी। उसके बाद दोनों रोशनियाँ धीमे-धीमे बढ़ने लगीं। दोनों रोशनियाँ किनारे की ओर लौटी आ रही थीं। थोड़ी दूर किनारे आकर दोनों नावें लग जायेंगी। परेश गिरते-गिरते भागा-भागा गया। औघट घाट पर दोनों नावें किनारे लग रही थीं। उसके पहले ही परेश वहाँ जा पहुँचा।

आकर देखा कि एक नाव से हरहरि उतर रहा है। उसके पीछे भामिनी थी। हरहरि माझियों से कह रहा है : 'तुम लोगों ने हमारी जान बचायी। कल मेरी गद्दी पर आना। तुम्हें बख्शीश देकर खुश कर दूँगा।'

हरहरि की आवाज उस वक्त भी काफी थकी हुई-सी थी। भामिनी डर के मारे चल नहीं पा रही थी। आसन्न मृत्यु की छाया उतरी आ रही थी। उसके चेहरे पर जैसे वह आकर रुक गयी हो। ऐसी ही उसकी हालत हो रही थी।

अच्छा हुआ, कैसी सजा मिली ! परेश सहसा जोर से हँस पड़ा। उसकी हँसी से हरहरि ने लालटेन उठाकर परेश को देखा, लेकिन कुछ बोला नहीं। भामिनी सिर नीचा किये जाने लगी।

परेश चिल्लाकर बोला, 'अब मुझे सबूत की कमी न होगी। यह सारे माझी मेरे गवाह हैं।'

हरहरि ने पहले तो कोशिश की कि माझियों को रुपये देकर सारा मामला दबा दे, लेकिन खबर इतनी मज़ेदार थी कि लोगों में फैल गयी। अब मणि मुख्तार ने सलाह दी, 'दादा, मामला खत्म कर देना ही अच्छा है।'

'मैं साले परेश ओझा के पैर नहीं पकड़ सकता ।'

'उसके पैर नही पकड़ना होगे । मैं उसके वकील से मामले को खत्म करा दूंगा ।'

'तो जो अच्छा समझो, करो ।'

वकील की सलाह से परेश ने बाकी मुकदमा खत्म करना स्वीकार किया । इससे परेश की मर्यादा बढ़ गयी । लेकिन भामिनी और हरहरि का सम्बन्ध टूटा नही, उलटे जो इतने दिनों से चोरी-छिपे चल रहा था अब वह प्रगट रूप से चलने लगा । यानी भामिनी प्रकाश्य रूप से हरहरि की जबान रखैल के तौर पर मान्य हुई । वह भी इधर-उधर नहीं, खुद भामिनी के बाप के घर पर ही—हारान मंडल के घर पर ।

हारान ने अपने ही खर्च से भामिनी के कमरे की मरम्मत करा दी । कच्चे कमरे मे नये सिरे से मिट्टी चढायी गयी । शहर से मिस्त्री लाकर मिट्टी के कमरे के लिए ही नया पलंग बना । उसके लिए नरम गद्दी, तोशक, रंगीन चादर, नरम तकिया हरहरि ने खरीद मँगाये । हरहरि प्रकाश्य रूप से रात का अधिक भाग भामिनी के कमरे मे बिताने लगा । क़ायदे से धोती-कुर्ता पहन, बदन मे खुशबू लगाकर नया स्वामिकार्तिक बनकर प्रौढ़ हरहरि ने नये उत्साह से रस-समुद्र मे बहना शुरू किया ।

इस पर गाँव मे शोर मचा । सभी छी:-छी: करने लगे, लेकिन एक परेश के सिवा सीधे कोई रोकने नही आया । उसी ने मुस्तैद होकर समाज के विरोध को व्यक्त करने की कोशिश की । धनी हरहरि के विरुद्ध उसकी कुछ करने की सामर्थ्य नही थी । वह सामर्थ्य हारान के विरुद्ध काम मे आयी । परेश की कोशिश से कुछ दिनों तक हारान के धोबी-नाऊ बन्द हो गये; बहुत-से लोग हारान पर बोलियाँ बोलने लगे । लेकिन हरहरि के पैसे और तौर-तरीके ने यह सब-कुछ भी ज्यादा दिनों तक नही चलने दिया ।

परेश ने बाद में पंचायत करने की कोशिश की । गाँव की छाती पर यह खुल्लमखुल्ला व्यभिचार-व्यापार बन्द न होने से जवान लड़के-लड़कियों पर गन्दा असर पड़ेगा, लेकिन मणि मुख्तार के सवाल पर परेश की वह कोशिश भी बेकार हो गयी । मणि ने समझाया कि बालिग़ के साथ सहवास ग़ैर-कानूनी नही है । व्यभिचार का अभियोग लगा सकती है हरहरि की

पत्नी; वह तो मौन दर्शक है। हरहरि की सन्तान भी उदासीन है। तो फिर दूसरों को किस बात का सरदर्द ? उसके सिवा तरुण-समाज में बुरा प्रभाव बहुत दिशाओं से आ रहा है—सिनेमा, जात्रा, उपन्यास, कहानी आदि से...। एकमात्र हरहरि को बुरे प्रभाव के लिए क्यों जिम्मेदार ठहराया जाये ? इस सम्बन्ध की अच्छाई तो कोई देख नहीं रहा है। पहले के जमाने में तमाम पैसे वाले लोग रखैल रखते थे, फिर उस जमाने में एक से अधिक शादियाँ भी होती थी। अब एक से ज्यादा शादी नही होती। अब रखैल रखने मे मुसीबत आ जायेगी ? भामिनी बालिग है, विधवा है, उसकी साध और खुशियाँ तुष्ट नहीं हो पायी हैं। वह अगर हरहरि को ही चाहती है तो उससे किसी को क्या आता-जाता है ?

मणि मुख्तार की जिरह और हरहरि के रुपयों के ज़ोर से परेश की दलीलें बेकार हो गयी। उलटे उसके भला चाहने वालो ने सलाह दी कि परेश बेकार के लिए इस मामले में हाथ न दे। उसके सिवा भामिनी भी अब पर्दानशी बन गयी है। सज-धजकर अब वह बाहर नही निकलती। गृहस्थ पत्नी की तरह घर मे ही रहती है। इससे जवान लोगों के दिल की चंचलता बहुत कम हो गयी है। अच्छा ही हुआ है। बैठने के पहले ही पंचायत ने नालिश खारिज कर दी। लेकिन परेश ने दम्भ के साथ घोषणा की कि वह किसी भी तरह इस पाप को बर्दाश्त न करेगा। जरूरत हुई तो वह अकेले ही लड़ेगा।

मणि मुख्तार ने व्यंग्य से कहा, 'क्या मारण-उच्चाटन करोगे ?'

'क्या करूँगा, वह तुम्हारा लम्पट मुवक्किल और उसकी कलकिनी उपपत्नी देख लेंगे।'

मणि ने डर दिखाकर कहा, 'देखो ओझा मशाई, जहर-वहर खिलाने की कोशिश न करना, नहीं तो तुम्हें फाँसी पर लटकाने का इन्तज़ाम करूँगा।'

परेश अकड़कर बोला, 'मैं परेश पात्तर डरने वाला पात्तर नहीं हूँ। मैं यह पाप किसी तरह नही चलने दूँगा।'

लेकिन परेश की अकड़ खाली ही रही। वह कुछ न कर सका। पैसों के ज़ोर से हरहरि खुल्लमखुल्ला व्यभिचारमय जीवन में मग्न रहा।

परेश ने अपने को बहुत ही लाचार पाया। जैसे कि उसका कोई मित्र न रहा हो, स्नेही न बचा हो, जिसके साथ दो क्षण बात करके मन को हलका कर ले। परेश को लगा कि उसका प्रभाव और प्रतिष्ठा लगातार कम हो रहे है। खोका डाक्टर ने उसका काम चौपट कर दिया है। भामिनी ने उसके पौरुष पर चोट मारी है। हरहरि उसका ऊँचा सिर नीचा किये दे रहा है। पहले तो ऐसा न था। एक दिन था कि परेश ओझा का नाम सुनते ही लोगो का कलेजा काँप उठता था। बहुत लोग उसके क्रोध के भाजन नहीं होना चाहते थे। क्या पता, क्या मारण-उच्चाटन कर दे! क्या जाने, क्या शाप दे दे! और आज लोग उसे कुछ समझते ही नही। ऐसा न होता तो भामिनी-सी लड़की तक उसकी ऐसी उपेक्षा कर सकती?

परेश ने निश्चय किया कि नये सिरे से शक्ति प्राप्त करनी होगी। श्मशान मे डाकिनी को जगाना होगा। दैवी शक्ति से पुनः शक्तिशाली बनना पडेगा। तब उसकी कोई उपेक्षा नही कर सकेगा। सिर्फ़ भामिनी ही क्यो, सारा संसार उसके बस मे हो जायेगा। परेश मन की इस आशा से उद्दीप्त हो उठा।

लेकिन ऐसी उग्र साधना की विधि तो परेश को मालूम नहीं थी। उसने मन्त्र-तन्त्र सीखा था; जो मन्त्र मिले थे वह बँधी पोथी मे लाल स्याही से उसने अपने ही हाथों लिख रखे थे।

झाड़-फूंक, ओझाई मे उसने नाम और यश कमाया था। लेकिन उच्च मार्ग की साधना का उसे कुछ पता नही था। गुरु के मामले मे परेश चुनाव आदि नही करना जानता था। हिन्दू, मुसलमान, पंडित, फकीर—सबसे मन्त्र सीखे थे। लेकिन साधना के मामले में उसे एक सिद्ध गुरु की जरूरत थी। कही गुरु मिलता तो साधना की कापी खोलकर तान्त्रिकाचार्यों के विज्ञापन की भाषा की चतुराई से मोहित न होता। असल सिद्ध लोग क्या इस तरह पैसे खर्च कर अपना विज्ञापन करते है? साधुओं की सिद्धि का सौरभ हवा मे खुद ही उडकर आता है।

गुरु कहाँ है? जो गुरु उसे ऐसी साधना की रीति बता दे कि उसका अनुसरण कर परेश दुनिया को वश में कर सके! ऐसे गुरु का पता उसे कौन बतायेगा? एक दिन बाजार मे चाय की दूकान पर बठे उसने फेरी

वालों से सुना कि उलूबेड़िया के काली मन्दिर के पास एक नये सिद्ध पुरुष आये हैं जिनकी सामर्थ्य अलौकिक है। उनकी मुट्ठी से सन्देश निकल आते हैं : सफ़ेद पानी रंगीन शर्बत बन जाता है। उनके झाड़-फूंक मन्त्र-तन्त्र में कितने ही रोगी ठीक हो गये है, उसका ठिकाना नही। और सिद्ध होने का कोई दावा नही। जो कोई कुछ भी पैरों के पास रख जाता है उसी से हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है। इसी तरह के एक लोभहीन परोपकारी गुरु की खोज मे परेश था ही। उसने निश्चय किया कि वह उस तान्त्रिक साधु की शरण में जायेगा।

एक शनिवार को परेश नदी पार कर उलूबेड़िया गया। साधु से मिलना भी कठिन न हुआ। झुड-के-झुड स्त्री-पुरुष हिन्दू-मुसलमान साधु के पास आ-जा रहे थे। मन्दिर के पास बेल के एक बडे पेड़ के नीचे तने से लगी एक छोटी झोंपड़ी बनी थी। उसमें काली की एक छोटी-सी मूर्ति प्रतिष्ठित थी। वही झोपडी साधु का मन्दिर और आवास था। शनिवार को वहाँ जैसे एक छोटा-मोटा मेला लग जाता था। लाईवाला, चिनिया-बादाम वाला आदि दूकानदारों ने भीड़ देखकर दूकानें जमा ली थी। साधु से बात करना ही मुश्किल था। लाइन लगाकर भक्तों का झुड चला आ रहा था। परेश ने देखा कि इस भीड मे कोई बात न हो सकेगी। भीड़ कम होने पर ही एकान्त होगा। परेश ने उलूबेड़िया के काली मन्दिर मे बैठे-बैठे बहुत समय काली के नाम का जप करके काटा। मन को भी थोड़ी शान्ति मिली।

सध्या को लोगों की भीड़ कम हुई। परेश जब लौटकर गया तो देखा कि साधुबाबा आरती कर रहे है। आरती के अन्त में परेश साधु के पैरो मे प्रणाम कर पास ही बैठ गया। उस समय तक लोग चले जा चुके थे। साधु अकेले थे। परेश ने उस समय अपना निवेदन किया। अपने आने का उद्देश्य बतलाया।

लेकिन साधु परेश के प्रस्ताव पर राज़ी नही हुआ। बोला, 'बेटा, मैं माँ का सामान्य सेवक हूँ; मैं ख़ुद ही अँधेरे में भटक रहा हूँ; मैं तुम्हे क्या राह दिखलाऊँगा?'

'आप ही कर सकेंगे, बाबा! मुझे बहुत अशान्ति है, मैं दिन-दिन

बिखरकर ज़मीन पर फैल गया। परेश ने बची हुई शराब पीकर खत्म कर दी। फिर अमंगल का लक्षण हुआ। कहीं एक उल्लू विकट आवाज़ कर चीख उठा।

परेश इन अपशकुनों की उपेक्षा करता हुआ इष्टदेवी के ध्यान में लगा रहा, लेकिन कहाँ इष्टदेवी ? परेश के मन की आँखों में तो केवल भामिनी की उत्तेजक मूर्ति थी। वही साँवले रंग का जवानी से भरा-पूरा शरीर, पीन पयोधर, क्षीण कटि, स्थूल नितम्ब—वैसा ही, जैसा काव्यों में वर्णन रहता है। परेश ने मन से उस मूर्ति को हटाकर फिर इष्टमूर्ति के ध्यान में लगना चाहा। लेकिन उसके मन से भामिनी कहाँ हटती थी ? भामिनी हँस रही थी ! उसकी हँसी की तरंगों से सारा शरीर हिल रहा था। उसकी छाती का कपड़ा हटा जा रहा था। भामिनी बड़े आनन्द में उसका आलिंगन करने आ रही थी। यह सब कैसी अनहोनी कल्पना थी !

परेश ने मन को संयत करने का प्रयत्न किया। इस बार मन जैसे बहुत कुछ स्थिर भी हुआ। वह इष्टदेवी को देख रहा था। 'माँ,' 'माँ,' 'जय माँ'—परेश ने ज़ोरों से चिल्लाना चाहा, लेकिन गले से आवाज नहीं निकली।

सहसा एक कुत्ता आकर उसके पूजा के पात्र को उलट गया।

'हरामज़ादे, तुझे मार डालूंगा,' परेश चीख उठा। साथ-ही-साथ क्रुद्ध प्रतिध्वनि ने लौटकर परेश का कलेजा कँपा दिया।

परेश डरकर उठ खडे होने को था कि उसकी गरदन पर किसी की साँस पडने लगी। उसने चौंककर पीछे देखा। न, झूठमूठ का डर था। वहाँ कोई न था।

परेश फिर ध्यान के लिए बैठा। फर-फर आवाज़ करता हुआ कोई उसके सिर पर से उड़ गया। ओह, यह तो चमगादड़ है। चौंककर, बिजली के प्रकाश में उसे पहचानने में देर न लगी।

सरसराता हुआ साँप चला गया न ! अँधेरे में दिखायी नहीं देता। विक्षुब्ध हृदय से साधना कैसे की जाये ? परेश उठ खडा हुआ। अब उसके मन में डर समा गया। उसने डर दूर भगाने के लिए फिर माँ के नाम का जप करना शुरू किया। वह बार-बार योगिनी-स्त्रोत दुहराने लगा। परेश का

दुबला होता जा रहा हूँ। आप मुझे अपनी शक्ति का स्रोत बतलायें।'

'उसी स्रोत का तो कुछ मालूम नही, बाबा,' साधु बोला, 'यह पता आजकल कोई दे सकेगा या नही, यह भी मालूम नही। यह बडी मुश्किल की राह है, बाबा। इस राह पर चलने से कामना-वासना का त्याग करना होगा। मन से द्वेष दूर करना होगा। किंचित् भी पथभ्रष्ट होने से बड़ी विपत्ति है, बाबा। क्या तुम कर सकोगे ?'

'हाँ, कर सकूंगा, बाबा,' परेश बोला। लेकिन उसके विवेक ने कहा: 'कर सकेगा क्या साले! तेरा मन तो भामिनी के पैरों पर पड़ा है। हरहरि को सीख देने के लिए तू चिढा हुआ है!' लेकिन विवेक की बात कौन सुनता है ?

'लेकिन मुझसे तो न हो सकेगा, बेटा। वह शक्ति मेरी अपनी नही है। माँ ने मुझे छोटी-मोटी शक्ति दी है, मैं साधना के मार्ग मे ऊपर नही उठ सकता, बेटा।'

साधु के पास से निराश होकर परेश दुखी मन से घर लौट आया। सारी रात वह जागकर सोचता रहा। कुछ परवाह नहीं। गुरु अगर नहीं मिलता है तो वह अपना गुरु खुद बनेगा! उसकी इष्टदेवी उसे सही राह दिखलायेगी। परेश मन-ही-मन 'माँ' 'माँ' कहकर गरज उठा।

लेकिन परेश पात्र साधना के मार्ग में आगे न बढ सका। उस दिन आकाश पर बादल छाये थे। बिजली बीच-बीच में चमक उठती थी। भागीरथी के किनारे श्मशान था। वहाँ परेश का आना-जाना था। एक एकान्त परिवेश मे परेश ने श्मशान मे साधना का आयोजन किया। श्मशान छोटा-सा था। हमेशा चिताएँ वही जलती थी। इधर-उधर जली हुई लकडियाँ। टूटे घड़े, हड्डियाँ पडी हुई थी। कुत्ते इधर-उधर घूमते फिरते थे; रात में स्यार भी फिरते थे। अजीब-सा सूनापन था। अपने हाथो एक चिता की जगह को साफ कर परेश बैठ गया। सामने आदमी की खोपड़ी रखी; उसमें शराब भरी। निर्जन, निस्तब्ध श्मशान में आधी रात को परेश जब आदिपेय शराब पीकर साधना करने वाला था कि अमंगल की सूचना देता हुआ स्यारो का एक झुड किसी ओर से चिल्लाने लगा। आदिपेय खोपड़ी से

बिखरकर जमीन पर फैल गया। परेश ने बची हुई शराब पीकर खत्म कर दी। फिर अमंगल का लक्षण हुआ। कहीं एक उल्लू विकट आवाज कर चीख उठा।

परेश इन अपशकुनों की उपेक्षा करता हुआ इष्टदेवी के ध्यान में लगा रहा, लेकिन कहाँ इष्टदेवी ? परेश के मन की आँखों में तो केवल भामिनी की उत्तेजक मूर्ति थी। वही साँवले रंग का जवानी से भरा-पूरा शरीर, पीन पयोधर, क्षीण कटि, स्थूल नितम्ब—वैसा ही, जैसा काव्यों में वर्णन रहता है। परेश ने मन से उस मूर्ति को हटाकर फिर इष्टमूर्ति के ध्यान में लगना चाहा। लेकिन उसके मन से भामिनी कहाँ हटती थी ? भामिनी हँस रही थी ! उसकी हँसी की तरंगों से सारा शरीर हिल रहा था। उसकी छाती का कपड़ा हटा जा रहा था। भामिनी बड़े आनन्द में उसका आलिंगन करने आ रही थी। यह सब कैसी अनहोनी कल्पना थी !

परेश ने मन को संयत करने का प्रयत्न किया। इस बार मन जैसे बहुत कुछ स्थिर भी हुआ। वह इष्टदेवी को देख रहा था। 'माँ,' 'माँ,' 'जय माँ'—परेश ने जोरों से चिल्लाना चाहा, लेकिन गले से आवाज नहीं निकली।

सहसा एक कुत्ता आकर उसके पूजा के पात्र को उलट गया।

'हरामजादे, तुझे मार डालूँगा,' परेश चीख उठा। साथ-ही-साथ क्रुद्ध प्रतिध्वनि ने लौटकर परेश का कलेजा कँपा दिया।

परेश डरकर उठ खड़े होने को था कि उसकी गरदन पर किसी की साँस पड़ने लगी। उसने चौंककर पीछे देखा। न, झूठमूठ का डर था। वहाँ कोई न था।

परेश फिर ध्यान के लिए बैठा। फर-फर आवाज करता हुआ कोई उसके सिर पर से उड़ गया। ओह, यह तो चमगादड़ है। चौंककर, बिजली के प्रकाश में उसे पहचानने में देर न लगी।

सरसराता हुआ साँप चला गया न ! अँधेरे में दिखायी नहीं देता। विक्षुब्ध हृदय से साधना कैसे की जाये ? परेश उठ खड़ा हुआ। अब उसके मन में डर समा गया। उसने डर दूर भगाने के लिए फिर माँ के नाम का जप करना शुरू किया। वह बार-बार योगिनी-स्त्रोत दुहराने लगा। परेश का

डर कुछ कम हुआ।

यह क्या, खोपड़ी में से बीच-बीच में रोशनी क्यों जल उठती है ? बिलकुल आँखों के कोटरों में यह चमक थी। परेश मन-ही-मन हँस पड़ा। दो जुगनू आँखों के कोटरों में आ बैठे थे। उनकी रोशनी रह-रहकर चमक उठती थी। दोनों जुगनू डरकर उड़ गये।

उधर जैसे दो आँखें दमक रही थीं। 'कौन है ? कौन ?' परेश चीख उठा। 'म्याऊँ' करके एक बिल्ली ने अपनी मौजूदगी जतलायी।

कौन कहता है कि श्मशान निःसंग होता है ? उल्लू, चमगादड़, स्यार, कुत्ते, बिल्ली, साँप, जुगनू—कितनी तरह के तो जीव हैं ! किसी कीड़े ने परेश के पैर में काटा। पैर जलने लगा। मन पैर की ओर गया।

परेश ने विक्षिप्त मन की बागडोर खींचनी चाही। टकटक, टकटक ! एक गिरगिट बोल रहा था। फिर भामिनी ! न, परेश साधना अवश्य पूरी करेगा। 'माँ,' 'माँ,' 'माँ,' 'माँ' !

सहसा आस-पास के पेड़ों की शाखाएँ हिलने लगीं। आँधी आ रही है क्या ? नदी में मानो गरज सुनायी पड़ रही हो, जैसे कोई भँवर सारे ब्रह्मांड को चक्कर दे रहा हो। आसमान उलटा पड़ रहा हो; तारे बिखर रहे हों। एक सफ़ेद मूर्ति परेश की ओर बढ़ी आ रही हो, जो ऊँचे-ऊँचे कह रही है : 'न,' 'न' ! मूर्ति कुछ भी सुन नहीं रही है, आ रही है, बढ़ती चली आ रही है। परेश का कलेजा डर से काँप उठा, गले से आवाज़ नहीं निकल पा रही। परेश लड़खड़ाकर खड़ा होने लगा। उसके सारे शरीर के चारों ओर जैसे हवा का भँवर मँडरा रहा हो, उसके मुँह-आँख-नाक में धूल के कण भर गये। परेश का मनोबल चूर-चूर हो गया। उसने भागने की कोशिश की। अँधेरे में भागते ही एक जली लकड़ी से पैर टकराकर वह गिर गया। इसके साथ ही बेहोश हो गया।

चक्कर खाती हुई हवा का एक झोंका उसके ऊपर से निकल गया। कुछ देर बाद ही ज़ोरों की वर्षा होने लगी।

सवेरे एक ग्वाले ने ज़मीन पर पड़ी परेश की देह को देखकर और पहचान-कर झटपट उसके घर खबर कर दी। कदम बुआ को साथ लेकर भागी-

भागी श्मशान आयी। साथ में कुछ पड़ोसी थे। कीचड़-पानी में सना शरीर लिये परेश औंधे मुंह पड़ा था। परेश की बड़ी बहन ने उसे मरा मानकर रोना शुरू कर किया। कदम ने उसे रुकने को कहकर पिता की देह को सीधा किया; छाती पर कान लगाकर सुना। न, कलेजे मे धडकन है। नाक पर हाथ लगाकर देखा, साँस चल रही है। पडोसी कह रहे थे कि ओझाजी की गरदन भूतों ने उमेठ दी है। परेश मे जीवन के लक्षण देखकर वे कुछ चुप हुए। पर श्मशान मे भूतों से बड़ी लड़ाई हुई है, इस सम्बन्ध मे किसी को संदेह न रहा।

कदम के कहने से परेश की संज्ञाहीन देह को बहुत-से आदमी उठाकर घर ले आये। कदम ने डरकर साधन को खबर दी। साधन फौरन चला आया। परेश की छाती और पीठ की जाँच की, नब्ज़ देखी; बोला, 'डरने की कोई बात नही लग रही है। पानी में भीगने से छाती सर्दी से जकड़ गयी है; लगता है कि कुछ देर मे होश आ जायेगा।'

डाक्टरी बैग मे से निकालकर साधन ने दवा दी। लेकिन कदम को पता था कि उसका पिता किसी भी तरह दवा नही खायेगा।

गाँव में खबर फैल गयी कि ओझा की गरदन भूतो ने मरोड दी है। इस बार तो वह किसी तरह बच गया है।

काफ़ी दिनों तक बीमारी भुगतकर परेश स्वस्थ हो गया। लोगों से भूतों के गरदन मरोड़ने की बात की कहानी सुनकर वह मन-ही-मन शंकित हुआ। ओझा पर ही अगर भूत हावी हो जायें तो ओझा किस तरह भूतों को बस में करेगा! भूत भगाने की परेश ने जो ख्याति पायी थी वह समाप्त हो गयी। परेश ने सोचा कि फिर नये सिरे से कुछ जादू दिखाकर सुयश को लौटा लाना होगा।

भामिनी, वह भामिनी और हरहरि ज़ोरों के साथ व्यभिचार करते जा रहे थे। लोगों से परेश को सुनने को मिला कि वे एक साथ नौका-विहार करते थे, जात्रा-गान की महफ़िल में बैठे रहते, मन्दिर मे पूजा कर आते। बस पर चढकर शहर घूमते। परेश मन-ही-मन ख़फ़ा होता रहता। समाज मर गया! शालीनता, सभ्यता, रीति-नीति सब चूर-चूर हो गये हैं! परेश निष्फल आक्रोश मे अपने को धिक्कारता रहता।

साधन परेश का इलाज करने आया था, लेकिन परेश ने उसे लौटा दिया। परेश अपना इलाज खुद करने लगा। अपना रोग दूर करने के लिए खुद ही मन्त्र पढने लगा। प्राकृतिक नियम से हो या मन की शक्ति से हो, परेश ठीक हो गया।

उसे लगा कि माँ काली उस पर अप्रसन्न हो गयी हैं। माँ को सन्तुष्ट करना पडेगा। आगामी अमावस्या पर एक बकरे के बच्चे की बलि देनी होगी। बच्चे को लक्षण-युक्त होना चाहिए। सहसा कदम के पाले हुए बकरी के बच्चे की उसे याद आयी। वह इतने दिनों में बड़ा हो गया है। उसके माथे पर काली बिन्दी है—यह शुभ लक्षण है। उसी पट्ठे की बलि देनी होगी।

एक दिन परेश ने कदम से पट्ठे को देने के लिए प्रस्ताव किया। कदम ने डरते हुए विरोध किया। कदम बोली, 'यह क्या, उसे मैंने पाल-पोसकर बडा किया है।'

'धत् बेटी, पाठा पाठा ही होता है, वह देवता या आदमी के काम के लिए है। वह पाठा मुझे दे दे।'

'दुनिया मे क्या और पाठा नही है ?'

'उसका-सा लक्षण वाला पाठा कहाँ मिलेगा ?'

'तुम तलाश कर लो।'

'न, मुझे तलाश करने की फ़ुरसत नही है। मुझे वही चाहिए।'

'मैं नहीं दूँगी।

'तो सुन हरामजादी, वह मेरा पाठा है। मुनीरुद्दीन ने मुझे दिया था। तू कैसे मुझे नही देगी ?'

'नही, नही दूँगी। पाठा मेरा है। मैंने उसे पाला-पोसा है।'

'देख, देगी या नही ?'

परेश आँगन में बँधे पाठे को खींच ले जाने के लिए भागा गया। कदम भी दौडकर उसे रोकने को गयी। क्रुद्ध परेश ने इतनी बडी लडकी के गाल पर जोर का थप्पड दे मारा। लडकी गिरकर रोने लगी। परेश उधर ध्यान न देकर पाठे की रस्सी पकड़कर खींचते-खींचते ले जाकर काली मन्दिर में जा पहुँचा।

जब रात को पाठे की बलि दी गयी तो परेश ने खून से लथपथ होकर नाचना शुरू किया। लेकिन एक आवाज़ कान में पड़ते ही उसका नाच अचानक रुक गया।

किसी ने उसे सुना-सुनाकर कहा, 'ओ हो, ओझाजी, इधर पाठा की बलि देकर खुश हो रहे हो, उधर भामिनी चुड़ैल के गर्भ रह गया है।'

भामिनी गर्भवती !

परेश के दिमाग में जैसे बिजली कौंध गयी। हरहरि और भामिनी सिर्फ़ प्रगट रूप से व्यभिचार कर रहे हों, वही नहीं; उनके अवैध सम्बन्ध का स्थायी प्रमाण जारज सन्तान के रूप में आ रहा है !

'किसने, किसने यह झूठ बात कही है ?' परेश गरज उठा।

जनता में से एक आदमी बोला, 'झूठ बात क्यों होगी, जी ? गर्भ के सारे लक्षण दिखायी दिये हैं। खोका डाक्टर ने परीक्षा करके बतलाया है कि भामिनी के बच्चा होगा।'

अध्याय : 6

दूसरे दिन सवेरे साधन मारने को तैयार होकर परेश के घर पहुंचा। परेश पहले तो अचम्भे में आ गया। मामला क्या है ? साधन-सा भले स्वभाव का लडका सहसा इतने आक्रोश मे आ जायेगा, पहले तो परेश सोच भी न सका। जब समझ में आया तो वह भी पलटकर तेज हो गया।

साधन भागा-भागा आया और ऊँचे स्वर से बोला, 'आपको क्या हासिल हो गया, परेश काका, कि इतनी बड़ी लड़की को आप मारते-पीटते हैं ?'

'मैंने लड़की को मारा, ठीक किया। तुम सफाई माँगने वाले कौन हो जी ?'

'मैं आप लोगो का भला चाहता हूँ। इसी से कहने आया हूँ। बिना माँ की लड़की, कुछ ममता चाहती है। उससे जब-तब आप गाली-गलौज किया करते हैं, और अब अन्त मे मारपीट भी शुरू कर दी।'

'ओ हो, ममता एकदम से उबल पड़ी है ! लड़की के लिए प्यार उमड आया है न ?'

'मुँह सभालकर बात करें। बाबा के दोस्त और कदम के पिता होने के नाते मैं आपको छोड़ नही दूंगा। पकड़कर मैं आपकी बूढी हड्डियाँ तोड डालूंगा।'

'बहुत धमकी दे रहा है ! हरामजादी ने शायद तुम्हें उकसा दिया

है। कहाँ है वह हरामजादी ?'

'क़दम मुंह खोलकर बोलने वाली लड़की नहीं थी। लेकिन आपकी गुंडई तो छिपी नही रहती। मैं खबर पाकर भागा आया हूँ। मैं किसी तरह अब बरदाश्त नही करूँगा।'

'क्यों नहीं करेगा, हरामज़ादे ?' परेश ने अब गाली-गलौज बकना शुरू कर दिया, 'लड़की का अभिभावक तू है कि मैं ?'

'कानून मत छाँटिये, आपकी लड़की बालिग है, उस पर हुक्म चलाने का आपका कोई हक़ नही है। कदम अगर अदालत नही जाती है, तो ज़रूरत हुई तो उसकी ओर से मैं अदालत जाऊँगा।'

'तू किस अधिकार से अदालत जायेगा ? तू क्या उसका मालिक है या अनब्याहा पति है ?'

'शराफत में बातचीत कीजिये,' साधन ने गरजकर चेताया, 'भले समाज में बड़ी लड़की की मारपीट करेंगे, और हम पड़ोसी लोग चुपचाप देखते रहेंगे, यह नहीं हो सकता।'

'हुह, भला समाज ! समाज मे भलमनसी है कहाँ ? यह जो आँख के आगे साफ-साफ व्यभिचार चालू है, उसे कोई बन्द कर सका है ? चुड़ैल के अब गर्भ भी रह गया। तूने ही तो रुपये लेकर जाँच करके बतलाया है। भलमनसी की दुहाई देने मे शर्म नही आती ?'

साधन अब उलटी चोट खाकर थोडा झिझका। वह बोला, 'मैं डाक्टर हूँ। रोगी की चिकित्सा करता हूँ। पाप-पुण्य का फैसला नही करता।'

'तो मेरा फ़ैसला किस हिम्मत पर करने आया है ? मैं भी ओझा हूँ, रोग भगाता हूँ, भूत-प्रेत भगाता हूँ, पाप से भी छुटकारा दिलाता हूँ।'

'यह सब आपका कुसंस्कार है।'

'कुसंस्कार ? आदमी जितने दिन भी था, है और रहेगा तब तक यह संस्कार भी था, है और रहेगा।'

'यही तो इस समाज का एक रोग है। खुशी की बात है कि आपकी लड़की इससे मुक्त है।'

'यही तो मुझे अफसोस है। वह अगर लड़का होती, तो मैं उसे सब मन्त्र-तन्त्र सिखा सकता था।'

'मैं आपका यह अफ़सोस दूर करने को तैयार हूँ। लड़की अगर आपको बोझा लग रही है, तो आप उसे मुझको दान कर दीजिये।'

'माने ? मैं उसे हारान की लड़की की तरह रखने के लिए तेरे हाथों दे दूँगा !'

'छीः छीः, क्या कह रहे हैं ? मैं उससे शादी करूँगा।'

'मेरी ज़िन्दगी रहते तो यह सम्भव नहीं।'

'क्यों, क्या मैं पात्र के हिसाब से ठीक नहीं हूँ ?'

'तू मेरा प्रतिद्वन्द्वी है। तेरे कारण लोग मुझसे आँखें चुराने लगे हैं। मैं तेरे हाथों कभी लड़की को न दूँगा।'

'तो आप आज से समझ रखिये कि आपकी लड़की से मैं ज़रूर ब्याह करूँगा। वह बहुत अच्छी है, फूल की तरह सुन्दर, बच्चे-सी सरल। इस शादी के लिए आपकी लड़की भी राज़ी है।'

'मेरी लड़की अगर मेरी राज़ी के बिना शादी करेगी, तो मैं समझ लूँगा कि वह मर गयी है—मर गयी है।'

'मैं उसे नये जीवन का रहस्य सिखलाऊँगा; वह अंधे कुसंस्कार के परिवेश से मुक्त हो जायेगी।'

'मेरे ज़िन्दा रहते नहीं। जा, मेरे सामने से दूर भाग जा !' परेश ने अकड़कर कहा।

साधन क्षण-भर भी न रुका, चला गया।

परेश कदम के कमरे में गया। कदम चारपाई पर गुम होकर बैठी थी, साफ़ समझ में आया कि परेश और साधन की बातें उसने सुनी थीं। उसने कुछ न कहा। परेश बिलकुल शान्त होकर बोला, 'तू ख़फ़ा है, बेटी ! गुस्से की तो बात ही है। मैं ख़राब आदमी हूँ, जब-तब जो मन चाहे, कहता रहता हूँ। जो चाहे करता रहता हूँ।'

कदम की आँखें छलछला आयीं।

'तू मुझे माफ़ कर दे, बेटी ! मैं तुझे दूसरा अच्छा-सा बकरी का बच्चा ला दूँगा। कल संहरा के बाजार का दिन है। कल ही ला दूँगा।'

कदम ने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन परेश जैसे अपने, श्री

बोला : 'क्रोध चांडाल होता है। मेरे दिमाग़ में जब गुस्सा चढ़ जाता है, तो मैं अपने बस मे नही रहता, बेटी ! तू मुझे माफ़ कर दे। काम, क्रोध और मेरे सारे दुश्मन मेरे दिमाग पर हमला कर देते है, मैं उन्हें वस मे रखने की कोशिश करता हूँ, लेकिन हमेशा कर नहीं पाता। यही मेरी कमज़ोरी है, इतनी ही मेरी कमज़ोरी है।'

यह कहते-कहते परेश धीमी चाल से कमरे से निकल आया।

'मैं आपका यह अफसोस दूर करने को तैयार हूँ। लड़की अगर आपको बोझा लग रही है, तो आप उसे मुझको दान कर दीजिये।'

'माने ? मैं उसे हारान की लड़की की तरह रखने के लिए तेरे हाथों दे दूँगा !'

'छी: छी:, क्या कह रहे हैं ? मैं उससे शादी करूँगा।'

'मेरी जिन्दगी रहते तो यह सम्भव नही।'

'क्यों, क्या मैं पात्र के हिसाब से ठीक नही हूँ ?'

'तू मेरा प्रतिद्वन्द्वी है। तेरे कारण लोग मुझसे आँखें चुराने लगे है। मैं तेरे हाथो कभी लड़की को न दूँगा।'

'तो आप आज से समझ रखिये कि आपकी लड़की से मैं जरूर ब्याह करूँगा। वह बहुत अच्छी है, फूल की तरह सुन्दर, बच्चे-सी सरल। इस शादी के लिए आपकी लड़की भी राजी है।'

'मेरी लड़की अगर मेरी राजी के बिना शादी करेगी, तो मैं समझ लूँगा कि वह मर गयी है—मर गयी है।'

'मैं उसे नये जीवन का रहस्य सिखलाऊँगा; वह अंधे कुसंस्कार के परिवेश से मुक्त हो जायेगी।'

'मेरे जिन्दा रहते नही। जा, मेरे सामने से दूर भाग जा !' परेश ने अकड़कर कहा।

साधन क्षण-भर भी न रुका, चला गया।

परेश कदम के कमरे में गया। कदम चारपाई पर गुम होकर बैठी थी, साफ समझ मे आया कि परेश और साधन की बातें उसने सुनी थी। उसने कुछ न कहा। परेश बिलकुल शान्त होकर बोला, 'तू खफ़ा है, बेटी ! गुस्से की तो बात ही है। मैं खराब आदमी हूँ, जब-तब जो मन चाहे, कहता रहता हूँ। जो चाहे करता रहता हूँ।'

कदम की आँखें छलछला आयी।

'तू मुझे माफ़ कर दे, बेटी ! मैं तुझे दूसरा अच्छा-सा बकरी का बच्चा ला दूँगा। कल सहरा के बाजार का दिन है। कल ही ला दूँगा।'

कदम ने कोई जवाब नही दिया। लेकिन परेश जैसे अपने से ही

बोला : 'क्रोध चांडाल होता है। मेरे दिमाग मे जब गुस्सा चढ़ जाता है, तो मैं अपने बस में नहीं रहता, बेटी ! तू मुझे माफ कर दे। काम, क्रोध और मेरे सारे दुश्मन मेरे दिमाग पर हमला कर देते हैं, मैं उन्हें बस में रखने की कोशिश करता हूँ, लेकिन हमेशा कर नहीं पाता। यही मेरी कमजोरी है, इतनी ही मेरी कमज़ोरी है।'

यह कहते-कहते परेश धीमी चाल से कमरे से निकल आया।

अध्याय : 7

परेश अपनी प्रतिष्ठा को पाने के लिए फिर से कोशिश में जी-जान में जुट गया। गरीबों से बिना दक्षिणा के रोग का निदान और इलाज करने की व्यवस्था की। किसान, मजूर और मछुआरों से उसको बुलावे आने लगे। दूर के गाँवों में उसने फिर नये सिरे से आना-जाना शुरू किया। भूतों का मिलना मानो आजकल कम हो गया था। शायद गाँव में बिजली-बत्ती के आने के बाद से भूत छिप गये थे! फिर भी, एक जुलाहे के घर औरत को भूत ने पकड़ लिया था। बहुत दिनो बाद भूत का इलाज करके उसका आत्म-विश्वास मानो लौट आया। भाग्य से सहरा के हाट के फकीर-साहब ने उसे इस्लामी मन्त्र सिखा दिये थे। वह मुसलमानों के घरों में काम आते थे। उन हिस्सों में परेश की प्रसिद्धि बढने लगी।

लेकिन भामिनी के मामले को लेकर वह अपने निकट ही छोटा पड़ गया था। उसने एक बार कुछ लोगों के आगे अकड़कर कहा था, 'मैं परेश पात्तर हूँ। डरने वाला नहीं हूँ, मैं यह पाप का किस्सा किसी तरह नहीं चलने दूंगा।'

लेकिन हुआ क्या? पाप तो चलता ही है; सिर्फ वही नहीं, पाप के बच्चे-कच्चे भी होने लगे! एक जारज सन्तान पैदा होने को है, और पाप की वंशवृद्धि! न, परेश वह नहीं होने देगा। परेश जारज सन्तान को पैदा न होने देगा। परेश ऐसा मन्त्र-बाण मारेगा जिससे कि पैदा होने के पहले

ही भ्रूण नष्ट हो जाये !

परेश ने लोगों से सुना कि हरहरि भी कुछ वैसा ही चाहता है। उसने भामिनी से पेट की सन्तान नष्ट करने को कहा था, लेकिन भामिनी तैयार न हुई। उसने जोर देकर उत्तर दिया कि वह बच्चा चाहती है; वह माँ बनना चाहती है। इस पर हरहरि और भामिनी मे झगडा भी बढ गया। तीन रात भामिनी ने हरहरि को कमरे मे घुसने नही दिया। ये सारी घरेलू बातें भी क्या गाँव मे छिपी रहती हैं ? परेश के कानों मे भी घूम-फिरकर वे आ पहुँची। आखिर मे इस मामले में परेश ने हरहरि की तारीफ की।

एक दिन अकेला पाकर हरहरि ने ही परेश को पकड़ा।

'चुड़ैल नरमी पाकर सिर पर ही चढ बैठी है, परेश भाई,' हरहरि ने दबी जबान मे कहा।

'तो यह सब मुझे क्यो सुना रहे हो ?' परेश ने कहा।

'बताओ तो, तुम्हारे सिवा यह सब कौन समझेगा ?' हरहरि बोला, 'तुम्ही तो शुरू से इस मामले मे विरोधी थे।'

'अब भी हूँ। तुम उस चुड़ैल को छोड़ दो।'

'मैं तो छोडना चाहता हूँ, लेकिन वह ऐसा नहीं चाहती।'

परेश खुश हो गया। 'जय माँ, माँ', परेश ने मन-ही-मन कहा, 'होगा बाबा, मेरी इतने दिनों की प्रार्थना कुछ सफल होने लगी है। हरहरि के मन में दरार पडी है।'

परेश ने हिम्मत से कहा, 'वह न चाहे, तुम क्या उस चुड़ैल के भड़ुए हो ? भगाओ उस औरत और उसके बच्चे को।'

'पता है, वह साली क्या कहती है ? मुकदमा कर देगी। रोटी-कपड़े का दावा करेगी। सिर्फ अपने लिए ही नही, पेट के बच्चे के लिए भी।'

'उसे इतनी हिम्मत कहाँ से आ गयी ?'

'तुम्हारा वही खोका-डाक्टर। वह साला ही मदद कर रहा है, हिम्मत बँधा रहा है। किस बुरी साइत में उसे जाँच करने को बुलाया था। चुड़ैल ने छिपकर उससे सब-कुछ बता दिया है। डाक्टर है, या कलकत्ता

के किसी वकील साहब ने सलाह-मशवरा भी दे दिया है। रखैल का क्या रोटी-कपडे का अधिकार होता है, वह भी सिर्फ़ अपने लिए नही, सन्तान के लिए भी ? देखो तो भैया, किस मुसीबत मे पड़ गया हूँ ! इस बुढ़ापे में छल-बल मे भूलकर एक दम फांस लिया गया। अब ज़िन्दगी-भर के लिए खाने-कपडे का बोझा ढोते रहना पडेगा ! वकील साहब ने कहा है कि दासी-पुत्र के लिए भी कुछ भाग रहता है। मेरे लड़के-लड़कियों ने अब तक कुछ नही कहा था। लेकिन एक जारज सन्तान के लिए सम्पत्ति में उनका भाग कम हो जायेगा, यह सोचकर वे सब घबड़ा गये हैं। मेरे कमरे मे धरना दिये हुए है।'

'तुमसे मणि मुख्तार ने क्या कहा है ?'

'कहते है कि वकील साहब की सलाह ठीक ही है। वसीयत करने पर हिस्सा दिये बिना भी चलेगा, लेकिन खाने-कपड़े का दावा तो हटाया नही जा सकता।'

'चुड़ैल की मुकदमा लडने की हिम्मत है ?'

'क्यों नही है परेश भैया, सारा खर्च तो मेरे सिर आयेगा। इसीलिए उसकी ओर से लड़ने के लिए वकील-मुख्तारों की कमी न होगी।'

'अब क्या करोगे ?'

'वही तो सोचता हूँ। मणि मुख्तार का कहना है कि वह अगर बद-चलन होती तो उसका दावा खारिज हो जाता। लेकिन अपने कमरे के सिवा वह और कही नही आती-जाती। किसी भी लडके या छोकरे की ओर नजर नही डालती। मुझे एक मुलायम-सा चारा पा लिया—जब तक हो सके, चूसेगी। मैं तो बुढ्ढा हूँ नही, खाना-कपड़ा जब देना पडेगा तो *मैं इंद्रिय-सुख का पूरा-पूरा भोग किये ले रहा हूँ, भैया।*'

'तो मुझे इतनी बातें बताने क्यो आये हो ?' परेश ने पूछा।

'तुम तो बहुत तरह के तन्त्र-मन्त्र जानते हो। तुम कुछ ऐसा करो जिससे कि कम-से-कम वह पेट का बच्चा गिर जाये। चुड़ैल कई दिनों से मुझे पास नही फटकने दे रही है।'

परेश का मन खुश हुआ। उसने खुद बाण मारने की बात सोची थी। अब शायद परेश की अलौकिक शक्ति के प्रभाव से खुद हरहरि यह

प्रस्ताव लेकर आया है।

परेश अकड़कर बोला, 'क्या यह मामूली काम मैं न कर सकूंगा ? सिर्फ घर पर बैठे-बैठे क्रिया-कर्म करूँगा और चुड़ैल के पेट का बच्चा गिर जायेगा।'

'शाबाश परेश-दा,' हरिहर बोला, 'यह अगर कर सको तो मैं तुम्हें खुश कर दूंगा। चुड़ैल को सबक मिलेगा। मुझे बहकाकर काँटे मे फाँसने का हरजाना तो भरे!'

परेश ने अपना वाण चलाने की विद्या के प्रयोग का इन्तज़ाम शुरू किया। उसने अपने हाथों से एक बडी-सी मिट्टी की मूर्ति बनायी। उसको मूर्ति कहना तो गलत होगा, वह एक शरीर-हीन आकृति थी। हाँ, देखने से समझ में आता था कि वह एक बच्चे वाली स्त्री का प्रतीक जान पड़ती थी। उसकी दोनों छातियाँ अस्वाभाविक रूप से बडी थी, जैसे उसके दूध उतर आया हो। पेट उनसे भी अधिक बड़ा था। देखने पर लगता था कि वह किसी आदिकाल के प्रागैतिहासिक मनुष्य की बनायी प्रतिकृति हो—आदर्श लक्षणों मे युक्त कोई प्रतिमा हो। प्रतिमा की मिट्टी उस समय भी मुलायम थी।

परेश ने उस मिट्टी की प्रतिमा को पूजा-घर में छिन्न-मस्ता के आगे स्थापित कर उसके पेट पर सिंदूर लगाया। अचानक देखने से लगता था कि पेट से खून बह रहा है। फूल-बेल-पत्रो से उस प्रतिमा को लगभग ढँक दिया, उसके बाद इष्टमन्त्र का जप कर भामिनी के भ्रूण की हत्या की कामना करने लगा। साथ-ही-साथ पतली-पतली बाँस की सलाइयाँ प्रतिमा के कच्ची मिट्टी के पेट में घुसेड़ने लगा। एक-एक वाण की प्रतीक वे सलाइयाँ प्रतिमा के पेट में बेधकर भ्रूण के नाश की कामना करता रहा। एक पैशाचिक हँसी से परेश का मन भर उठा!

सहसा कुछ आवाज़ होने से उसके काम में बाधा पड़ी। परेश ने पीछे घूमकर देखा और चौंक गया। कमरे में अप्रत्याशित भाव से भामिनी और हारान आ पहुँचे थे।

हारान बोला, 'लड़की ने किसी तरह बात न सुनी, ओझाजी ! जबर्दस्ती मुझे तुम्हारे पास पकड़ लायी है।'

भामिनी की शकल बहुत बदल गयी थी; उसका शरीर बहुत भारी हो गया था। आँखें धँस गयी थीं और उनके चारों ओर काला घेरा पड़ गया था। दोनों स्तन और भी बड़े हो गये थे। पेट उदरस्थ सन्तान के कारण फूल आया था। भामिनी का यह रूप परेश ने समीप से नहीं देखा था। इतना-सा ही रास्ता चलकर भामिनी बहुत हाँफ रही थी।

परेश ने पूछा, 'तुम लोगों ने क्या सोचा है ? क्यों मेरे पूजा-पाठ में विघ्न करने आयी है ? जा जा, अशुचि, पापिनी !'

भामिनी ने दृढ़ कंठ से पूछा, 'तुम क्या मेरी सन्तान की बाण से हत्या करने के लिए बैठे हो, ओझाजी ?'

'किसने कहा ? किसने चुगली खायी ?'

'मेरे बाबू ने कहा है...।'

'हरबाबू ने ? झूठ बात है।'

'कल रात शराब पीकर वह मेरे घर आया था। मुझे पकड़ने चला तो मैं पकड़ में नहीं आयी। अब वह सब नहीं होगा। डाक्टर बाबू ने कहा है कि अब वह सब करने से पेट के बच्चे के लिए खतरा हो सकता है। आदमी बोला कि तेरे पेट का बच्चा तो बहरहाल गिर ही जायेगा; ओझा से बाण चलाने की व्यवस्था कर आया हूँ। कहा कि परेश ओझा के हाथों में यश है। बाबू को कमरे से लात मारकर भगाकर रात-भर मैं कितना रोयी हूँ ! बतलाओ, तुम सचमुच बतलाओ, ओझा ठाकुर ! तुम बच्चे की हत्या करोगे ?'

'हाँ।'

'क्यों ? क्यों ?'

'तू पापरूपा है। तेरे पेट की सन्तान और भी बड़ा पाप है।'

'न, न, वह तो अभी पैदा भी नहीं हुआ है। उसे पापी मत कहो। मैंने तुम्हारी मान-हानि की है। उसने तो कोई अपराध नहीं किया।'

परेश का मन थोड़ा विचलित हुआ। लेकिन दूसरे ही क्षण उसने मन को पक्का कर लिया। बोला, 'मैं वह सब-कुछ नहीं सुनूँगा। उस सब छिनाल-पन का मुझे पता है। तू पापी है, तेरा बेटा पाप का फल है। उसे मैं खत्म करूँगा। यह एक और बाण मार रहा हूँ।'

यह कहकर परेश ने एक और तीली लेकर सामने की मिट्टी की प्रतिमा के पेट को ज़ोर से छेदा। भामिनी ने डर के मारे अपना पेट दाब लिया। अपने पेट की सन्तान की रक्षा करने के लिए वह छटपटाने लगी।

तब वह क्रुद्ध नागिन की तरह फुफकार उठी, 'ओह, तुम्हारी हिम्मत तो कम नहीं है! तुम मेरे पेट का बच्चा छीन लोगे? तुम मेरे बच्चे को बाण मारकर हत्या करोगे? दिखाऊँ मजा?'

पलक झपकते भामिनी ने झपटकर मंत्र-सिद्ध मिट्टी की प्रतिमा को ज़ोरों से डंडा मारा। वह उलटकर टेढ़ी-मेढ़ी हो गयी। भामिनी ने हाथों से ज़ोरों के साथ छिन्नमस्ता मूर्ति को भी खींचकर मारा; वह धाँय-से उलट गयी। वह काली की मूर्ति को भी फेंकने जा रही थी, लेकिन उसके आगे जाकर ठिठककर खड़ी हो गयी। भामिनी चीखकर बोली, 'हे माँ काली, हे माँ काली, तू अगर सचमुच संसार की माँ है, तो एक माँ का दु:ख क्या तू नहीं समझेगी, नहीं समझेगी?'

चीखकर रोते-रोते भामिनी कमरे से भागकर निकल गयी।

कुछ देर तक पूजा-घर में असीम चुप्पी छायी रही। भामिनी के इस अप्रत्याशित व्यवहार से परेश और हारान, दोनों ही बुत बने खड़े रहे। कुछ देर बाद हारान ही बोला, 'लड़की के दिमाग का ठीक नहीं; तुम उसे माफ कर दो, ओझा ठाकुर!'

परेश गम्भीर होकर बोला, 'क्षमा? मैं कहता हूँ हारान, मैं अगर परेश पात्तर हूँ तो आज से तीन दिन में मैं उसके पेट का पाप उखाड़ ही डालूँगा।'

हारान ज़ोरों से रोकर परेश के पैर पकड़ने जा रहा था। परेश ने उसे पैरों से ढकेलकर घर से बाहर निकाल दिया।

मात्र तीन दिन का समय ! इतने बड़े अपमान का बदला लेना ही होगा ! भामिनी अगर शान्ति से रह सके, तो परेश का ही भविष्य अंधकारमय था। तीन दिन---मात्र तीन दिन का समय ! कोई-न-कोई उपाय ढूंढ निकालना ही होगा। उपाय की तलाश में परेश पागल की तरह सड़कों पर घूमने लगा। रात को भी उसे नींद न आयी। एक रात निकल गयी; प्रतिज्ञा का समय संक्षिप्त होता जा रहा है। 'माँ, माँ—कोई उपाय बता दे, माँ !' सपने मे एक तरकीब परेश के दिमाग मे कौंध गयी। दूसरी रात, वह रात परेश की चरम परीक्षा की थी।

परेश सबकी निगाहे बचाकर भामिनी के घर के आस-पास चक्कर लगाने लगा, जिस तरह बाघ बड़ी सतर्कता से शिकार की तलाश मे घूमता है। पोखरे के घाट की ओर ही उसकी नजर थी। उसी घाट पर खड़ी होकर भामिनी ने एक दिन हँसी में लोटपोट होकर सबके सामने उसका अपमान किया था। सीढ़ियाँ मानो सीधी खड़ी है। पोखरे मे पानी कम था, इसी-लिए बहुत-सी सीढ़ियाँ दिखायी देने लगी हैं। पोखरे के किनारे गिद्धों के बैठने का नारियल का पेड़ तो है, लेकिन उसका पहले-सा रूप नही है। उसके पत्ते झड़ गये थे। बिलकुल बिजली से जले पेड़ की तरह सिर्फ उसकी चोटी आसमान फोड़कर शूल की तरह उठी हुई थी। उसके नीचे घनी झाड़ियाँ थी। परेश ने जमीन को अच्छी तरह देखकर मन-ही-मन ठीक कर लिया, जिससे कि अँधेरे मे भी उसके चलने-फिरने मे दिक्कत न हो।

उस रात को भामिनी हमेशा की तरह अपनी कुटिया से निकली। यह उसकी बहुत दिनों की आदत थी। रात में पोखरे मे पानी से शौच किये बिना उसका शरीर घिनघिनाता रहता था। ताजे पानी से देह शुद्ध लगती थी। इस वक्त उसके हाथ मे लालटेन नहीं थी। हरहरि ने उसे एक अच्छी-सी टॉर्च दी थी। उसी को लेकर वह निकली थी। साधन डाक्टर ने उसे सावधानी से चलने-फिरने को कहा था। भामिनी काफी सावधानी बरतती थी। *असल बात यह थी कि पेट की सन्तान इतनी भारी हो गयी थी* कि वह अच्छी तरह चल-फिर ही नही पाती थी। इसी से भामिनी थप-थप कर घाट की सीढ़ियाँ उतरकर नीचे पहुँची। जल्दी नही की। उसने

पहले शौच निवटाया। रात मे पानी मानो ज्यादा ठंडा लग रहा था। सारा शरीर ठंडा हो रहा था। अब लौटने की वारी थी। भामिनी साव-धानी से टॉर्च की रोशनी में सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने लगी।

कुछ खस-खस आवाज़ सुनायी दी। आवाज़ गिद्धो वाले मरे नारियल के नीचे झाडियों मे से आ रही थी। शायद कुत्ता, बिल्ली या जंगली बिल्ली हो सकती है! भामिनी ने थोड़ा डरकर जानवर को भगाने के लिए 'हुश' 'हुश' की आवाज की। फिर आवाज़ न हुई।

अचानक धप्-से एक और आवाज़ बिलकुल घाट की खड़ी सीढ़ियों के सिरे पर हुई। भामिनी ने आवाज की ओर लक्ष्य कर टॉर्च की रोशनी फेंकी। रोशनी पड़ते ही धक्-से भामिनी का कलेजा चौंक गया। घाट के सिरे पर एक बडा भारी नर-कंकाल खडा था। टॉर्च की रोशनी मे नर-कंकाल साफ दिखायी पड रहा था। उसके सफेद धुंधले दाँत मानो किट-किटाकर चबा जाने को आ रहे हो! उसके पतले-पतले हाथ मानो उसे पकड़ने को बढ़ रहे हों!

भामिनी के पैर सीढ़ी से चिपक गये। सामने बढ़ने का साधन नही था। सामने नर-कंकाल जो था। पीछे पोखरा था। भामिनी जाये तो किधर जाये? वह ज़ोरो से चीखकर सिर के बल गिर पड़ी। सीढ़ियों पर से उसका बेहोश शरीर टकराता-टकराता लुढ़कने लगा। हाथ की टॉर्च किनारे पर गिर, टूटकर बुझ गयी। भामिनी का आधा शरीर पानी में डूब गया। चारों ओर का अँधेरा गहरा गया।

भामिनी की चीख से उसके माँ-बाप की नीद टूट गयी। उन्होंने उठकर लड़की का नाम ले-लेकर पुकारना शुरू किया। लालटेन जलाकर उसके कमरे मे उसे खोजा। उसे कमरे में न पाकर नाम लेकर पुकारते-पुकारते इधर-उधर तलाशने लगे। उसकी माँ तारिणी को पोखरे के पानी में भामिनी का आधा डूबा हुआ शरीर दिखायी दिया। तारिणी चीख पड़ी। उसकी आवाज़ से आस-पास के लोगों की नीद भी टूट गयी। कोई टॉर्च, कोई लालटेन लिये हारान मंडल के घर पर आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि तारिणी लड़की की देह से चिपटकर रो रही है। हारान उसे जितना ही

शान्त करता, तारिणी उतना ही चीखती-चिल्लाती। हलकी रोशनी में दिखायी दिया कि खून से घाट भरा पड़ा है। भामिनी के कपड़ों में भी ताजा खून लगा था; तालाब का पानी भी लाल हो गया था।

हारान बोला, 'वह मरी नहीं है, जिन्दा है, क्या कह रही है ?'

उन लोगों ने भामिनी की खून से लथपथ देह घाट के ऊपर लाकर रखी। जिन लोगों ने उसको उठाया था उन लोगों का बदन भी खून से भर गया था। किसी एक ने समझ की बात की और भागकर साधन डाक्टर को खबर दे दी। साधन देरी न कर, जैसा बैठा था वैसे ही भागा आया। भीड़ को हटाकर साधन ने भामिनी की नब्ज़ देखी; यन्त्र से छाती और पीठ को भी जाँचा।

भामिनी को होश नहीं था, लेकिन वह कुछ बड़बड़ा रही थी। भामिनी के विलाप के बीच साधन जो अस्फुट बात समझ सका, वह थे केवल कुछ शब्द : 'भू...त, भू...त...जीता...मु...र्दा। कं...काल !'

साधन ने भामिनी को होश में लाने की बहुत कोशिश की, लेकिन होश नहीं आ रहा था। भामिनी का खून बहना भी बन्द नहीं हो रहा था। इस रात में उसे अस्पताल या नर्सिंग होम में पहुँचाने के लिए कोई सवारी भी नहीं थी। कुछ देर बाद उसने तारिणी की गोद में अन्तिम साँस ली। साधन ने एक असहाय दर्शक की तरह उसे मरते देखा।

अध्याय : 8

उसी रात को गाँव के एक और घर में एक और नाटक हो रहा था। कदम घर में अकेली थी। पिता अभी घर लौटे नहीं थे। ऐसा अवसर ही होता था। बुआ किसी काम से दो दिन के लिए ससुराल गयी थी। उसके देवर का लड़का आकर उसे ले गया था। देवर के बेटे का अन्नप्राशन संस्कार था। ताई को जाकर काम करना होगा। कदम पूरे घर में अकेली थी। लेकिन कदम डरती नहीं थी। वह भूत-प्रेत में बिलकुल विश्वास नहीं करती थी। खतरा उसे चोर, उचक्कों, बदमाशों से था। खा-पीकर जल्दी ही बिस्तर पर लेट गयी थी। उसके पिता 'खाना नहीं है', कहकर शाम के पहले ही निकल गये थे; कह गये थे कि आज रात को वह नहीं भी लौट सकते हैं!

कदम को नींद नहीं आ रही थी। उसकी अन्तिम परीक्षा निकट आ गयी थी। पढ़ाई की बात दिमाग में घूम रही थी। साधन-दा ने कहा था कि कदम अगर परीक्षा में अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण हो सके तभी उसे डाक्टरी पढ़ने का मौका मिलेगा। इसीलिए कदम ने उठकर पढ़ना-लिखना शुरू कर दिया था। वह सब फ़िकर तो दिमाग़ में थी ही। उस पर कल भामिनी आकर जो कुछ कर गयी, वह बात भी याद आने लगी। कदम उस वक़्त स्कूल में थी। उसने लौटकर देखा कि पिता का ठाकुरद्वारा उलटा-पलटा पड़ा है; भामिनी आकर मूर्ति तोड़ गयी है। कदम भामिनी

पर मन-ही-मन बहुत ही नाराज़ हो गयी थी। कदम ने अपने हाथो ठाकुर-द्वारे को फिर से साफ-सुथरा कर दिया। छिन्नमस्ता की मूर्ति टुकड़े-टुकडे नही हुई थी। जिस हाथ में माता का सिर था, केवल वही हाथ टूट गया था। मूर्ति मे बहुत जगह से रंग उखड़ गया था। पिता कह गये थे कि मूर्ति का विसर्जन कर फिर से नयी मूर्ति बनवायेंगे।

बहुत कोशिश करने पर भी कदम सो न सकी। कुछ ऊँघ-सी आ रही थी कि अचानक बाहर खट्-से आवाज़ होने पर वह 'कौन' 'कौन' कर उठी। तो क्या बाबा आ गये? लेकिन बाबा आते तो उसकी आवाज़ का ज़रूर जवाब देते, कहते, 'मैं हूँ, मैं'। बाबा की आवाज़ सुनकर उन्हें वह पहचान भी जाती। ऐसा तो बहुत बार हुआ है।

जवाब न पाकर कदम को डर लगा। उसने टॉर्च जलाकर खिड़की से एक अस्वाभाविक दृश्य देखा। देखा कि एक नर-कंकाल भागा-भागा पोखरे के घाट की ओर जा रहा है। वह चिल्ला पड़ी, 'चोर, चोर!'

कंकाल भागा हुआ उसकी खिड़की के पास आकर दबी आवाज़ मे बोला, 'अरे चुप रह, कहता हूँ चुप रह; बिलकुल शोर न करना।'

गला बैठाया हुआ होने पर भी आवाज़ तो कदम ने पहचान ही ली थी। वह ताज्जुब मे आकर बोली, 'बाबा?'

'हाँ, एकदम चुप।'

'तुम बदन और मुँह पर चूना पोतकर कंकाल क्यों बने हो?'

'है, कारण है। यह मेरी नयी तरह की साधना है।'

'कैसी विचित्र साधना है?'

'यह सब तू नही समझेगी। बिलकुल चुप रह। मेरी इस साधना की बात, खबरदार, किसी से कहना नही। और तो और, खोका-डाक्टर से भी नही।'

'मेरी कहने की उमर गयी।'

'तू सो जा। पोखरे मे डुबकी लगाकर चूने का यह रंग धो आऊँ। अपनी साधना का पारण कर आऊँ।'

स्नान किया, पर मन का मैल न धुला—न परेश का, न कदम का।

घडी में टन-टन कर तीन बजे।

अध्याय : 9

भामिनी की अस्वाभाविक मृत्यु को लेकर दूसरे दिन सवेरे से गाँव मे चर्चा चलने लगी। तरह-तरह के लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। खबर थाने के दारोगा के कान तक पहुँची। थाने के बड़े बाबू एक सिपाही को लेकर वहाँ आ पहुँचे। साथ में हरहरि, मुख्तार और दूसरे भी बहुत-से लोग थे। थाने के बड़े बाबू ने साधन डाक्टर को भी बुलवा भेजा। यह मौत अस्वाभाविक थी, इसीलिए सब तथ्य जमा करना होंगे। जिसकी जो राय हुई वह कह रहा था। हारान बोला, 'बड़े बाबू, यह ओझा ठाकुर की करतूत है। उन्होंने धमकाया था कि तीन दिन में उसके पेट का पाप जरूर उखाड़ फेंकूँगा। उन्होंने मेरे कलेजे का पंजर उखाड़ फेंका है, बड़े बाबू !'

हारान 'हाय-हाय' कर रोने लगा।

तारिणी ने रोने की आवाज ऊँची कर जो कहा, उससे बहुत मुश्किल से समझ मे आया कि ओझाजी क्यों मारेंगे, उसी खूसट थाने हरहरि ने मारा है। आजकल उनमे मेल-जोल न था। यह खूसट अब रुपया-पैसा भी नही देता था। इधर भामिनी ने उसे अपने कमरे से भगा दिया था। उसी ने लड़की को ढकेला होगा।

हरहरि ने आँसू पोंछने का बहाना किया। 'यह चुड़ैल झूठमूठ और भी रुपये वसूलने के चक्कर में झूठा दोषारोपण कर रही है। मेरा जो कलेजा चला गया, उसे यह औरत कैसे समझ सकेगी ?'

साधन डाक्टर बोले, 'मरने के पहले लडकी वड़बड़ा रही थी, 'भूत, भूत, ज़िन्दा लाश का कंकाल'। न, गला घोटने का कोई निशान नही है, नही तो गले मे खून जमा होने का दाग होता। लगता है कि एकाएक डरकर गिर जाने से और चोट लगकर बहुत खून के बह जाने से वह मर गयी है।'

हरहरि ने मानो कातर भाव से पूछा, 'और मेरी सन्तान ?'

साधन गम्भीर स्वर में बोला, 'अब वह नही होगी। माँ-बेटा आपका बहुत-सा रुपया बचा गये !'

'यह सब क्या कह रहे है, साधन डाक्टर ?' हरहरि बच्चों की तरह रोने लगा।

साधन डाँटकर बोला, 'बस कीजिये, अब नक़ली आँसू मत बहाइये।'

'उसके मतलब ?'

'बनाकर रोने की क्या ज़रूरत है ?'

मणि मुख्तार ने डर दिखाया, 'मुँह संभालकर बात करो, डाक्टर ! इतने अफ़सोस का वक़्त है, नही तो हरबाबू तुम्हारे खिलाफ मानहानि का एक मुकदमा ठोंक देते।'

बडे बाबू तरह-तरह के लोगों की तरह-तरह की बातें सुनकर बोले, 'यह अस्वाभाविक मृत्यु होने से लगता है कि पोस्टमार्टम की जाँच के लिए लाश भेजनी पडेगी।'

हारान जोरों से रोकर बोल पड़ा, 'तो क्या लाश की चीर-फाड़ होगी ?'

'होगी ही,' बडे बाबू बिगड़कर बोले, 'इतने आदमी इतनी तरह की बातें कर रहे हैं। इस लाश को इसी तरह छोडकर क्या मैं नौकरी से हाथ धोऊँगा ?'

तारिणी बोली, 'ए बड़े बाबू, आपके पैरों पड़ती हूँ। मुर्दे पर और तलवार तो मत चलाओ।'

चीर-फाड़ द्वारा जाँच होगी या नही, इस पर बडी देर तक सोच-विचार हुआ। अन्त मे दारोगा बोले, 'डाक्टर दास अगर अपनी ज़िम्मेदारी पर अच्छा-सा डेथ सर्टिफिकेट दें, तो मैं लाश को छोड़ सकता हूँ।'

हरहरि साधन को मोटी-सी फीस देने चला। साधन ने नफ़रत से उसे

मना कर दिया। आसन्न प्रसवा के गिरकर खून बहने से मौत हुई है।

ये सब बातें समाप्त होते-होते काफी वक्त बीत गया। अब दाहकर्म का इन्तजाम होना था। तारिणी किसी तरह मृतदेह छोड़ना नहीं चाहती थी। हारान भी शोक में टूटा पड़ा था। हरहरि घाट का सारा खर्च देगा। जिस तरह भी हो एक अच्छी खाट मँगाना होगी। और फूल। लेकिन तारिणी बिगड पड़ी। बोली, 'नहीं, अब और अधर्म का पैसा नहीं चाहिए, वह गरीब घर की लड़की थी, मूंज की खटिया पर जायेगी। वह विधवा थी। विधवा के रूप में ही चिता पर चढ़ेगी।'

फिर भी हरहरि ने श्मशान जाने वाले युवकों के हाथों पर बड़ी मोटी रकम रख दी। उन्होंने खुश होकर शराबखाने से शराब की बोतल मँगायी। रात को तलब अच्छी जमेगी। सब निपटाकर रात के पहले क्या लाश लेकर जाया जाता है ?

अध्याय : 10

भामिनी की आकस्मिक मृत्यु की खबर सुनकर व्याकुल हृदय से कदम उसे आखिरी बार देखने आ रही थी। उस समय जरूर बहुत देर हो गयी थी। कदम का मन बहुत खराब हो रहा था। हजार हो, लड़की उसके बचपन की खेल की साथिन थी। हो सकता है, वह इस समय बुरी राह पड गयी हो। कदम ने सोचा कि एक बार अन्तिम भेंट कर उसके माँ-बाप तक अपनी संवेदना पहुँचा आये।

बाँध की राह पकड़कर वह जब भामिनी के घर की ओर जा रही थी, साधन उधर से लौटकर आ रहा था। कदम उसे देखकर जिज्ञासु दृष्टि से खड़ी हो गयी।

साधन बोला, 'लड़की का सब खत्म हो गया। उसे बचा नही सका। अस्पताल ले जाकर खून देने से बच सकती थी, लेकिन कन्वेयेन्स कहाँ है ?'

'पेट के बच्चे का क्या हुआ ?'

'वह पैदा नही हुआ। धरती की मिट्टी, हवा, पानी उसे कुछ भी न मिला।'

'ओफ ओ !' कदम के मुँह से यह शोकोक्ति फूट पडी, 'अच्छा, साधन-दा, भामिनी मरी कैसे ? उन सीढियों पर से तो वह हजारों बार चढती-उतरती थी ?'

'वही तो रहस्य है,' साधन बोला, 'वह होश मे आती तो शायद सब

मालूम हो जाता। लेकिन अब सम्भव नही है। वह बड़-बड़ाकर जाने क्या कह रही थी, कुछ भी समझ में नही आया। बस कुछ शब्द 'भूत,' 'जीती लाश,' 'कंकाल'।'

'कंकाल' शब्द सुनते ही कदम का सिर चकरा गया। भामिनी ने मरते वक्त कहा था : 'कंकाल,' 'नरकंकाल,' 'जीती लाश'।

कदम के दिमाग मे कार्य-कारण के एक सम्बन्ध ने मानो झाँका। तो क्या कदम के पिता पिछली रात को कंकाल बनकर भामिनी के सामने गये थे? तो क्या उसके पिता ने ही भामिनी की हत्या की है?

कदम मन की आशंका को साधन से खोलकर न कह सकी, गुमसुम होकर रह गयी।

साधन ने उसका भावान्तर देखकर कहा, 'भूत की बातों से क्या डर गयी हो? तुम्हे भूत से डर लगता है, यह नही पता था।'

'नही, डरी नही।'

'लेकिन तुम्हारा चेहरा अचानक ऐसा फीका क्यों पड गया?' साधन ने पूछा।

'न, यों ही,' कदम थोड़ा हँसकर बोली, 'अच्छा, ठीक कितने बजे भामिनी ने भूत देखा था?'

'यह कैसे बताऊँ?' साधन बोला, 'उस वक्त क्या समय की ओर किसी का खयाल था? समझ लो न, मुझे बुला लाने वे लोग गये। उस वक्त होंगे रात के साढे तीन। सारी बात समझते, मेरे यहाँ आते—सब लेकर उन्होने आध घंटा-पैंतालीस मिनट लिया होगा। इसके साथ भामिनी का चिल्लाना, माँ-बाप की खोज—यह सब लेकर, और भी बीस मिनट समझ लो। सब मिलाकर शायद रात के ढाई के अन्दाज भूत देखने की घटना घटी होगी।'

कदम फिर चौक गयी। सिर्फ यही बोली, 'रात के ढाई बजे!'

कदम को याद आया कि कल रात मे जब बाबा पोखरे में डुबकी लगाकर शरीर पर से चूने का कंकाल रगड़ रहे थे तो घडी में ठीक तीन बजे थे। हाँ, टन्-टन् कर दीवार की घडी में तीन बजे थे।

साधन बोला, 'तुम इतना सोच क्या रही हो? मुझसे ऐसी जिरह क्यों कर रही हो?'

कदम बोली, 'नही यों ही ।' लेकिन वक्त के मेल खाने पर कदम के पैर थर-थर काँपने लगे, यह साधन की आँखों से छिपा न रहा ।

'यह क्या ?' साधन बोला, 'तुम्हारी तबियत ठीक नही है ? अब उनके घर नही जाना है। मौत देखकर तुम्हारी तबियत और भी खराब होगी । चलो, मैं तुम्हे घर पहुँचा दूं ।'

'न, तुम अपने काम से जाओ, साधन-दा। आज मैं स्कूल नही जाऊँगी। मन बहुत खराब होता जा रहा है ।'

साधन चला गया, लेकिन घर की राह जाने में जैसे कदम के पैर न बढ़ रहे हों । पानी के बहने के दरवाजे की दीवार के किनारे छाया के पास बैठ गयी ।

भागीरथी के वक्ष पर पाल उठाये एक नाव बही जा रही थी। बहुत-सा भूसा लादे हुए एक बजरा था। खाडी की ओर बहुत-सी मछुआरो की डोंगियाँ थी । एक बच्चा केले के खोल की नाव बनाकर खाडी के पानी मे तैराने की कोशिश कर रहा था । दूर पर एक बुड्ढा मछुआरा सूत से जाल बुन रहा था। बगुला सन् से उडा। उधर गहरी रंग की एक धारा छोड़ती हुई एक चील सन् से उड़ गयी। आसमान मे चील चिल्ला रही थी, उससे भी ऊँचे पर गिद्ध, एक, दो, तीन, चार—बहुत से गिद्ध शाही चाल से उड़े जा रहे थे। रास्ते पर एक युवक सिनेमा का एक गीत गुनगुनाता हुआ चला जा रहा था। गाँव की एक लड़की आकस्मिक और अस्वाभाविक ढंग से मर गयी, उस पर दुनिया मे किसी की नजर नही। एक जीवन अकाल समाप्त हो गया; एक जीवन की सम्भावना का अन्त हुआ। वह पैदा ही न हुआ। धरती का प्रकाश, हवा, मिट्टी, पानी कुछ भी उसे नही मिला। लेकिन इसमे दुनिया मे किसी का क्या आता-जाता है ?

लेकिन कदम इतना सोच मे क्यो है ? वह इतनी सन्तप्त क्यो है ? कदम अगर भूत-प्रेत मानती, तो शायद इतना न सोचती। भूत देखकर भामिनी मर गयी। लेकिन वह तो भूत नही, नर-कंकाल था। कल रात को कदम के पिता भी तो कंकाल बनकर चोर की तरह घर में घुसे थे। पकड़े जाने पर उन्होने कदम को धमकाया था : 'खबरदार, तू किसी को कुछ नही

कदम बोली, 'नही यो ही।' लेकिन वक़्त के मेल खाने पर कदम के पैर थर-थर कांपने लगे, यह साधन की आंखो से छिपा न रहा।

'यह क्या ?' साधन बोला, 'तुम्हारी तबियत ठीक नही है ? अब उनके घर नही जाना है। मौत देखकर तुम्हारी तबियत और भी खराब होगी। चलो, मैं तुम्हे घर पहुँचा दूं।'

'न, तुम अपने काम से जाओ, साधन-दा। आज मैं स्कूल नही जाऊँगी। मन बहुत खराब होता जा रहा है।'

साधन चला गया, लेकिन घर की राह जाने मे जैसे कदम के पैर न बढ़ रहे हों। पानी के बहने के दरवाजे की दीवार के किनारे छाया के पास बैठ गयी।

भागीरथी के वक्ष पर पाल उठाये एक नाव बही जा रही थी। बहुत-सा भूसा लादे हुए एक बजरा था। खाडी की ओर बहुत-सी मछुआरों की डोंगियाँ थी। एक बच्चा केले के खोल की नाव बनाकर खाडी के पानी में तैराने की कोशिश कर रहा था। दूर पर एक बुड्ढा मछुआरा सूत मे जाल बुन रहा था। बगुला सन् से उड़ा। उधर गहरी रंग की एक धारा छोड़ हुई एक चील सन् से उड़ गयी। आसमान मे चील चिल्ला रही थी, उ[illegible] भी ऊँचे पर गिद्ध, एक, दो, तीन, चार—बहुत से गिद्ध शाही चाल से [illegible] जा रहे थे। रास्ते पर एक युवक सिनेमा का एक गीत गुनगुनाता [illegible] चला जा रहा था। गाँव की एक लड़की आकस्मिक और अस्वाभावि[illegible] से मर गयी, उस पर दुनिया मे किसी की नजर नही। एक जीवन [illegible] समाप्त हो गया; एक जीवन की सम्भावना का अन्त हुआ। [illegible] ही न हुआ। धरती का प्रकाश, हवा, मिट्टी, पानी कुछ भी उसे नही [illegible] लेकिन इससे दुनिया मे किसी का क्या आता-जाता है ?

लेकिन कदम इतना सोच मे क्यो है ? वह इतनी सन्तप्त [illegible] कदम अगर भूत-प्रेत मानती, तो शायद इतना न सोचती। भामिनी मर गयी। लेकिन वह तो भूत नही, नर-कंकाल था। कल कदम के पिता भी तो कंकाल बनकर चोर की तरह घर मे घुसे [illegible] जाने पर उन्होने कदम को धमकाया था : 'खबरदार, तू किसी के

भी नही मिला। कोई रोने की आवाज़ आ रही है न ? दूर से मौत के वक़्त रोने की-सी आवाज आ रही है। तो क्या भामिनी अजात सन्तान के लिए रो रही है ? रोये; चुड़ैल ने बहुत पाप किये है ! दो दिन पहले सबसे बड़ा पाप किया कि पूजा के कमरे पर हमला करके मूर्तियाँ तोड़ डाली। रोये, कलेजा फाड़कर रोये, रोकर पाप का बोझ हलका करे।

परेश पोखरे से निकल आया। एक बार सोचा कि भामिनी के घर के आस-पास जाकर पता लगा आये कि मामला कहाँ तक खिंचा है। पर दूसरे ही क्षण मन ने कहा, 'पागल हो गया है, लोग अगर उसे देखकर सन्देह करें तो ?' परेश का सिर जैसे चक्कर खा रहा था। एक गीला गमछा पहने ही परेश सीधा पूजा-घर मे चला गया। दरवाज़ा खोलकर अँधेरे मे ही घुसा। रोशनी नही जलायी। दंडवत् कर मूर्तियो के आगे लेट गया। मन-ही-मन जप करने लगा, 'माँ,' 'माँ,' 'माँ,' 'माँ' !

परेश सो गया था। सहसा किसी का धक्का लगने से उसकी नीद टूटी। उस समय भी घर-बाहर मे अँधेरा था। परेश ने जरा डरकर दबी आवाज मे पूछा, 'कौन ? कौन ?'

फुसफुसाकर जवाब मिला, 'मैं हूँ हरहरि।'

'ओ, हरबाबू, मैंने सोचा न जाने कौन है ? क्या बात है, इतनी रात को ?'

'ख़बर देने आया हूँ। बहुत चुपके से खिसक आया हूँ, आकर देखा कि तुम्हारे सोने के कमरे मे साँकल लगी है; ठाकुरद्वारे का दरवाजा खुला था। टॉर्च जलाकर देखा कि तुम ठाकुर के आगे दंडवत् होकर ध्यान-मग्न हो। लो, उठो। अब और ध्यान नही करना होगा।'

परेश उठ गया। हरहरि बोला, 'ओह, तुम्हारे बाण मे कैसी ताकत है, परेश भाई। काम फतह हो गया। सिर्फ़ पेट ही गया हो, सो नही, माँ भी खत्म हो गयी है। एक ही पत्थर से दो चिड़िया मार दी !'

'इसका मतलब ?'

'वह चुड़ैल भी खून बहने से मर गयी। मरने के पहले बस बड़बड़ करके कहा, 'भूत,' 'भूत,' 'जीती लाश,' 'कंकाल' !'

अध्याय : 11

उसके पिता तो ठाकुरद्वारे मे ही थे। कदम ने उधर कदम बढाये।

परेश आत्मरक्षा के लिए कल रात भागा-भागा आया था। भामिनी जिस तरह चीख रही थी, परेश ने सोचा कि उस आवाज को सुनकर ही अगर कोई भागा-भागा आ जाये तो! भामिनी के हाथ से टॉर्च गिर गयी थी। अँधेरी, अमावस की रात थी। परेश ने हाथ बढाकर चादर को झाड़ियो मे से निकाला। उसे बदन पर लपेटकर वह भागा। एक कुत्ता भों-भो करता हुआ उसका पीछा कर रहा था। डर लगा कि कही बस्ती के लोग जाग न पड़ें। लेकिन गहरी रात मे कुत्ते की आवाज से कौन जागता है? कुत्ता साला काटेगा तो नही? खैरियत हुई, कुत्ता शोर मचाकर ही चुप हो गया। परेश घर पहुँचकर पोखरे में डुबकी लगाकर पहले बदन पर का चूना हटा देगा। शरीर पर की चादर बरामदे मे रखकर लँगोटी पहनकर वह ज्यो ही पोखरे की ओर जाने लगा, कि असावधानी से किसी चीज से पैर के टकराने की आवाज हुई। उसके बाद ही कदम ने टॉर्च जलाकर उसकी विचित्र रूप-सज्जा देख ली। परेश ने तो उसे रोक दिया। लेकिन वह अगर इस रुकावट को न माने तो? अपने प्यारे खोका-डाक्टर से सब भडाफोड कर दे तो? न, इस वक़्त अब सोचने का समय नही है। परेश ने पोखरे मे डुबकी लगाकर सारे शरीर से रगड-रगडकर रंग छुड़ाया।

लेकिन उधर भामिनी का क्या हुआ? परेश को तो देखने का मौक़ा

भी नही मिला। कोई रोने की आवाज़ आ रही है न ? दूर से मौत के वक़्त रोने की-सी आवाज़ आ रही है। तो क्या भामिनी अजात सन्तान के लिए रो रही है ? रोये; चुडैल ने बहुत पाप किये है ! दो दिन पहले सबसे बड़ा पाप किया कि पूजा के कमरे पर हमला करके मूर्तियाँ तोड़ डाली। रोये, कलेजा फाड़कर रोये, रोकर पाप का बोझ हलका करे।

परेश पोखरे से निकल आया। एक बार सोचा कि भामिनी के घर के आस-पास जाकर पता लगा आये कि मामला कहाँ तक खिचा है। पर दूसरे ही क्षण मन ने कहा, 'पागल हो गया है, लोग अगर उसे देखकर सन्देह करें तो ?' परेश का सिर जैसे चक्कर खा रहा था। एक गीला गमछा पहने ही परेश सीधा पूजा-घर में चला गया। दरवाज़ा खोलकर अँधेरे मे ही घुसा। रोशनी नही जलायी। दंडवत् कर मूर्तियों के आगे लेट गया। मन-ही-मन जप करने लगा, 'माँ,' 'माँ,' 'माँ,' 'माँ' !

परेश सो गया था। सहसा किसी का धक्का लगने से उसकी नीद टूटी। उस समय भी घर-बाहर मे अँधेरा था। परेश ने ज़रा डरकर दबी आवाज़ मे पूछा, 'कौन ? कौन ?'

फुसफुसाकर जवाब मिला, 'मैं हूँ हरहरि।'

'ओ, हरबाबू, मैंने सोचा न जाने कौन है ? क्या बात है, इतनी रात को ?'

'खबर देने आया हूँ। बहुत चुपके से खिसक आया हूँ, आकर देखा कि तुम्हारे सोने के कमरे मे साँकल लगी है; ठाकुरद्वारे का दरवाजा खुला था। टॉर्च जलाकर देखा कि तुम ठाकुर के आगे दंडवत् होकर ध्यान-मग्न हो। लो, उठो। अब और ध्यान नही करना होगा।'

परेश उठ गया। हरहरि बोला, 'ओह, तुम्हारे बाण मे कैसी ताकत है, परेश भाई। काम फतह हो गया। सिर्फ़ पेट ही गया हो, सो नही, माँ भी खत्म हो गयी है। एक ही पत्थर से दो चिड़िया मार दी !'

'इसका मतलब ?'

'वह चुडैल भी खून बहने से मर गयी। मरने के पहले बस बड़बड़ करके कहा, 'भूत,' 'भूत,' 'जीती लाश,' 'कंकाल' !'

परेश चौक गया। उसने फ़ौरन एक बार अपने शरीर पर, हाथ-पैर पर नजर डाली : कंकाल का निशान कहीं रह तो नहीं गया है ? लेकिन अँधेरे मे कुछ पता न चला। उसने पूछा, 'और कुछ कहा ?'

'न, बडबडाकर और जो कुछ कहा कुछ भी समझ में नहीं आया। तुमको प्रणाम करता हूँ, परेश-दादा !'

हरहरि ने सचमुच परेश के पैरों को छूकर प्रणाम किया।

'ओहो, कर क्या रहे हो हरबाबू, मैं उमर में छोटा हूँ।'

'तुम बहुत बडे हो भाई, साक्षात् गुरुदेव हो। तुम्हारे पैरों पर यह दो सौ रुपये गुरु-प्रणामी दे रहा हूँ।'

हरहरि ने दो सौ रुपयों के नोट पैरों के पास रखे। उसके बाद बोला, 'इतने दिनों तक लोग तुमको ओझा ही समझते थे। अब पता चला कि तुम बैताल-सिद्ध हो। तुम सिर्फ भूत भगा ही नहीं सकते हो, भूत लगाना भी जानते हो। उस भूत के हाथों ही मार-मूर कर सफाया !'

सहसा परेश अचानक बोल पड़ा, 'न—न, भूत के हाथों नहीं। वह डरकर ही मर गयी है।'

'तुम कैसे जानते हो ?'

परेश को मानो होश आ गया। उसने कैसी गोपनीय बात कह डाली जिससे कि शक होता कि वह वहाँ मौजूद था। उसने अक़्ल लगाकर कहा, 'मैंने दिव्य दृष्टि से देखा, वही बता रहा हूँ।'

'तो यह कहो,' हरहरि बोला, 'मैंने सोचा, तुम वहाँ खडे होकर सब देख आये हो।'

'यह कौन कहता है ?'

'न, किसी ने कहा नहीं, मैंने ही ऐसा सोचा।'

परेश की जान-में-जान आयी।

हरहरि बोला, 'हाँ, हारान मडल कहता है कि तुमने ही उसकी लड़की को मारा है। तुमने ही धमकी दी थी, तीन ही दिन में...'

'वह तो बात-की-बात थी,' परेश ने सफाई दी।

'लेकिन बात तो ठीक है,' हरहरि बोला, 'तुम्हारे मारण-उच्चाटन के परिणाम से ही तो वह मरी।'

'वह तो है, वह तो है। लेकिन मैं लड़की को मारना नही चाहता था। विश्वास करो, हरबाबू,' परेश ने आकुलता के साथ कहा।

'उससे और क्या हुआ ? बाण थोडा लक्ष्य-भ्रष्ट हो गया। गलत जगह लगकर चुड़ैल को साथ ही ले गया। माँ-बेटी तो कहती है कि मैंने ही चुड़ैल को ढकेल दिया। सुनो बात ! चुड़ैल को मैंने कितना प्यार किया ! अब न होता तो थोडा झगडा होता, इसलिए मैं उस चुड़ैल को क्या ढकेल कर मारूँगा ? मै इतना निर्दयी, पत्थर तो नही हूँ।'

अब परेश भक् से जल उठा, बोला, 'तुम अव्वल दर्जे के कमीने हो। मेरे पास सफ़ाई देने आये हो। तुम्हारे ही पाप का तो यह फल है।'

'माने ? इसके माने ?'

'माने तुम अच्छी तरह समझते हो, हरबाबू,' परेश डाँटकर बोला, 'मैं अगर सचमुच बैताल-सिद्ध हूँ, तो एक दिन ताल-बैताल तुम्हारी गरदन मरोड़कर खून चूसकर पियेगा।'

बहुत डरकर हरहरि बोला, 'तुम आज उत्तेजित हो परेश भैया, होने की बात ही है। भूतों को लेकर खेलना क्या मामूली खेल है ! देखो, सचमुच मुझ पर ताल-बैताल मत लगा देना।'

हरहरि जैसे चुपचाप आया था, उसी तरह चुपचाप चला गया।

अब परेश का मन परेशान हो उठा। भामिनी मर गयी ! भामिनी मर गयी ! परेश तो उसे मारना नही चाहता था। भामिनी के तरह-तरह के रूप, तरह-तरह की भंगिमाएँ उसके मन में खेल गयी। परेश सहसा देवी-प्रतिमा के आगे धमाधम अपना सिर पीटने लगा, और बड़बड़ाकर कहने लगा, 'भामिनी मर गयी ! माँ, मुझसे यह क्या करा दिया, माँ, मुझसे यह क्या कराया ?'

कदम ने जब ठाकुरघर मे प्रवेश किया तो परेश उस समय भी अपने मन मे बड़बड़ कर रहा था।

कदम ने पुकारा, 'बाबा...!'

परेश ने लड़की की ओर देखा। उसकी आँखे लाल हो रही थी, चेहरा

फीका पड रहा था ।

कदम बोली, 'भामिनी नही रही, सुना है ?'

'हाँ ।'

'उसके पेट का बच्चा भी मर गया ।'

'मालूम है ।'

'किस तरह मालूम हुआ ? तुम तो घर से निकले नही ?' कदम के कहने मे सन्देह था ।

'हरहरि बाबू बता गये ।'

'वे फिर कब आये ?'

'तडके । तू उस वक्त सो रही थी ।'

'इतने लोगों के रहते वह तुमको ही बताने क्यो आये ?'

'वह उससे पूछो, मुझसे क्यों पूछ रही हो ?'

'कल रात को तुम कंकाल बनकर लौटे थे, उस समय रात के तीन बजे थे ।'

'हो सकता है । मैंने घडी नही देखी थी ।'

'मैंने घडी का घटा सुना था ।'

'तब फिर वह ठीक होगा ।'

'सुना है कि भामिनी ने भूत देखा था, ज़िन्दा लाश, कंकाल ।'

'किसने कहा ?'

'साधन-दा ने ।'

'खोका-डाक्टर मेरा दुश्मन है । वह झूठी बातें कहता फिरता है ।'

'उसी ने क्यो, और भी बहुतो ने सुना है । उस वक्त रात के ढाई बजे होंगे जब भामिनी ने ककाल देखा था ।'

'हो सकता है ।'

'वह नर-कंकाल क्या तुम थे ?' कदम ने इस बार सीधा सवाल किया ।

'हाँ ।'

कदम पिता की स्वीकारोक्ति से चौक पड़ी । उसने ज़रा साँस लेकर पूछा, 'तब तुमने ही भामिनी की हत्या की ?'

'न, बिलकुल नही ।'

'तब वह गिरकर कैसे मर गयी ?'

'कंकाल देखकर डर से लुढ़क गयी। मैंने उसे नही मारा; मैं उसे मारना नही चाहता था।'

'तो तुम गये क्यों थे ? क्यो, उस वीभत्स रूप में इतनी भरी रात को उसकी राह मे शिकारी बाघ की तरह घात क्यो लगाये थे ?'

'उसे डराने गया था। वह पाप-रूपा थी। उसने मेरे ठाकुर का अपमान किया था।'

'तुम्हे नही पता था कि उस हालत मे डरकर गिर पड़ने से वह मर सकती थी। उसके पेट का बच्चा गिर सकता था ?'

'उसकी-सी जवान लड़की गिरकर मर जायेगी, यह कैसे सोचता ?' परेश ने बात ठीक कही, किन्तु 'अश्वत्थामा हतो नरो व कुंजरो व' की तरह का जवाब हुआ। उसने तो चाहा था कि उसके गिरने से गर्भस्राव-भर हो। भामिनी आसन्न-प्रसवा थी। इस अवस्था मे उस तरह की खड़ी सीढ़ियों पर गिरने से उसके गर्भ गिरने की सम्भावना प्रायः सोलह आना पक्की थी। परेश ने अनिश्चित मन्त्र-पाठ और बाण मारने का रास्ता न लेकर यह आसान रास्ता पकडा था। इतना निश्चित ही उसने सचमुच नही सोचा था कि भामिनी खुद भी मर जायेगी।

कदम बोली, 'मैं निश्चित समझती हूँ कि तुमने भामिनी की हत्या की है, और खून किया है उसके अजात शिशु का।'

'झूठी बात,' दृढ़ स्वर मे परेश ने अस्वीकार किया।

'तुम हत्यारे हो, हत्यारे, हत्यारे हो,' कदम बहुत उत्तेजित स्वर मे बोली।

'चुप रह, हरामजादी ! नही तो मै तेरा खून कर दूंगा।'

पागल की तरह कदम बोली, 'मैं अभी थाने जाकर दारोगा से सब बातें बताये देती हूँ।'

'तू बाप को खून के जुर्म मे फँसायेगी ?

'कोई हत्यारा मेरा बाप नही हो सकता है।'

'मैं फिर कह रहा हूँ कि मैंने हत्या नही की।'

'झूठ बात। मैं समझ रही हूँ कि तुम झूठी बात कह रहे हो।'

परेश ने अब कुछ चालाकी की। वह समझ गया कि कदम अगर वह सारी बातें दारोगा से कह देगी तो मुसीबत आ सकती है। पहले ही हारान मंडल ने दोष लगाया है। उस पर अपनी लड़की भी अगर विरुद्ध जाती है तो वह जरूर फँस जायेगा। वह शान्त स्वर में बोला, 'तू झूठमूठ दोष लगा रही है। मैं अदालत में खड़े होकर हलफ लेकर कहूँगा कि मैंने भामिनी की हत्या नहीं की है। उसके बाद तेरी बात का कौन विश्वास करेगा?'

'क्यों?'

'मैं कहूँगा कि तू बाप के विरुद्ध झूठी गवाही दे रही है। तू उस खोका-डाक्टर की प्रेमिका है। उससे शादी करना चाहती है। मैंने तेरे भले के लिए तुझे रोका है। उसी से खफ़ा होकर तू बाप के विरुद्ध मनगढंत गवाही दे रही है। बाप को सजा हो जाने से, जेल जाने से, या फाँसी हो जाने से, तेरे ब्याह की राह का काँटा दूर हो जायेगा न!'

कदम पिता के प्रत्याक्रमण से भौंचक रह गयी।

परेश कहता रहा, 'खोका-डाक्टर ने क्या मुझे नहीं धमकाया? उसने क्या मुझसे नहीं कहा कि वह तुझसे जरूर ही शादी करेगा? भामिनी की मौत को लेकर तुम लोगों ने षडयन्त्र किया है कि मुझे फँसाकर तुम लोग शादी का रास्ता साफ कर लोगे!'

कदम अब भी कुछ जवाब न दे सकी।

परेश बड़ा मीठा बनकर बोला, 'उसके सिवा भामिनी तेरी कौन है? हो सकता है कि बचपन में तुम्हारे साथ खेली हो। वह लड़की बिगड़ चुकी थी। पापिनी थी, देवी-देवता को डंडा मारती थी। उसने तेरे नैसर्गिक प्रेम को लेकर लोगों के आगे मज़ाक उड़ाया था। उसके लिए तू बाप को फँसा देगी?'

कदम पूरी तौर पर उलझन में पड़ गयी। उसका इतना आक्रोश, इतनी अकड़ संशय के चक्कर में पड़ गये।

परेश इसी मौके पर बोला, 'तू इन बेकार की बातों पर ध्यान मत दे। आज तेरी बुआ नहीं है; खाने का भी इन्तज़ाम नहीं करेगी? तेरे

लिए दूकान से कुछ खाने को ले आता हूँ; तू खाकर आराम कर।'

कदम किंकर्तव्यविमूढ़-सी संशय-युक्त मन और क़दमों से ठाकुरघर से चली आयी।

परेश मन-ही-मन बोल उठा, 'माँ, माँ, सब तुम्हारी इच्छा है, तुम इच्छा-मयी तारा हो। अपना काम तुम करती हो माँ, और लोग कहते हैं कि वह काम मैं करता हूँ!'

परेश ने उस समय अपनी बेटी को तो जरूर समझा दिया, लेकिन अपने मन को न समझा सका। भामिनी मर गयी, भामिनी मर गयी, यह बात बार-बार उसके मन में उमड़ती-घुमड़ती रही। वह तो भामिनी को मारना नही चाहता था, लेकिन यह क्या हो गया?

हरहरि के दिये हुए दो सौ रुपये पूजा-घर मे फ़र्श पर एक ओर पड़े थे। उसने नोटो को उठा लिया। बहुत रुपये थे। लेकिन इतने रुपये लेकर वह करेगा क्या? उसके सिवा वह अधर्म के रुपये थे। उसने एक बार सोचा कि रुपये हरहरि को लौटा आये। बाद मे सोचा—नही, न दूँगा। इससे अच्छा है कि हारान मंडल को भामिनी की श्राद्ध-शान्ति के लिए दे दे। लेकिन अपघात मृत्यु है। शायद श्राद्ध न होगा। उसके सिवा हारान बिगड़ा हुआ है; अगर वह रुपये मेरे ही मुँह पर मार दे तो! इससे अच्छा है, बाज़ार के काली मन्दिर मे वह भामिनी के नाम से चन्दे के रूप मे दे दे। चन्दा देने वालो के नाम की सूची मे भामिनी दासी की स्मृति मे शब्द लिख दिये जायेंगे। परेश ने उस समय तो रुपये बक्स मे रख दिये।

घर से निकल पड़ा परेश। सोचा था कि दूकान से कुछ खाने के लिए खरीदकर खुद भी खायेगा, कदम को भी देगा। लेकिन बाँध के रास्ते पर पहुँचने तक वह यह बात बिलकुल भूल गया।

अन्यमनस्क होकर उसने भामिनी के घर की ओर कदम बढ़ाये, लेकिन मकान के पास आकर उसे होश आया। वह सामने तो सूखा हुआ नारियल का पेड़ दिखायी दे रहा है जिस पर गिद्ध बैठे थे। वह गिद्धों का बैठना

ही काल हो गया ! गिद्ध अगर न बैठते, तो परेश की पुकार न पड़ती, और यह घटनाक्रम न चलता। सामने आकाश मे गिद्ध उड़ते घूम रहे हैं ! उनके बड़े-बड़े पंख मंथर गति से मिलते हैं, हट जाते है। परेश ने मन-ही-मन गिद्धों को गाली दी।

राह मे दो-एक जान-पहचान के लोगों से भेंट हुई। लेकिन किसी ने परेश से बात नही की। दूर से हाथ जोड़कर नमस्कार कर बच के निकल गये। उनकी नजरों मे संकोच और भय था।

अन्यमनस्क परेश बस्ती छोड़कर बांध की राह पकड़कर चला। परेश कभी चलता, कभी बैठता, कभी सोचता, कभी मन्त्र पढता। लेकिन उसका मन परेशान ही रहा। भामिनी नही रही, भामिनी नही रही ! भामिनी की तरह-तरह की शकलें परेश की आँखों के आगे आने लगी— कभी क्रोध मे, कभी करुणा में, और कभी कामना मे, तरह-तरह से परेश के मन मे चक्कर काटने लगी।

समय बीत कर तीसरा पहर हो गया, तीसरे पहर से संध्या, संध्या से रात, घनी अँधेरी रात ! परेश को लगा कि उसके पास कोई खड़ा है। उसकी गतिविधि लक्ष्य कर रहा है। उसने इधर-उधर नजर डालकर देखा। पुलिस का आदमी तो नही है ? कदम ने अन्त मे थाने मे बडे बाबू के पास तो खबर नही दे दी ! उसने डरकर इधर-उधर अच्छी तरह देखने की कोशिश की। लेकिन नही, कही कोई नही था। उसी का मति-भ्रम था।

परेश उठ खडा हुआ। गाँव की ओर कदम बढाये। उस रात को उस ओर रास्ते पर कोई न था। फिर भी उसे लगा, मानो पीछे किसी के पैरों की आवाज हो। जैसे कोई उसका पीछा कर रहा हो। परेश दो-तीन बार घूमकर रुक गया। कोई न था। उसके पैर लड़खडाने लगे। वह मन-ही-मन हँसा। बैताल-सिद्ध परेश पात्तर को भूत से डर लग रहा है ! धत् साले !

परेश चलकर, बैठकर, खड़े होकर, आगे बढ़कर, पीछे हटकर, फिर आगे बढ़, अन्त मे अपने गाँव के आस-पास आ पहुँचा। दूर से 'बोलो हरि,

हरि बोल' की आवाज सुनायी दे रही थी। बहुत जोर-जोर से ऊँची आवाजें सुनायी दी। परेश समझ गया कि भामिनी का शव लेकर श्मशान जाने वाले उधर ही आ रहे हैं। राह मे उनसे मुलाक़ात होगी। यह तो बिलकुल अच्छा न होगा। परेश फिर पीछे की ओर चलने लगा। चला तो चलता ही रहा। पीछे से 'बोलो हरि, हरि बोल' की आवाज जैसे उसे धमका रही थी। परेश अँधेरे मे ही भागने लगा। उसे दो-एक बार ठोकर लगी। और जो भी हो, वह गिर नही पडा। कुछ देर दौडने के बाद उसे फिर आवाजें सुनायी देना बन्द हो गयी।

तो वे लोग श्मशान पहुँच गये। ठीक-ठाक कर चिता जलाने मे समय लगेगा। परेश हाँफ रहा था। कुछ देर बैठकर, आराम कर फिर लौटने लगा। घर के रास्ते पर ही नदी के किनारे श्मशान पड़ेगा। परेश उससे बचकर घर लौट आयेगा, यह उसका इरादा था। वह धीरे-धीरे कदम बढ़ाते चलने लगा।

इस बीच शायद भामिनी की चिता में आग दे दी गयी होगी। लेकिन कहाँ, दूर से तो आग की लपटें दिखायी नही पड़ रही है। अँधेरा आसमान तो लाल नही हो उठा है। श्मशान के आस-पास आते हुए परेश को कोई एक अदृष्ट आकर्षण श्मशान की ओर खीच ले गया। यह रास्ता उसका पहचाना हुआ था। कितनी ही बार अँधेरे में उसने यहाँ चक्कर लगाये हैं। धान के खेतों की मेड़ों को पार कर भागीरथी-तीर के श्मशान पर वह आसानी से पहुँच गया।

पास के एक छप्पर मे श्मशान आये कई युवक इकट्ठा होकर बातें कर रहे थे। वे आपस मे ही बातें कर रहे थे, 'साली बोतल खरीदते ही लकडी की मात्रा कम हो गयी। हरहरि हरामजादा बड़ा कजूस है। जान थी तो चुड़ैल के साथ मजे उड़ाये। मरने पर कमी करके दाह करो, यह नही कि और भी रुपये लगाओ!'

'तभी तो कहा कि लाश को आधा जलाकर पानी मे बहा दे। हारान टेढ़ा होकर बैठ गया। वह डोम के साथ बाजार से और भी लकड़ियाँ लाने गया है।'

'और हम लोग तब तक यह बोतल ही साफ़ करें।'

'लाश यों ही पडी रहेगी ? कुत्ते-सियार तो नही खा जायेंगे ?'

'खेल तो खत्म हो चुका है। वह तो बिगड़ी चुड़ैल थी, उस पर अप-मृत्यु ! बोतल न मिलती तो क्या हम लोग इस रात में आते ?'

'अरे, छदम्मी, तेरी आँखें बहुत तेज है। लाश पर नजर रखना।'

'दादा, मेरा शरीर काँप रहा है। मैं उधर न देख सकूँगा।'

'ले, ले, एक कुल्हड उठा। हिम्मत बढ जायेगी।'

परेश ने गौर से देखा। श्मशान-यात्री युवक बोतल संभालने में व्यस्त थे। भामिनी की लाश मानों लावारिस पड़ी थी। एक गहरी करुणा से परेश का मन भर उठा। विधवा भामिनी जब अपनी जवानी से लदी चलती-फिरती थी, तो उन सारे श्मशान के साथियों में कौन उसकी ओर ललचायी दृष्टि से नही देखता था ? लेकिन आज ? परेश ने सोचा। सबके बिना देखे वह अकेले ही भामिनी की लाश पर पहरा देगा।

वे लोग सुरापान में जुट गये थे। परेश भामिनी की लाश के पास चुप-चाप आकर खड़ा हो गया; उधर किसी की नजर नहीं थी।

जोड-जाड़ कर बनी बाँस की खटिया थी। उस पर सफेद चादर से ढका एक शव पड़ा हुआ था। केवल सिर की ओर खुला हुआ था। धुंधला प्रकाश भामिनी के चेहरे पर आकर पड रहा था। ताज्जुब था कि चेहरा बिलकुल बिगड़ा न था। वही खड़ी तीखी नाक, सुडौल चेहरा, दोनों आँखें बन्द, ओठ जरा खुले हुए थे; उनमें से सुन्दर दाँतो की पंक्ति कुछ-कुछ दिखायी दे रही थी। जरा गौर से देखते ही भामिनी की यौवन-पुष्ट देह-रेखा चादर के नीचे दिखायी दे रही थी। चंचला भामिनी अब स्थिर, गतिहीन थी।

अनिर्वचनीय वेदना से परेश का मन उमड़ उठा। वह बड़बड़ाकर बोला, 'विश्वास कर भामिनी, मैंने तुझे नही मारना चाहा था। मैं तो मन-ही-मन तुझे चाहता था।'

परेश के अन्तर्मन की दबी बात आज बे-रोक-टोक निकली आ रही थी, 'भामिनी मैंने तेरी बुराई की, गालियाँ दी, लेकिन सचमुच मैं तुझे चाहता था। शयन में, स्वप्न में, जागरण में तू मेरे मन में रमी बैठी थी।

आज सब खाली है। सब खाली हो गया !

'विश्वास कर भामिनी, तूने मेरी इष्टदेवी को भुला दिया था। तू उस बदजात हरहरि के पास क्यों गयी ? क्यों, क्यों ? इसीलिए तो मैं गुस्सा हो गया। तूने उसकी सन्तान को पेट मे क्यों रखा ? इसीलिए तो मैंने तुझे सज़ा दी। अब खुद ही जल-जलकर मर रहा हूँ।'

सहसा परेश एक अचिन्तनीय काम पर बैठा। वह भामिनी की लाश पर झपट पड़ा। मरने से अकड़ी उसकी देह को अपनी बलशाली भुजाओं से उठा लिया। उसके बाद उसके शीतल कठोर ओष्ठाधरो को बार-बार चूमने लगा। वह बड़बड़ाकर बोला, 'तुझे मैंने कभी निकट नही पाया, भामिनी ! *यही आज मेरा प्रथम और अन्तिम आलिंगन है।'*

खटिया के बाँसो के चरमराने से श्मशान-यात्रियो को होश आया। कोई लालटेन लेकर चीख उठा, 'सर्वनाश ! परेश ओझा ने चुड़ैल की गरदन उमेठ दी है। अब लाश का मास नोंच-नोचकर खा रहा है !'

अब जायें तो जायें कहाँ ? नशा सिर पर चढ गया। जिसे जिधर मिला तेज़ी से भागने लगा। परेश उधर न देखकर भामिनी के मृत्यु-शीतल कठोर ओठो का चुम्बन करता रहा।

लेकिन थोडी ही देर बाद शोर मचाते हुए वे लौट आये। हारान और भी लकड़ियाँ खरीदकर आ गया था। वह भागते हुए श्मशान के साथियों को हिम्मत दिलाकर लौटा लाया। हारान की चीख-पुकार से वे बहादुरी का तूल बाँधकर लौट आये। हारान परेश को देखकर चिल्लाने लगा, 'पिशाच, मेरी लडकी की गरदन मरोड़कर भी तेरी तबियत नही भरी ? अब उसका मांस खाने आया है। कहे देता हूँ छोड, छोड़ !' हारान ने परेश के बलिष्ठ हाथों के बन्धन से भामिनी की मृत देह छीन ली। एक आदमी ने लकडी का चैला लेकर परेश की पीठ पर मारा। उसी चोट से जैसे परेश को होश आ गया। वह मुसीबत को समझकर अँधेरे मे भाग उठा।

अध्याय : 12

श्मशान की घटना बढ़-चढ़कर चारों ओर फैल गयी। परेश पात्र केवल वैताल-सिद्ध ही नहीं, पिशाच-सिद्ध भी है—लोगों के मुँह पर एक यही बात थी। गाँव वालों ने उस दिन से परेश से बाक़ायदा डरना शुरू कर दिया, उससे कतरा कर निकलने लगे। लेकिन बहुत अधिक परिवर्तन आया कदम के व्यवहार में, उसके हावभाव में।

उस परिवर्तन को लक्ष्य किया कदम की बुआ ने, क्योंकि लड़की की ओर नज़र रखने योग्य मन की हालत परेश की नहीं थी। कदम घर में अपनी कोठरी में फिर घुस गयी थी। वह किसी से खास कुछ बातें न करती थी। कुछ पूछने पर 'हाँ, या 'न' में जवाब देती। बिलकुल पहले ही की तरह।

'तुझे क्या हो गया है?' बुआ ने पूछा, 'तू दिन-रात ऐसा क्या सोचती रहती है?'

'होगा क्या?' कदम बात का जवाब टाल जाती।

बुआ ने बहुत कुछ कहा तो वह बोली, 'तुम सब लोग दिन-रात भामिनी की बातें करते हो। लेकिन जो बच्चा पैदा न हुआ, जिसको दुनिया में पानी, हवा, प्रकाश, मिट्टी तक नहीं मिली, उसकी बात तो तुम कोई नहीं करते!'

'तुझे इतनी फिक्र क्यों है?' बुआ बोली, 'यह सब तो चलता ही रहता

है, कितने लोग यह सब करते रहते है। उससे तुझे क्या ?'

'न, यों ही कह रही हूँ।'

लेकिन कदम यों ही कहकर चुप न रही। वह बात उसके मन मे उलटने-पलटने लगी। उसने लिखना-पढना बन्द कर दिया; स्कूल नही गयी। दिन-रात अनमनी होकर कुछ बडबड़ाती रहती।

उसने सिर में तेल लगाना बन्द कर दिया। नियमित स्नान करना बन्द कर दिया। बुआ के कुछ कहने पर अपने-आप बड़बड़ाती रहती—तुमने मुझे पैदा न होने दिया! पृथ्वी का जल, हवा, प्रकाश, मिट्टी तक नही मिलने दी!

वह बार-बार एक यही बात कहती।

तब बुआ ने डर कर सारी बात परेश से कही।

परेश चिन्तित होकर कदम के पास गया। बोला, 'तू यह सब क्या कहती रहती है ?'

'तूने मुझे पैदा न होने दिया। पृथ्वी का जल, हवा, प्रकाश, मिट्टी तक नही मिलने दी।'

'क्या कहा ?' परेश ने गुस्से से कहा।

कदम ने वही बात फिर कही।

परेश से कदम के बाल खीचकर कहा, 'चुप रह!'

कदम अस्वाभाविक ढंग से फुफकार उठी। वह गरज उठी, 'साले, हरामजादे, तूने मुझे पैदा न होने दिया; दुनिया का जल, हवा, मिट्टी तक नही पाने दी। मैं चुप रहूँ ? मैं चिल्लाकर बस्ती को सिर पर उठा लूंगा!'

परेश और बुआ अचम्भे में पड़ गये। सभ्य, शिष्ट, भली कदम की जबान से ये कैसी बातें ?

परेश ने उसके गाल पर एक थप्पड़ मारा। बोला, 'चुप रह!'

'घत्, चुप करूँगा ? मैं चिल्लाकर शोर मचा दूंगा। कह दूंगा कि तुमने मुझे पैदा न होने दिया; प्रकाश, हवा, मिट्टी, पानी तक नही मिलने दिया; मैं शोर मचाऊँगा।'

परेश ने ज़ोर से कदम का मुंह दाब दिया। कदम अपने को छुड़ाने की कोशिश भी न कर सकी। जैसे उसकी सारी शक्ति अचानक चली गयी

हो। वह निस्पन्द होकर लेटी रही।

परेश ने उसे छोड दिया और दीदी से चुपचाप कहा, 'उस चुड़ैल के अजन्मे वच्चे ने उसे डरा दिया है।'

'हाय माँ, रक्षा करो,' बुआ ने आँखे फाडकर कहा, 'अन्त मे क्या भूत इस पर आ गया ?'

'मैं भूत को भगाऊँगा। झाड़कर भूत विदा करूंगा,' परेश ने दृढ़ स्वर में कहा, 'दीदी, तुम सब सामान की तैयारी करो।'

बुआ ने तैयार करने के पहले छिपकर साधन से मुलाक़ात की; उससे सारी वातें साफ़-साफ बतलायी। कहने मे बहुत कुछ रंग भी भर दिया।

साधन वोला, 'धत्तेरे की, भूत नही खाक-धूल। उसे मानसिक रोग हो गया है। दिन-रात वही सब सोचते-सोचते घुट गयी है। अव सोचती है कि मानो वही अजात शिशु हो; उसकी बातें उसके मुँह से निकल रही है।'

'वेटा साधन, अव क्या होगा ?'

साधन वोला, 'उसके मानसिक रोग के इलाज की जरूरत है। मैं खुद तो वह कर न सकूँगा। मेरा एक डाक्टर-मित्र इस विषय का विशेषज्ञ है, मैं आज ही उससे सलाह करता हूँ। उसे अभी इस परिवेश से अलग करने की जरूरत है।'

'जैसे भी हो, वेटा, तुम कुछ व्यवस्था करो,' बुआ ने व्याकुल होकर कहा, 'लेकिन उसका बाप जिस तरह का है, वह जरूर अड़चन डालेगा।'

'आप उसकी मत मानियेगा। वीमार के भले के लिए आप सख्ती से काम करें। देखियेगा कि परेश काका उस पर अत्याचार न करें, नही तो नतीजा बुरा हो सकता है।'

'वह देखूँगी, वेटा।'

कदम की वुआ ने डाक्टर के साथ सलाह करने की वात परेश से छिपाये रखी, लेकिन परेश को उसकी ज़िद से हटा न सकी।

परेश ने दूसरे ही दिन स्वय ही भूत झाड़ने का इन्तजाम किया। सब वातें विलकुल छिपाकर रखीं। डाक्टर के घर मे घून का वास! ओझा के ही

घर में भूत रहे ! लोग सुनकर क्या कहेंगे ? इसीलिए सारी बातें चुपचाप निवटानी होगी !

आँगन के बीच फूल, वेल-पत्र, सरसो, एक झाड़ू, एक घड़ा पानी और बहुत-सी अन्य सामग्री भी थी। कदम अपने कमरे में बैठी वड़बड़ कर रही थी। परेश उसका हाथ पकड़कर खीचते-खींचते उसे आँगन में ले आया। वह बहुत जोरो से चिल्लाने लगी, 'ए साले, मुझे कहाँ लिये जा रहा है ?'

'यम के घर।'

'धत् हरामजादे, एक वार तो भेजने की कोशिश की। देख, मैं नही गया। मैं ख़ैरियत से हूँ।'

'इस पत्थर पर बैठ।'

'नही बैठूंगा। तू मेरा क्या करेगा ? तेरी गरदन मरोड़ दूंगा, तेरी अँतड़ी-पितड़ी खुरच-खुरचकर खाऊँगा।'

परेश ने फिर कदम के गाल पर थप्पड़ मारा। अब फिर अशक्त-सी कदम निस्तब्ध शिला पर बैठ गयी।

फूल, बेल-पत्र, सरसो छिड़ककर परेश अब वाल्मीक मन्त्र पढ़ने लगा :

अग्नि बनाकर छोड़ूँ बाल्मीक के बाण।
देवता असुर काँपे नही सहें जोर॥
इन्द्र की घरनी काँपे पाताल में बसुमती।
रक्षक भैरवी काँपे लक्ष्मी सरस्वती॥
अष्टाशु नवग्रह छोड़ शाथी पाँच:।
आठो का मन छोड़ जाओ छोड़॥
भूत छोड़े भुतनी छोड़े छोड़ा भूत प्रधान।
छोड़-छोड़ ओरे बेटा कदम के अग मे नन्दी महाकाल॥
दुहाई बाल्मीक की है कदम का अंग छोड़ रे एकाल बेकाल।

परेश के मन्त्र का जैसे कि अन्त न हो। सभी कुछ उसे याद था। बिना रुके वह फिर बोलने लगा। इस बार हनुमान को स्मरण कर बोला :

स्नान किया रे जाकर अंजना वानरी।
रूप देख पवन उससे माँग रहा रति ॥
सुनकर यह अंजना ने किया रतिदान।
उसके गर्भ से जनमे वीर हनुमान ॥
हनुमान का जनम यदि होता न संसार में।
अब तक रहती सीता रावण के घर में ॥
पवन का पुत्र बच्चा वीर हनुमान।
जिसे स्मरण कर सिद्ध हो मौन क्षाम ॥
आजा बच्चा हनुमान देह मे कर प्रवेश।
कदम अंग मे भूत-प्रेत-दैत्त-दानो-वाई-औ बतास।
जो कुछ हो कदम के अंग से शीघ्र छोड रे शीघ्र छोड़ ॥

मन्त्र समाप्त होते ही परेश झाड़ू से कदम को फटाफट मारने लगा। कदम ने पीड़ा से मुँह विगाडा। वह बड़बड़ाकर पता नही क्या-क्या कहने लगी।

परेश चिल्लाया, 'साले, जायेगा या नही ?'

कदम बोली, 'हाँ, जाऊँगा।'

'तो वह पानी से भरा घड़ा दाँत से उठाकर दरवाजे तक जा।'

कदम ने घड़े को दाँतों से उठाने की कोशिश की, लेकिन उठा न सकी। लेकिन वह अचानक गेंद की तरह उछलकर, आँगन को पारकर दरवाजे से निकलकर हवा हो गयी।

परेश चिल्लाने लगा : 'भूत भागा जा रहा है, पकड़ो, पकड़ो!' परेश पीछे-पीछे भागा-भागा गया। लेकिन इस बीच कदम कही गायब हो गयी।

बुआ अचम्भे में खड़ी रह गयी।

परेश कुछ देर बाद ही लौट आया। अपने बालों को नोचते-नोचते बोला, 'हार गया, दीदी, एक छोटे-से भूत से हार गया। मेरे सारे मन्त्र-तन्त्र की क्रियाकलाप बेकार कर छोटा-सा भूत भाग गया। मुझे धमकी दे गया है कि मेरा पेट कुरेद-कुरेदकर खायेगा।'

सिर पकडकर परेश बच्चों की तरह रोने लगा।

अध्याय : 13

परेश बैठा ही रहा, उठा नही।

कदम की बुआ लाचार होकर खुद ही लडकी की तलाश मे निकली। इससे पूछती, उससे पूछती : 'हाँ री, तुमने मेरी कदम को देखा है ?'

कोई पता न बता सका।

जो कोई पूछता, क्या हुआ था ? तो बुआ जवाब देती—'बच्चा, बाप से खफ़ा होकर घर से निकल गयी।'

जहाँ कही कदम का रहना सम्भव था, वह वहाँ कही भी न मिली। अन्त मे वह साधन के घर गयी। साधन ने भी कदम को नहीं देखा था। सब बात सुनकर वह खुद बहुत चिन्तित हो गया। बुआ को लेकर कदम की तलाश मे निकल पडा।

पूरी दुपहरी खाये-पिये बिना उन्होंने कदम की तलाश की। वह कही न मिली। शाम को जब गाँव के कुछ लोग नाले के पानी के निकलने के दरवाजे पर बैठकर बातें कर रहे थे तो सहसा उनके कानों मे पुलिया के नीचे से नारी-कंठ का चीत्कार सुन पड़ा, 'तूने मुझे पैदा नही होने दिया; मैं तेरा पेट कुरेद-कुरेदकर खाऊँगा !'

वे लोग डर गये। एक आदमी ने हिम्मत कर किनारे से उतरकर देखा कि पुलिया के नीचे परेश ओझा की लड़की कदम पानी के बहाव के दरवाजे के पास कमर-भर पानी मे बैठे-बैठे बाल नोच रही है और उसी तरह

चिल्ला रही है। पुलिया की गोलाई से टकराकर उसकी चीख-पुकार और भी ज्यादा शोर में बदल रही थी।

उन्होंने डरकर भागे-भागे पहले साधन डाक्टर को ही खबर दी। साधन उस वक्त अपनी डिस्पेंसरी में था। बुआ घर पर थी। साधन झटपट वहाँ भागा-भागा आया। एक आदमी को परेश को खबर करने को भेजा। परेश नहीं आया। वह गुमसुम आँगन में ही बैठा रहा। दीदी के कातर कथन पर भी ध्यान नहीं दिया। लाचार बुआ को अकेले ही आना पड़ा।

साधन को देखकर कदम एकदम चुप हो गयी। साधन ने कुछ भी नहीं पूछा, कोई भी सफाई नहीं माँगी। उसने सिर्फ़ यही कहा, 'आओ!'

कदम सरसर पुलिया के नीचे से निकल आयी। बुआ कुछ कहने जा रही थी, लेकिन साधन ने इशारे से उसे चुप रहने को कहा। कदम और उसकी बुआ को लेकर साधन अपनी डिस्पेंसरी में आया। कड़ी दवा की खूराक पिलाकर कदम को परदे की ओट में रख एक छोटी-सी चारपाई पर लिटा दिया। कदम ने साधन की हर बात को बिना विरोध के मान लिया।

साधन ने चुपके-चुपके बुआ से कहा, 'गहरी नींद की दवा दी है। सब-कुछ ठीक हो जायेगा। अब कुछ घंटों के लिए निश्चिन्त रहो। बुआजी, आप यहीं रहिये।'

'फिर क्या होगा, बेटा?'

'जो हो, इस घर से उसे हटाया नहीं जायेगा। नहीं तो फिर पागलपन शुरू हो जायेगा।'

'तो फिर?'

'मैं शहर से टैक्सी मँगाता हूँ। उस दोस्त से मेरी बात हो चुकी है। आप लोगों के कहने से मैं उसे मित्र के चिकित्सालय में ठहरा सकता हूँ।'

'आप लोग और कौन है, बेटा? उसका पिता तो सवेरे से गुमसुम होकर आँगन में बैठा है। मैं कहती हूँ कि तुम खुद जो अच्छा समझो, करो।'

साधन खुद ही मोटर-बाइक लेकर शहर चला गया। कुछ देर बाद वह एक टैक्सी लेकर लौटा। उन लोगों ने पकड़-धकड़ कर सोयी हुई कदम को टैक्सी में लिटाया। बुआ को साथ लेकर वे लोग शहर के नर्सिंग होम की ओर चले। साधन खुद साथ गया।

अध्याय : 14

कई घंटे बराबर बैठे रहने के बाद भूख से परेश का पेट कुड़बुड करने लगा। उसे मानो होश आ गया। 'कदम,' 'कदम,' 'दीदी,' 'दीदी' कर उसने पुकारना शुरू कर दिया। उसकी किसी पुकार का जवाब न मिला। कमरे में खोजकर जो कुछ खाना मिला, वही उसने बड़े-बड़े कौर बनाकर निगल लिया। पेट की ज्वाला मिटने पर सवेरे की बातें कुछ-कुछ याद आने लगी। वह उठ खड़ा हुआ।

सन्ध्या के प्रकाश में आँगन सूना-सा लग रहा था। भूत भगाने का सामान इधर-उधर पड़ा था। पानी से भरा घड़ा जैसे-का-तैसा था। लेकिन भूत-चढी हुई कदम गायब थी। वह उसकी उपेक्षा कर चली गयी थी। नन्हा-सा भूत धमका गया है कि मेरा पेट खुरच-खुरचकर खायेगा!

परेश अपने-आप चिल्ला उठा, 'सब झूठ है, सब झूठ है।' सहसा भूत भगाने के सामान पर उसका क्रोध आ गया। उसने दौड़कर डंडे से फूल, बेल-पत्र कुचल डाले; पानी से भरे घड़े को उलट दिया। वह अपने-आप जोरों से कहने लगा, 'सब झूठ, सब झूठ!'

उस समय अँधेरा हो गया था। परेश बहुत देर तक उसी से घिरा बैठा रहा। चमगादड़ फड़फड़ाकर फलों के पेड़ों पर जाकर बैठ रहे थे। एक उल्लू शायद बोल उठा। झींगुरों की आवाजें सुनायी देने लगीं। तो क्या

परेश ने ग़लत मन्त्र पढा था ? मन्त्र तो बेकार नही होता।

परेश ने लालटेन जलायी। मन्त्रों की बदरंग हुई पोथी निकाली; लाल स्याही से अपने ही हाथों से लिखा मन्त्र खोज निकाला। वह सब ऊट-पटांग लिखा सब-कुछ पढ़ गया—शुरू से आखिर तक। न, मन्त्र-पाठ में कही गलती नही थी।

'सब झूठ है, सब झूठ है,' परेश बोल उठा। सोचने लगा कि इस झूठ का बोझ रखकर अब क्या होगा ? ओझा के घर मे ही भूत का वास ? जो अपनी ही बेटी की गरदन से भूत नही उतार सकता वह दूसरे के लिए क्या करेगा ? सब झूठ, सब झूठ है !

परेश ने शीशी से मिट्टी का तेल उँड़ेलकर मन्त्रो की पोथियों मे आग लगा दी। धू-धूकर मन्त्रों की पोथियाँ जल गयी। परेश एकटक आग का तमाशा देखने लगा। और बड़बड़ाकर कहने लगा : 'सब झूठ, सब झूठ है।'

लेकिन परेश के पेट की यन्त्रणा तो झूठी नही थी। लग रहा था कि पेट मे मानो ऐंठन हो रही है। वह कुछ नही। बहुत देर से भरपेट लीलना हुआ है। उसी से यह गड़बडी है।

सहसा उलूबेडिया के उस कापालिक की बात याद आयी। साधु ने कहा था, 'यह पथ बड़ा कठिन है, बेटा ! इस पथ पर चलने से कामना-वासना का त्याग करना पडेगा। मन से द्वेष दूर करना होगा। निष्काम होकर साधना करनी होगी, पथभ्रष्ट होने पर बड़ी विपत्तियाँ आ सकती है, तुम से हो सकेगा ?'

न, सचमुच परेश से नही हो सकता !

'मुझे माफ कर दो, माँ ! क्रोध और अन्य शत्रु मेरा दिमाग गरम कर देते है। मै उन्हे वश मे रखने की कोशिश करता हूँ, लेकिन हर समय रख नही पाता हूँ। यही मेरी दुर्बलता है, यही मेरी कमज़ोरी है।'

उसे याद आया कि उसने एक दिन कदम के सामने अपनी दुर्बलता स्वीकार की थी। लेकिन वह दुर्बलता को छोड़ तो नही सका ! भामिनी ने उसे दुर्बल कर दिया। एक औरत के आगे उसने हार मान ली।

'माँ, माँ, यह क्या किया, माँ ?'

परेश ठाकुरघर में जाकर माँ काली की मूर्ति के आगे जाकर रोने लगा, 'माँ, माँ, यह क्या किया माँ ?'

कुछ देर बाद परेश सो गया।

एक बड़ा बुरा सपना देखकर उसकी नींद टूट गयी। उसने देखा : एक बड़ा-सा जंगली चूहा उसके पेट में घुस गया। फिर चूहा अचानक इसान का बच्चा बन गया। खून से लथपथ मांसपिंड, लेकिन उसका बड़ा-सा सिर है, बन्द आँखें, और छोटे-छोटे हाथ-पैर भी लगते हैं। भ्रूण ने सहसा परेश के पेट में कुरेद-कुरेद कर खाना शुरू किया। परेश चीख उठा। पेट के ऊपर बाहर की ओर बड़े ज़ोर की जलन हो रही थी। वह पीड़ा से कराहने लगा। टटोल-टटोलकर उसने एक मोमबत्ती जलायी। उसने देखा कि उसके पेट की खाल जगह-जगह इधर-उधर सूज गयी है, और बड़ी जलन हो रही है। बत्ती की रोशनी में उसे दिखायी पड़ा कि कुछ बड़े-बड़े चींटे भाग रहे है। परेश ने बत्ती की रोशनी मे चीटों को पकड़-पकड़कर, रगड़-रगड़कर मारना शुरू किया। उन्हें मारकर उसे कुछ चैन आया। पेट की जलन कम न होने पर भी उसने सोचा कि उसका असली कारण चीटों का काटना ही है। जो दु:स्वप्न उसने देखा था, वह वास्तव में सपना ही था।

उसने काटी हुई जगहों को ठंडे पानी से धो डाला। जलन में कमी नहीं हुई। उसने आँगन में आकर पुकारा, 'दीदी, दीदी ! कदम, कदम !'

कोई जवाब नहीं।

ज़रूर यह लोग मुर्दे की तरह सो रहे हैं, यह सोचकर परेश कमरे में घुसा। सारे कमरे खाली थे। ये लोग कहाँ गये ? रात में जात्रा सुनने तो नहीं गये हैं ?

सवेरे के पक्षियों की चहचहाहट को दबाकर किसी ने पुकारा, 'गुरुदेव, गुरुदेव उठ गये हैं ?'

'कौन ?'

'मैं, मै हूँ,' कहकर दरवाजा ठेलकर हरहरि आया।

'ओ, हरबाबू ? इतने सवेरे क्या सोचकर ?'

'यह सब क्या सुन रहा हूँ ? वही बताने आया हूँ।'

'आओगे ही मेरा मज़ाक उड़ाने। शेर के घर में लकडबग्घा। तुम नस-नस से कमीने हो। मौका पाकर मुझे ठोकर मारने क्यों नहीं आओगे ?'

'कह क्या रहे हो, परेश भैया ! तुम्हें गुरुदेव माना है,' हरहरि बनावटी विनय से बोला, 'लेकिन तुम्हारी लड़की को आखिर में साधन डाक्टर...।'

'भगा ले गया ? जानता था कि जायेगी। आजकल की लड़की है न !'

'न, न, भगाकर क्यों ? एकदम टैक्सी में बैठाकर शहर के अस्पताल ले गया। साथ में तुम्हारी दीदी भी है।'

'वह सब बहाना है। समझे, हरबाबू ! कुल उन लोगों की साजिश है। मेरी दीदी भी इसमें शामिल है।'

'लेकिन सब लोग जान गये हैं कि तुम्हारी बेटी पागल हो गयी है।'

'नाटक है, भट्ट कम्पनी की नाट्य सम्राज्ञी को पगली का अभिनय कर सबको प्रभावित करते नहीं देखा है ? सब नाटक है। औरत जात जन्म से ही अभिनय करने लगती है !' परेश ने गहरी साँस छोड़कर कहा।

'सो जो कुछ कहा ठीक कहा, गुरु,' हरहरि बोला, 'गरीब की बाल-विधवा दुखिया को सहारा दिया, सो क्या उसका मन पाया ? चलते-फिरते कहती थी—मुझे डर मत दिखाओ। तुम्हारी तरह के कितने ही आदमी मुझे पाने की आस लगाये रहते हैं।'

परेश चुप रहा।

हरहरि कहता रहा, 'मैं कहता था, जा न पगली, उन सब आवारे छोकरों के साथ भाग जा। खुद को खाना तो जुटता नहीं, वे तुझे क्या खाने-पहनने को देंगे ? सो गुरुदेव, साली क्या कहती थी, मालूम है ?'

परेश को जानने की उत्सुकता थी। लेकिन वह कुछ बोला नहीं।

हरहरि बोला, 'कहती थी, तुम्हारी तरह का बड़ा क्या कोई है गाँव में ! हैं ओझा ठाकुर ? तुम्हारे घर में बहू है, उनके घर में नहीं है। मैं अगर चाहूँ तो उनके घर बैठ जाऊँ; वह मुझे गोद में उठा लेंगे।'

परेश विस्मित होकर बोला, 'भामिनी यह सब कहती थी ?'

'नहीं तो क्या घर का किस्सा गढ़कर ऐसा तुमसे कह रहा हूँ, गुरु ! मैंने उससे कहा, लेकिन वह भयानक आदमी तुझे दिन-रात गालियाँ देता

है, शाप देता है ! चुड़ैल ने क्या कहा, पता है ? बोली, मर्द का रोब अच्छा होता है। मैं रोब वाला आदमी चाहती हूँ, नहीं तो क्या तुम्हारी तरह के दब्बू, धूर्त, जालसाज को चाहूँगी ? तुम ही मुझे जबर्दस्ती भुलावा देकर अपनी गद्दी पर ले गये थे। और इसी बात पर ओझा ठाकुर से मेरा झगड़ा हो गया है।'

हरहरि रुकना नहीं चाहता था, 'मैंने कहा, लेकिन वह आदमी तो पिशाच है। वह बोली, तुमने उनका बाहरी रूप देखा है। बाहर खजूर का पेड़ है; भीतर रस से भरा हुआ है।'

परेश मन-ही-मन कह उठा : भामिनी, भामिनी !

हरहरि बोला, 'वह चुड़ैल अन्त में मुझे छोड़कर तुम्हारे घर ही आती, गुरु। लेकिन पेट में बच्चा आने से ही वह बदल गयी। दिन-रात उसमें बच्चे-ही-बच्चे की धुन समा गयी।'

बच्चे की बात सुनकर परेश का पेट फिर ऐंठने लगा। परेश यन्त्रणा से पेट दबाये रहा। वह कराहते-कराहते बोला, 'अभी तुम जाओ, हरबाबू। मेरा शरीर कुछ खास ठीक नहीं है। तुम जाओ, जाओ, जाओ।'

विस्मित होकर हरहरि ने आगे कुछ न कहा, वहाँ से चल पड़ा।

परेश की यन्त्रणा को मानो कुछ शान्ति मिली। वह मन में 'भामिनी,' 'भामिनी' कहते-कहते घर से निकल पड़ा। वह पागलों की तरह भामिनी के मकान के आस-पास चक्कर काटने लगा। वह एकटक दृष्टि से उसकी अकाल-मृत्यु के घाट की ओर देखने लगा। खड़ी सीढ़ियों पर धूप चिलक रही थी।

वहाँ से परेश भागा-भागा श्मशान घाट गया। सूना श्मशान घाट ! परेश कुछ देर वहाँ खड़ा रहा, जहाँ भामिनी का शव रखा गया था। उसे ठीक कहाँ जलाया गया था, यह परेश को नहीं मालूम था। परेश ने पहली और अन्तिम बार जहाँ पर भामिनी का आलिंगन किया था, वहाँ चित लेटकर निःसीम नीलाकाश की ओर ताकता रहा। लेकिन वहाँ भी चैन नहीं।

वही—वही मनहूस गिद्ध आसमान मे डैने फैलाकर उड़ रहे थे। लेकिन उनके उड़ने की गति राजसी, मन्थर थी। उन्हें किसी तरह की कोई भी जल्दी नही थी। गिद्ध उड़ते हुए चक्कर लगा रहे थे।

परेश ने गिनने की कोशिश की। एक, दो, तीन, चार...गिने नही जाते थे। उनके चक्कर काटने में सारी गिनती गडबड़ा जाती थी। कई गिद्ध मानो उडते-उडते उतरे भी आ रहे थे। हाँ, उतरे तो आ रहे हैं, जैसे उसी की ओर उतरे आ रहे हों!

ज़िन्दा लाश, कंकाल!

गिद्धों ने क्या उसे लाश समझा है? तो क्या परेश मर गया है? परेश ने अपने बदन को चिकोटी काटी। न, खूब लगती है। तो वह मरा नही है। लेकिन फिर नाक मे सड़ाँध क्यों मालूम हो रही है? परेश ने अपना बदन सूँघा। नही, उसके शरीर मे खटास की और धूल की गन्ध थी। लेकिन सचमुच परेश को सड़ाँध-सी बू लग रही थी।

गिद्ध उतर रहे थे; उतरे आ रहे थे, जैसे परेश को ही लक्ष्य कर उतर रहे हों। गिद्धों की छाया परेश के शरीर पर से होकर जा रही थी। परेश घबराकर उठ बैठा।

पखों को फड़फड़ाते गिद्ध श्मशान मे उतर आये। उन्होंने अपनी बीभत्स गरदनें बढा-बढ़ाकर ज़मीन मे से कुछ नोच-नोचकर खाना शुरू किया। परेश ने ज़रा गौर से देखा। एक कुत्ते या बछड़े की लाश को कोई श्मशान में फेंक गया था। गिद्ध अपनी बड़ी-बड़ी गन्दी मटमैली चोंचों से नोचकर उसी अवशेष को खा रहे थे।

ओह! परेश यन्त्रणा से पेट दबाकर बैठ गया। उसके पेट मे जैसे कोई नोच-नोचकर खा रहा हो। उसके कानों मे साँय-साँय-सा कुछ सुनायी पडा: तूने मुझे पैदा न होने दिया। तूने मुझे पानी, हवा, प्रकाश, मिट्टी नही भोगने दी, मैं तुझे खुरच-खुरचकर खाऊँगा।

खायेगा हरामी! परेश ने गाली दी। एक जली लकड़ी का टुकड़ा लेकर उसने गिद्धों की ओर फेंककर मारा। गिद्धों ने उधर ध्यान भी न दिया।

पेट की यन्त्रणा मानो बढ़ गयी। साला, खुरच-खुरचकर खायेगा? ठहर, तुझे मज़ा चखा रहा हूँ। ऐसा मन्त्र पढ़ूँगा कि साले, तुझे रास्ता नहीं मिलेगा, परेश ने सोचा।

परेश पेट दाबकर मन्त्र पढ़ने चला। लेकिन उसे एक भी पंक्ति याद न आयी। परेश चौंक पड़ा। जो परेश ओझा घंटो मन्त्र पढ़ता रहता था, अपनी बार उसे मन्त्र याद तक नहीं। ताज्जुब है!

मन्त्र-पुस्तक! परेश पागलों की तरह अपने घर की ओर भाग चला। सिन्दूर से रँगे हुए काठ के बक्से में उनके मन्त्रों की पोथियाँ हैं। लाल स्याही से अपने हाथ से परेश ने तमाम मन्त्र उसमें पन्ने-के-पन्ने लिखे थे। परेश दुहरा न पाने पर मन्त्रों की पोथी से पढ़ेगा। देखें, हरामज़ादा नन्हा भूत भागता कैसे नहीं है?

परेश दौड़ने लगा। ठीक दोपहर के वक़्त भागना, भागना, भागना!

सारा शरीर पसीने से लथपथ था कि वह घर पहुँचा। घर सूना था। भाँय-भाँय कर रहा था। परेश ने कमरे में घुसकर लकड़ी का बक्सा टटोला। कहाँ है मन्त्रों की पोथी? नहीं है। परेश ने खाट, बिछौना, लिहाफ़, चादर—सब अच्छी तरह खोज डाला। कदम का कमरा, दीदी का कमरा, रसोई, ठाकुरघर, छाजन खोज-खोजकर भी परेश को मन्त्र की पोथी नहीं मिली। बरामदे में एक जगह कुछ राख पड़ी हुई थी। अधजले पुस्तक के ऊपरी भाग पर नज़र पड़ते ही परेश को याद आया—कल रात को उसने अपने हाथों मन्त्रों की पोथियों को जला डाला था!

परेश सिर पर हाथ रखकर बैठ गया।

पेट की यन्त्रणा मानो बढ़ती ही जा रही थी। जैसे कोई उसके कानों में मिनमिनाकर कह रहा हो : मैं तेरा पेट खुरच-खुरचकर खा जाऊँगा।

परेश गालियाँ बकने लगा, 'साले हरामज़ादे, तूने मेरी भामिनी को छीन लिया, और पेट में घुसकर उसके बच्चे को उड़ा ले गया, तू अब मुझे मारना चाहता है?'

लेकिन गुस्सा बेकार था। परेश के मन में होने लगा कि पेट की आँतों-बाँतों को कोई नोच-नोचकर खा रहा है।

क्या करूँ, क्या करूँ !

खोका-डाक्टर को छुरी चलाना आता है। पेट काटकर अस्त्रोपचार, ऑपरेशन करता है। यह ऐसा क्या काम है? परेश अपनी डाक्टरी खुद करेगा। परेश अपना पेट खुद काटेगा। पेट में से उसी नन्हे भूत को खींच-खाँचकर बाहर निकालेगा।

कहाँ है औज़ार ? माँ काली का खाँड़ा ? पास ही तो है वह ! धत्, वह तो टीन का खाँडा है, लपलप करता है। परेश ने उसे ज़ोरों से फेंक दिया। आह, दीदी, कदम—वे कहाँ गये ? हँसुआ ही दे देते। वे हँसुआ कहाँ रखते हैं ? परेश पागल-सा होकर अस्त्र को खोजने लगा।

असम्भव यन्त्रणा थी। पेट नोच-नोचकर कोई खा रहा है, और हाथों से दबाने पर भी यन्त्रणा कम नहीं हो रही है। साले नन्हे भूत, और कितनी यन्त्रणा देगा ? तुझे मैं जरूर खत्म करूँगा। पेट के अन्दर से अस्त्र से खींचकर ज़ोरों से तुझे जड़-सहित निकालकर तेरी गरदन दबा दूँगा, साले, नन्हे भूत। साले नन्हे भूत !

परेश अब उछल पड़ा। मिल गया, हथियार मिल गया। उसी की तेज कटार। थोड़ी ज़ंग खायी हुई है, लेकिन धार तेज है। एक-एक चोट में यह पका नारियल काट देती है और परेश इससे अपना पेट काटकर नन्हे भूत को न निकाल सकेगा ?

परेश ने कटार को हवा में जात्रा-दल के नायक की तरह घुमाया। उसी तरह वह कह उठा : 'अब तू मिल गया, नन्हे भूत। तू मेरा पेट कुरेद-कुरेदकर खायेगा ! मैं अपने ही पेट में से तुझे इस कटार से निकाल बाहर करूँगा, तेरी गरदन भी काटूँगा।'

परेश ने झटपट अपने कपड़े उतार फेंके। 'जय माँ, जय माँ' कहकर उसने अपने पेट पर वह तेज कटार चला दी। फुहार-सा खून निकल पड़ा। यन्त्रणा से परेश चीख उठा। हाथ की कटार छिटककर गिर पड़ी। परेश का खून में लथपथ नंगा शरीर धरती पर चित्त लोट गया। परेश कुछ देर तक फर्श पर यन्त्रणा से छटपटाता रहा। खून, खून—आँगन में खून की धारा बह गयी।

आकाश से गिद्ध उतरे आ रहे थे। वे झपझप करते हुए आकर परेश के नारियल के पेड पर बैठ गये।

खून में लोटते-लोटते परेश ने चित पड़े रहकर अन्तिम साँस छोड़ी।

गिद्ध फड़फडाते हुए बिलकुल ताजे महाभोज के लालच मे उतर आये।